■ वर्ष-22 ■ अंक-337
■ पृष्ठ-8 ■ मूल्य-2.00

भोपाल
■ मंगलवार ■ 8 जुलाई 2025
आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
विक्रम संवत्-2082

E-mail
dainiksamayjagat@gmail.com
insmjagat@gmail.com

प्रधान संपादक : अशोक त्रिपाठी

म.प्र. के सर्वाधिक केंद्रों तक प्रसारित प्रदेश का एकमात्र समाचार पत्र

दैनिक समय जगत

भोपाल, दिल्ली, म.प्र., उ.प्र. और अन्य राज्यों से एक साथ प्रकाशित
एक संदेश-पूरा देश
ईश्वर से अधिक मूल्यवान दुनिया में कुछ भी नहीं...

शीर्ष की ओर 'समय जगत'
Facebook
asksamayjagat
Instagram
@asksamayjagat
Twitter
@asksamayjagat
यूट्यूब पर
'खबर समय जगत'
को भी सब्सक्राइब करें
www.dainiksamayjagat.in

90 डिग्री का अजूबा पुल बनाने वाले इंजीनियर्स का सस्पेंशन

40 करोड़ के आवासों को डुबोने वाले इंजीनियर्स को प्रमोशन पर प्रमोशन

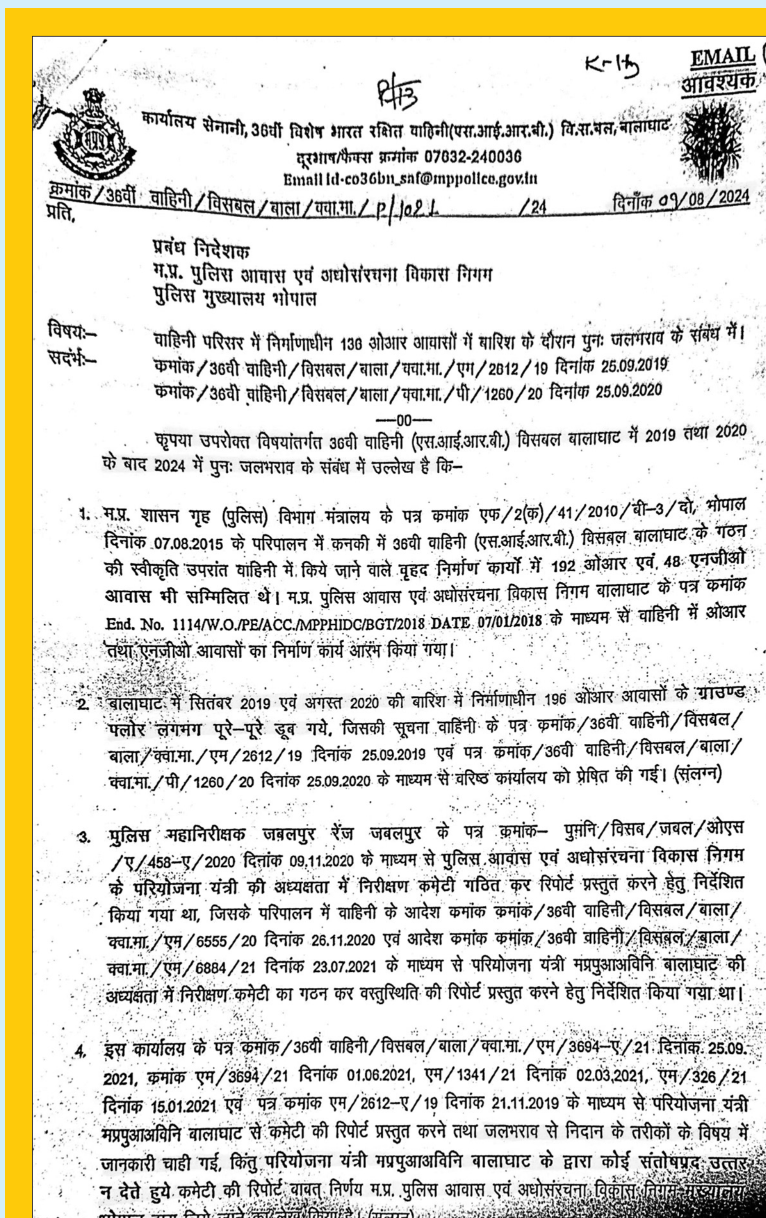

EMAIL
आवश्यक
कार्यालय सेनानी, 36वीं विशेष भारत रक्षित वाहिनी(एस.आई.आर.बी.) वि.स.बल, बालाघाट
दूरभाष/फैक्स क्रमांक 07632-240036
Email id-co36bn_saf@mppolice.gov.in

क्रमांक/36वीं वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./ P/102 /24 दिनाँक 09/08/2024

प्रति,

प्रबंध निदेशक
म.प्र. पुलिस आवास एवं अधोसंरचना विकास निगम
पुलिस मुख्यालय भोपाल

विषयः— वाहिनी परिसर में निर्माणाधीन 136 ओआर आवासों में बारिश के दौरान पुनः जलभराव के संबंध में।

संदर्भः— कमांक/36वी वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./एम/2612/19 दिनांक 25.09.2019
कमांक/36वी वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./पी/1260/20 दिनांक 25.09.2020

—00—

कृपया उपरोक्त विषयांतर्गत 36वी वाहिनी (एस.आई.आर.बी.) विसबल बालाघाट में 2019 तथा 2020 के बाद 2024 में पुनः जलभराव के संबंध में उल्लेख है कि–

1. म.प्र. शासन गृह (पुलिस) विभाग मंत्रालय के पत्र कमांक एफ/2(क)/41/2010/बी–3/दो, भोपाल दिनांक 07.08.2015 के परिपालन में कनकी में 36वी वाहिनी (एस.आई.आर.बी.) विसबल बालाघाट के गठन की स्वीकृति उपरांत वाहिनी में किये जाने वाले वृहद निर्माण कार्यों में 192 ओआर एवं 48 एनजीओ आवास भी सम्मिलित थे। म.प्र. पुलिस आवास एवं अधोसंरचना विकास निगम बालाघाट के पत्र कमांक End. No. 1114/W.O./PE/ACC./MPPHIDC/BGT/2018 DATE 07/01/2018 के माध्यम से वाहिनी में ओआर तथा एनजीओ आवासों का निर्माण कार्य आरंभ किया गया।

2. बालाघाट में सितंबर 2019 एवं अगस्त 2020 की बारिश में निर्माणाधीन 196 ओआर आवासों के ग्राउण्ड फ्लोर लगभग पूरे–पूरे डूब गये, जिसकी सूचना वाहिनी के पत्र क्रमांक/36वी वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./एम/2612/19 दिनांक 25.09.2019 एवं पत्र कमांक/36वी वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./पी/1260/20 दिनांक 25.09.2020 के माध्यम से वरिष्ठ कार्यालय को प्रेषित की गई। (संलग्न)

3. पुलिस महानिरीक्षक जबलपुर रेंज जबलपुर के पत्र क्रमांक– पुमनि/विसब/जबल/ओएस/ए/458–ए/2020 दिनांक 09.11.2020 के माध्यम से पुलिस आवास एवं अधोसंरचना विकास निगम के परियोजना यंत्री की अध्यक्षता में निरीक्षण कमेटी गठित कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया गया था, जिसके परिपालन में वाहिनी के आदेश कमांक कमांक/36वी वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./एम/6555/20 दिनांक 26.11.2020 एवं आदेश कमांक कमांक/36वी वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./एम/6884/21 दिनांक 23.07.2021 के माध्यम से परियोजना यंत्री मप्रपुआअविनि बालाघाट की अध्यक्षता में निरीक्षण कमेटी का गठन कर वस्तुस्थिति की रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया गया था।

4. इस कार्यालय के पत्र कमांक/36वी वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./एम/3694–ए/21 दिनांक 25.09.2021, कमांक एम/3694/21 दिनांक 01.06.2021, एम/1341/21 दिनांक 02.03.2021, एम/326/21 दिनांक 15.01.2021 एवं पत्र कमांक एम/2612–ए/19 दिनांक 21.11.2019 के माध्यम से परियोजना यंत्री मप्रपुआअविनि बालाघाट से कमेटी की रिपोर्ट प्रस्तुत करने तथा जलभराव से निदान के तरीकों के विषय में जानकारी चाही गई, किंतु परियोजना यंत्री मप्रपुआअविनि बालाघाट के द्वारा कोई संतोषप्रद उत्तर न देते हुये कमेटी की रिपोर्ट बावत् निर्णय म.प्र. पुलिस आवास एवं अधोसंरचना विकास निगम मुख्यालय भोपाल द्वारा लिये जाने का लेख किया है। (संलग्न)

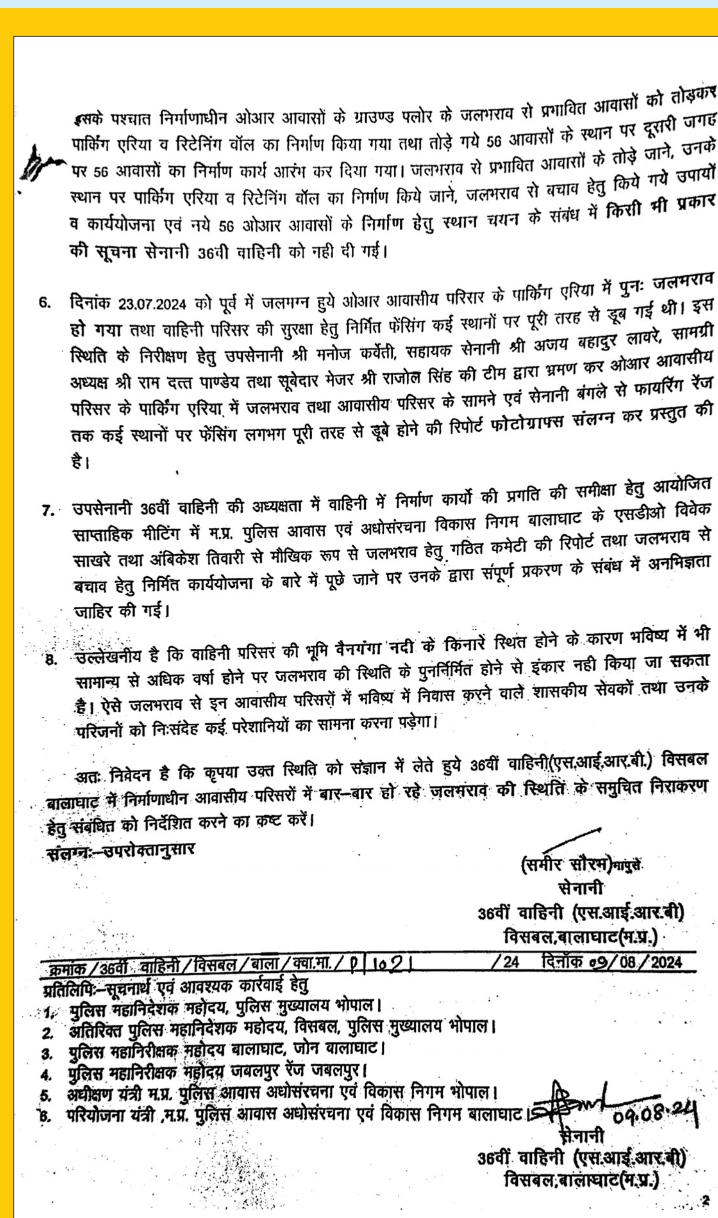

इसके पश्चात निर्माणाधीन ओआर आवासों के ग्राउण्ड फ्लोर के जलभराव से प्रभावित आवासों को तोड़कर पार्किंग एरिया व रिटेनिंग वॉल का निर्माण किया गया तथा तोड़े गये 56 आवासों के स्थान पर दूसरी जगह पर 56 आवासों का निर्माण कार्य आरंभ कर दिया गया। जलभराव से प्रभावित आवासों के तोड़े जाने, उनके स्थान पर पार्किंग एरिया व रिटेनिंग वॉल का निर्माण किये जाने, जलभराव से बचाव हेतु किये गये उपायों व कार्ययोजना एवं नये 56 ओआर आवासों के निर्माण हेतु स्थान चयन के संबंध में किसी भी प्रकार की सूचना सेनानी 36वी वाहिनी को नही दी गई।

6. दिनांक 23.07.2024 को पूर्व में जलमग्न हुये ओआर आवासीय परिसर के पार्किंग एरिया में पुनः जलभराव हो गया तथा वाहिनी परिसर की सुरक्षा हेतु निर्मित फेंसिंग कई स्थानों पर पूरी तरह से डूब गई थी। इस स्थिति के निरीक्षण हेतु उपसेनानी श्री मनोज कर्वेती, सहायक सेनानी श्री अजय बहादुर लावरे, सामग्री अध्यक्ष श्री राम दत्त पाण्डेय तथा सूबेदार मेजर श्री राजोल सिंह की टीम द्वारा भ्रमण कर ओआर आवासीय परिसर के पार्किंग एरिया में जलभराव तथा आवासीय परिसर के सामने एवं सेनानी बंगले से फायरिंग रेंज तक कई स्थानों पर फेंसिंग लगभग पूरी तरह से डूबे होने की रिपोर्ट फोटोग्राफ्स संलग्न कर प्रस्तुत की है।

7. उपसेनानी 36वीं वाहिनी की अध्यक्षता में वाहिनी में निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा हेतु आयोजित साप्ताहिक मीटिंग में म.प्र. पुलिस आवास एवं अधोसंरचना विकास निगम बालाघाट के एसडीओ विवेक साखरे तथा अंबिकेश तिवारी से मौखिक रूप से जलभराव हेतु गठित कमेटी की रिपोर्ट तथा जलभराव से बचाव हेतु निर्मित कार्ययोजना के बारे में पूछे जाने पर उनके द्वारा संपूर्ण प्रकरण के संबंध में अनभिज्ञता जाहिर की गई।

8. उल्लेखनीय है कि वाहिनी परिसर की भूमि वैनगंगा नदी के किनारे स्थित होने के कारण भविष्य में भी सामान्य से अधिक वर्षा होने पर जलभराव की स्थिति के पुनर्निर्मित होने से इंकार नही किया जा सकता है। ऐसे जलभराव से इन आवासीय परिसरों में भविष्य में निवास करने वाले शासकीय सेवकों तथा उनके परिजनों को निःसंदेह कई परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

अतः निवेदन है कि कृपया उक्त स्थिति को संज्ञान में लेते हुये 36वीं वाहिनी(एस.आई.आर.बी.) विसबल बालाघाट में निर्माणाधीन आवासीय परिसरों में बार–बार हो रहे जलभराव की स्थिति के समुचित निराकरण हेतु संबंधित को निर्देशित करने का कष्ट करें।

संलग्नः—उपरोक्तानुसार

(समीर सौरभ)भापुसे
सेनानी
36वीं वाहिनी (एस.आई.आर.बी)
विसबल,बालाघाट(म.प्र.)

क्रमांक/36वीं वाहिनी/विसबल/बाला/क्वा.मा./ P/102 /24 दिनाँक 09/08/2024
प्रतिलिपिः—सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु
1. पुलिस महानिदेशक महोदय, पुलिस मुख्यालय भोपाल।
2. अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक महोदय, विसबल, पुलिस मुख्यालय भोपाल।
3. पुलिस महानिरीक्षक महोदय बालाघाट, जोन बालाघाट।
4. पुलिस महानिरीक्षक महोदय जबलपुर रेंज जबलपुर।
5. अधीक्षण यंत्री म.प्र. पुलिस आवास अधोसंरचना एवं विकास निगम भोपाल।
6. परियोजना यंत्री ,म.प्र. पुलिस आवास अधोसंरचना एवं विकास निगम बालाघाट। 09.08.24

सेनानी
36वीं वाहिनी (एस.आई.आर.बी)
विसबल,बालाघाट(म.प्र.)
2

म.प्र अजब है- सबसे गजब है का कोई सटीक नमूना है तो म.प्र. पुलिस आवास निगम , जहां के प्रभारी मुख्य परियोजना यंत्री जेपी पस्तोर और उनके अधीनस्थ इंजीनियर्स रूपी कारिंदों की कारस्तानियां व करतूतें उन्हें भी म.प्र. में सभी विभागों के अन्य कारिंदों की तुलना में सभी से अजब ही नहीं गजब भी बनाती है। 100 करोड़ से अधिक की हानि पहुंचाने वाले करप्ट कारिंदों के इस गिरोह की करतूतों का खुलासा तो भास्कर सहित कई अखबार अनेकों बार कर चुके हैं। अब इसमें सबसे बड़ी चौकाने वाली बात तो यह है कि दर्जनों कार्यों में अरबों की अनियमितता करने वाले इंजीनियर्स का एक कनकी बालाघाट पुलिस आवासीय परियोजना में पूर्व के अन्य साक्ष्यों के अलावा जो महत्वपूर्ण साक्ष्य में 36वीं वाहिनी के सेनानी आईपीएस अधिकारी समीर सौरभ का 9/8/24 का संलग्न पत्र कारिंदों की सारी करतूतों की पोल खोल देता है। जो प्रारंभ से ही घोर तकनीकी अनभिज्ञता और आर्थिक भ्रष्टाचार रूपी अनियमितताएं की गई हैं, वह सब इस पत्र से स्पष्ट हो जाती हैं। पत्र में स्पष्ट किया गया है कि 54 करोड़ की लागत से निर्मित उक्त आवासों के स्थल चयन में 36वीं बटालियन के उच्चाधिकारी तक को विश्वास में नहीं लिया गया। साथ ही मनमर्जी सेइंजीनियर्स के स्वार्थ वश अर्थात् अत्यधिक फिलिंग कर अन्य प्रकार के एडजस्टमेंट करने के लिये गलत साइट सेलेक्शन किया गया। जिसका प्रमाण पत्र के बिंदु क्रमांक 2 के अनुसार उक्त सभी आवासों का ग्राउंड फ्लोर सितंबर 19 एवं अगस्त 20 में पूरी तरह डूब गया था। तब मीडिया में यह प्रकाशित भी हुआ था कि पुलिसकर्मियों को उक्त आवास में रहवास के लिये नाव, मोटरबोट या हेलीकाप्टर में से किससे सिफ्ट कराया जायेगा और निगम इस बारे में क्या विचार कर रहा है। उक्त पत्र के बिंदु क्रमांक 4 के अनुसार स्थानीय और मुख्यालय के निगम प्रबंधन ने जल भराव के निदान के संबंध में कोई स्पष्ट अभिमत नहीं दिया। बिंदु क्रमांक 5 के अनुसार 36वीं बटालियन को विश्वास में लिये बगैर ग्राउंड फ्लोर के 56 आवासों को तोड़कर पार्किंग घोषित करते हुए रिटेनिंग वाल का निर्माण किया गया लेकिन यह सब इन इंजीनियर्स की तकनीकी अज्ञानता के कारण व्यय निष्फल ही हुए। बिंदु क्रमांक 6 अनुसार 36वीं बटालियन के स्थानीय अधिकारियों की समिति ने पार्किंग एरिया के जल भराव पूरी तरह डूबे होने के फोटोग्राफ्स भी प्रस्तुत किये। इस हेतु वहां के परियोजना यंत्री एवं दोनों एसडीओ विवेक साकरे तथा अंबिकेश तिवारी ने बचाव की कार्ययोजना हेतु पूरी तरह अनभिज्ञता जाहिर की।

समय जगत
खास खबर
***

इस पत्र से पुलिस आवास निगम के इंजीनियर्स एवं प्रबंधन की कार्यप्रणाली तो पूरी तरह स्पष्ट होती ही है तथा उल्लेखित कई प्रश्न उत्पन्न होते हैं, जो कि केवल एक कार्य में 25 करोड़ से अधिक की जनधन की हानि को स्पष्ट करते हैं।

1. गलत स्थल चयन का प्रारंभ से अंतिम अनुमोदन करने वाले सहायक यंत्री, परियोजना यंत्री व प्रभारी मुख्य परियोजना यंत्री के खिलाफ अब तक क्या कार्यवाही की गई या लंबित है।

2. पत्र से यह स्पष्ट है कि इनका निर्माण सितंबर 19 के पूर्व हो चुका था और सितंबर 19- अगस्त 20 में यह पूरी तरह डूब चुके थे। तब से यह निरंतर प्रत्येक वर्ष डूब रहे हैं। हाल ही 7 जुलाई सायं 6 बजे की प्रारंभिक जल भराव की तस्वीर और वीडियो सारी कहानी बयां कर रहे हैं।

निरंतर 6 वर्षों से डूबने के कारण इनके फाउंडेशन और कालम की क्या स्थिति आज की तारीख में होगी, क्या निगम के द्वारा इसका परीक्षण कराया गया। इसमें यह भी स्पष्ट है कि हानि केवल ग्राउंड फ्लोर के 14 करोड़ की लागत के 56 आवासों की ही नहीं हुई बल्कि अपर फ्लोर्स के शेष आवास में भी किसी पुलिसकर्मी का निवास करना दुष्कर कार्य है और अभी तक वहां कोई निवास नहीं कर रहा है क्यों कि भरे पानी में से परिवार के साथ तैरकर या नाव से ऊपरी मंजिल तक पहुंचना दुष्कर कार्य है। और साथ ही जब 6 वर्षों के निरंतर भराव से नींव ही कमजोर हो गई तो ऊपरी मंजिलों पर रहना तो जान जोखिम में डालना है। अर्थात् इस परियोजना का 50 करोड़ से अधिक का व्यय पूर्णतः निष्फल हो गया। इसकी जिम्मेदारी और जवाबदारी जो पूर्णतः अंतिम अनुमोदनकर्ता प्रभारी परियोजना यंत्री जेपी पस्तोर पर आती है। इसमें सबसे बड़ा झूठ तो यह है जो कि निगम प्रबंधन के तत्कालीन अधिकारी विगत 2 वर्षों से कह रहे हैं कि परियोजना पूर्ण हो गई है और शीघ्र ही सभी आवासों में सभी पुलिसकर्मी निवास करेंगे। इसके लिए मुख्यमंत्री से उद्घाटन कराने की योजना भी बताना एक सफेद झूठ था। तब से आज तक निगम प्रबंधन द्वारा पुलिस महानिदेशक से लेकर सीएम और सरकार तक को गुमराह किया गया। उक्त गलत स्थल चयन करने के कारण डूब में आई हुई परियोजना के बचाव के लिये बनाई गई रिटेनिंग वाल की स्वीकृति और व्यय तथा उक्त आवासों को तोड़कर बनाये गये पार्किंग एरिया की स्वीकृति और व्यय भी निष्फल व्यय की श्रेणी में आते हैं, इसकी जिम्मेदारी और जवाबदारी किस पर निर्धारित की गई है।

उक्त आवास परियोजना के भूतल के 56 मकानों को तोड़कर पार्किंग एरिया घोषित करने के बाद अन्य स्थान पर 9 करोड़ की लागत से स्वीकृत किये गये 56 मकानों के विरुद्ध व्यय राशि 3 करोड़ अधिक अर्थात् 12 करोड़ व्यय की गई। उक्त संबंध में स्वीकृति से 3 करोड़ अधिक व्यय की जिम्मेदारी-जवाबदारी किस पर तय की गई। उक्त परियोजना के परियोजना यंत्री का प्रभार स्थानीय परियोजना यंत्री के होने के बाद भी पूर्ववत जबलपुर के परियोजना यंत्री सुधीर श्रीवास्तव के पास ही है, यह भी एक रहस्यमय स्कैंडल है कि इससे जुड़े तकनीकी और आर्थिक विषय प्रभारी मुख्य परियोजना यंत्री स्थानीय परियोजना यंत्री या किसी अन्य के संज्ञान में नहीं लाने देना चाहते। यह तो प्रभारी मुख्य परियोजना यंत्री पस्तोर का हांडी के चावल की तरह केवल एक ही मामला है। ऐसे अनेकों मामले, जिनमें आरके शर्मा परियोजना यंत्री उज्जैन एवं जबलपुर की स्पष्ट लिप्तता है। अभी हाल ही में प्राप्त प्रमाण अनुसार उक्त इंजीनियर्स के द्वारा निर्मित अन्य आवासीय परियोजनाएं जो जर्जर और क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं, उन्हें भी सचित्र प्रकाशित किया जाएगा।

वहीं ग्वालियर के गबन स्वरूपी आर्थिक अनियमितता वाले 14 करोड़ अधिक व्यय करने के दोषी पस्तोर के राजदार और इशारों पर चलने वाले नरेश शर्मा जल्द ही सेवानिवृत्त हो जायेंगे और 14 करोड़ की आर्थिक हानि का मामला नस्तियों में दब जायेगा। जन धन की इस हानि को रोकने के लिये तेजतर्राट सीएम और सरकार से यह आम जन की अपेक्षा है कि केवल एक पुल की तकनीकी अनियमितता में जब हो सकता है 7 इंजीनियर्स का सस्पेंशन तो फिर तकनीकी अज्ञानता के साथ आर्थिक भ्रष्टाचार के दोषी कारिंदों का कैसे हो रहा है प्रमोशन पर प्रमोशन। आखिर कब तक लेंगे ऐक्शन। दूर हों लाभान्वित होने वाले पुलिस आवासीय हितग्राहियों के टेंशन।

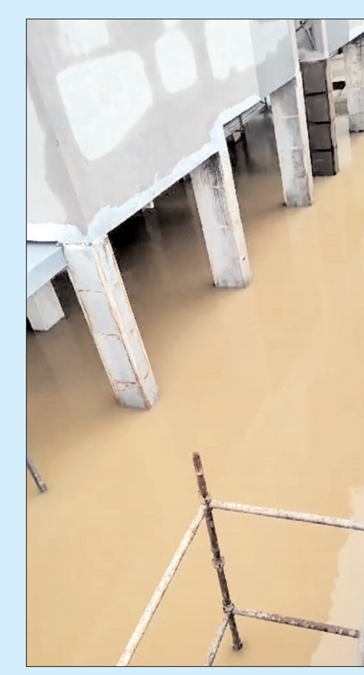

पीडब्ल्यूडी के 90 डिग्री के 18 करोड़ के पुल के दोषी इंजीनियर्स पर गिरी गाज

पुलिस हाउसिंग कार्पोरेशन में 29 करोड़ के प्रोजेक्ट को डुबोने वाले पस्तोर को प्रमोशन का ताज

बड़ा खुलासा

- पुलिस हाउसिंग कार्पोरेशन और श्रीवर्धन इंफ्राप्रोजेक्ट्स की सांठगांठ से हुआ बड़ा खेल
- निरंतर खुल रही हैं प्रभारी मुख्य परियोजना यंत्री जेपी पस्तोर की करतूत और कारस्तानी

लोनिवि के कारनामों की कहानी
टूटे पुल-फ्लाई ओवर और धंसती सड़कों की जुबानी

सड़क विकास निगम में अखिलेश अग्रवाल की संविदा नियुक्ति के गोरखधंधे का हुआ पर्दाफाश

सरकार के लिए बना गले की फांस वेस्टर्न बायपास

लोनिवि के तत्कालीन प्रमुख अभियंता पर अब कसेगा शिकंजा

मप्र सड़क विकास निगम बना आपराधिक षड़यंत्रों का अड्डा

पूर्व में प्रकाशित संबंधित समाचारों की हेडलाइन्स।

मध्यप्रदेश की गतिशीलता, शांति और संसाधनों का लाभ उठाएं निवेशकः मुख्यमंत्री

समय जगत, भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को लुधियाना स्थित वर्धमान औद्योगिक परिसर में पंजाब के प्रमुख उद्योगपतियों से भेंट की और उन्हें मध्यप्रदेश की समावेशी, उदार और निवेश-अनुकूल नीतियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार न केवल उद्योग लगाने और निवेश बढ़ाने के लिए तैयार है, बल्कि यदि किसी सेक्टर में संभावना दिखती है, तो वहां आवश्यकतानुसार नियमों में परिवर्तन भी किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में गारमेंट और टेक्सटाइल सेक्टर के लिए विशेष अवसर उपलब्ध हैं और राज्य सरकार इस दिशा में गंभीर प्रयास कर रही है। उन्होंने बताया कि इंदौर की हुकुमचंद मिल को पुनर्जीवित करने की दिशा में कार्य हो रहा है और मजदूरों के हितों को प्राथमिकता देते हुए सौ करोड़ रु. से अधिक के सेटलमेंट क्लियर किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि निवेशकों और श्रमिकों के साथ सरकार की प्रतिबद्धता हर स्तर पर बनी रहेगी। उन्होंने बताया कि ग्वालियर की जेसी मिल और उज्जैन की हीरा मिल के मामले में

भी राज्य सरकार ने सहृदयता से निर्णय किये है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार उद्योगपतियों के हित में निर्णय लेने के लिए कैबिनेट स्तर पर नीतियों में बदलाव को भी तैयार है। उन्होंने निवेशकों से आग्रह किया कि वे मध्यप्रदेश में आकर संभावनाओं को देखें और राज्य की गतिशीलता, शांति और संसाधनों का लाभ उठाएं। उन्होंने बताया कि राज्य में टेक्सटॉइल, एग्री बेस्ड इंडस्ट्री, इंजीनियरिंग गुड्स, स्टील प्रोसेसिंग, रिन्यूएबल एनर्जी और आईटी जैसे सेक्टरों में व्यापक अवसर उपलब्ध हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उद्योगपतियों से यह भी कहा कि मध्यप्रदेश केवल निवेश के लिए नहीं, बल्कि एक जनकल्याणकारी राज्य के रूप में भी तेजी से पहचान बना रहा है।

उन्होंने बताया कि गरीब तबके के लिए एयर एंबुलेंस सेवा और राहगीर सेवा योजना जैसी अभिनव योजना क्रियान्वित की जा रही हैं। इन योजनाओं की उद्योगपतियों ने सराहना करते हुए कहा कि इस स्तर की सोच और संवेदनशीलता शायद ही किसी अन्य राज्य में दिखती हो।

सार-समाचार

शारीरिक माप दिवस की तैयारी के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण संपन्न

नर्मदापुरम। संचालनालय महिला एवं बाल विकास विभाग के निर्देशानुसार परियोजना नर्मदापुरम ग्रामीण में शारीरिक माप दिवस की पूर्व तैयारी को लेकर आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री ललित डहरिया के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री डहरिया ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सभी आंगनबाड़ी केंद्र समय पर खुलें और बच्चों की उपस्थिति संपर्क ऐप एवं पोषण ट्रैकर ऐप में वास्तविक रूप से दर्ज की जाए। साथ ही प्रत्येक बच्चे का शारीरिक माप त्रुटि रहित तरीके से लिया जाए एवं उसकी सही प्रविष्टि पोषण ट्रैकर ऐप पर दर्ज की जाए, ताकि कुपोषण की रोकथाम सुनिश्चित की जा सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम में यूनिसेफ से श्री प्रेम सिंह चौहान (प्रमुख मास्टर ट्रेनर) ने भी कार्यकर्ताओं को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान क्षेत्र की पर्यवेक्षक श्रीमती आशा भदौरिया, श्रीमती आस्था शिवहरे, श्रीमती पूनम मौर्या एवं श्रीमती छवि यादव तथा ब्लॉक कोऑर्डिनेटर श्रीमती कुमारी माही मेहरा की उपस्थिति रही।

जिले में 1 जून से आज दिनांक तक 2502.0 मिलीमीटर वर्षा की गई दर्ज

नर्मदापुरम। जिले में 1 जून 2025 से आज दिनांक 06 जुलाई को प्रात: 8 बजे तक जिले में 2502.20 मिलीमीटर वर्षा दर्ज हुई है। गत वर्ष इसी अवधि में 1449.5 मिलीमीटर वर्षा हुई थी। अधीक्षक भू-अभिलेख नर्मदापुरम ने बताया है कि 06 जुलाई 2025 को प्रात- 8 बजे तक तहसील नर्मदापुरम में 393.7 मिलीमीटर, सिवनीमालवा में 188.0 मिलीमीटर, इटारसी में 185.6 मिलीमीटर, माखननगर में 133.0 मिलीमीटर, सोहागपुर में 229.0 मिलीमीटर, पिपरिया में 323.2 मिलीमीटर, बनखेड़ी में 467.0 मिलीमीटर, पचमढ़ी में 379.8 एवं तहसील डोलरिया में 202.7 मिलीमीटर वर्षा दर्ज हुई है। जिले की सामान्य औसत वर्षा 1370.5 मिलीमीटर है। अधीक्षक भू-अभिलेख नर्मदापुरम ने बताया है वर्तमान में सेठानी घाट का जलस्तर 939.40 फीट है, तवा जलाशय का 1125.60 फीट है, बरगी जलाशय का 417.25 मीटर एवं बारना जलाशय 344.46 मीटर दर्ज किया गया है। उल्लेखनीय है सेठानी घाट का अधिकतम जल भराव 967 फीट है, तवा जलाशय का अधिकतम जल भराव 1166 फीट है, बरगी जलाशय का जल भराव 422.76 मीटर है तथा बारना जलाशय का अधिकतम जल भराव 348.55 मीटर है।

बाइक ध्वज यात्रा को लेकर हुई बैठक

समय जगत, श्योपुर। श्री महाकाल बाइक ध्वज यात्रा समिति की एक बैठक मोतीकुई स्थिति आश्रम पर संत श्री परमदास बालकदास बाबा के सानिध्य में सम्पन्न हुई। जिसमें निर्णय लिया गया कि आगामी 18 जुलाई को श्योपुर से बाबा महाकाल के दर्शनों के लिए यात्रा रवाना होगी। यात्रा टोडी गणेश मंदिर से पूजा अर्चना के साथ रवाना होगी। समिति के अध्यक्ष राममूर्ति सौंठवा एवं सचिव तुलसी दीक्षित ने जानकारी देते हुए बताया कि, शहर से दूसरी बार ये बाइक ध्वज यात्रा रवाना होगी, जिसकी तैयारियां समिति द्वारा शुरू कर दी गई है। उन्होने बताया कि मंडल स्तर पर बड़ौदा, श्योपुर, प्रेमसर, जावड़ेश्वर, राड़ेप,कराहल, ढोढर की कार्यकारणी शीघ्र घोषित की जाएगी। बैठक में रामलखन नापाखेडली, रमाकांत शर्मा ,सुरेंद्र बासौद, महावीर पांचाल, योगेंद्र जाट, बृजेश मुद्गल, सियाराम को उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी पूर्व की भांति रहेगी। इसी तरह ओमप्रकाश कुशवाह को कोषाध्यक्ष व टिंकू शर्मा को सह कोषाध्यक्ष बनाया गया है। बैठक में बडी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भाजपाईयो ने मनाई डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्म जंयती

समय जगत, खिरकिया। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्मजयंती पर भाजपाईयो ने शासकीय चिकित्सालय खिरकिया में मरीजो को फलो का वितरण किया गया। इस दौरान उन्होने डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की फोटो पर माल्याअर्पण कर उन्हे याद किया और कहा की श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय जनता पार्टी के स्तंभ थे जिन्होंने अपनी भारतीय जनता पार्टी के लिए सब कुछ त्याग कर दिया जहां हुआ बलिदान मुखर्जी वह कश्मीर हमारा है वह सारा का सारा है। इस दौरान भाजपा जिला मंत्री ओमप्रकाश चौहान मंडल अध्यक्ष संजय यादव हेमंत राजपूत उमेश गीते सोनू तिवारी राजू महिवाल अनिल जैन नितिन गुप्ता कमलेश सेजकर नेहरू जाट उत्तम तिवारी ओम देवराले मोनू तिवारी हरीओम बांके दीपक पटेल शुभम राठौर बबलु पवार टिंटी मीना मानसिंह चौहान गिरीश अग्रवाल दीपक राजपूत दीपक पटेल प्रदीप राजपूत संजय मीणा शुभम श्रीवास सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

मोहर्रम पर हरदा की सभी मस्जिदों में दुआ ए आशुरा पढ़ी गई, खेड़ीपुरा में ताजिया समिति का हुआ सम्मान

समय जगत, हरदा। आशुरे के दिन रोजा रखकर शहीदाने करबला को याद किया गया,हरदा की सभी मस्जिद एवं मदरसों मे दुआए आशुरा का आयोजन किया गया। जिसमें देश व समाज की खुशहाली के लिए दुआएं मांगी। शाम को मस्जिदों में रोजा इफ्तार का आयोजन हुआ,सुबह ताजिए निकाले गए,शिफा समिति अध्यक्ष डॉ रविन्द्र कुमार कुशवाहा व्दारा खेडीपुरा ताजिया समिति का शिल्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। गली-मोहल्लें में हलीम बनाकर शाम को लंगर व शबील पिलाया गया। शहर के ताजिये मोहल्ला समिति के माध्यम से बाजार चौक पहुंचे जहाँ हिन्दू-मुस्लिम समाज के लोगों ने मन्नते उतारी।मुहर्रम के दिनों में भी कई मुस्लिम उपवास करते हैं,साथ ही मोहर्रम पर्व पर एक विशेष दुआ का आयोजन हर मस्जिद मे होता है।इस संबंध मे मोहम्मदी मस्जिद सैय्यद नजाकत अली बाबा ने बताया कि इस दुआ को दुआए आशुरा कहा जाता है, इस दुआ का इतना महत्व है।

पहली बारिश में उखड़ा रेवा पथ, लोकार्पण के कुछ ही महीनों में गुणवत्ता की खुली पोल

समय जगत, मंडला। सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते द्वारा 2 जनवरी 2025 को लोकार्पित नर्मदा नदी पर बने छोटे पुल रेवा पथ की निर्माण गुणवत्ता पर अब गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। महज 1-2 दिन की बारिश में ही पुल का डामरीकरण उखड़ गया है, जिससे निर्माण कार्य की गुणवत्ता की पोल खुल गई है। नर्मदा नदी के पुराने पुल को नया स्वरूप देकर रेवा पथ के रूप में विकसित किया गया था। इसे जिलेवासियों के लिए एक धार्मिक, पर्यटन एवं प्राकृतिक सौंदर्य से जुड़ा स्थल बताया गया था। लेकिन शुरुआती बारिश ने ही इसकी मजबूती की असलियत उजागर कर दी। पुल के

महाराजपुर की ओर डामर बुरी तरह उखड़ गया है, जिससे साफ जाहिर होता है कि निर्माण में तकनीकी मापदंडों की अनदेखी की गई। स्थानीय नागरिकों में इस स्थिति को लेकर गहरा आक्रोश है। उनका कहना है कि महज कुछ माह पहले लोकार्पित हुए पथ की यह हालत प्रशासनिक लापरवाही और घटिया निर्माण का नतीजा है। लोगों ने निर्माण एजेंसी तथा जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की है। जनप्रतिनिधियों और प्रशासन से अपेक्षा की जा रही है कि मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। साथ ही रेवा पथ की तत्काल मरम्मत कर इसे सुरक्षित एवं टिकाऊ रूप में पुनः नागरिकों के उपयोग हेतु तैयार किया जाए।

भामसं कार्यकर्ता परिचय वर्ग सम्मेलन हरदा में हुआ आयोजित

समय जगत, हरदा। भारतीय मजदूर संघ कार्यकर्ता परिचय वर्ग सम्मेलन बलराम सभागृह कृषि उपज मंडी में संपन्न हुआ।भारतीय मजदूर संघ के जिला सचिव प्रबल पंवार ने जानकारी देते हुए बताया कि दो सत्र के आयोजन में प्रथम सत्र की अध्यक्षता मुकेश धामन्दे जिलाध्यक्ष भारतीय मजदूर संघ, मुख्य अतिथि प्रदीप रिछारिया प्रदेश उपाध्यक्ष राज्य कर्मचारी संघ,अतिथि जितेन्द्र सोनी विभाग प्रमुख नर्मदापुरम संभाग रहें। द्वितीय सत्र महिलाओं का था जिसकी अध्यक्षता कविता मरापे जिलाध्यक्ष आंगनबाड़ी कार्यकर्ता संघ रही,जिसमें मुख्य वक्ता सीमा सोनी जिला उपाध्यक्ष भारतीय मजदूर संघ रही।इस अवसर पर मुख्य वक्ता महेंद्र सिंह ठाकुर ने कहा कि आज भारतीय मजदूर संघ एक विस्तारित रूप में संगठित है,संगठन को शुरूआती दौर में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा। 23 जुलाई 2025 को यह संगठन अपनी स्थापना के 70 वर्ष पूर्ण कर रहा है। उन्होंने कहा कि सात दशक की यात्रा में तपस्या एवं राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिए स्वदेशी विचारधारा को संगठन ने श्रमिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए तथा भारतीय संस्कृति से युक्त राष्ट्र निर्माण में श्रमिक संगठन का बहुमूल्य योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि संगठन ने श्रम योगी से राष्ट्र योगी बनने का मार्ग प्रशस्त किया। देश की आजादी के बाद देश में संसाधनों की कमी थी लेकिन हमारे श्रमिकों द्वारा राष्ट्र निर्माण में जो कार्य किया है वह अविश्वनीय है,आज देश में संसाधनों की कमी नहीं है।उन्होंने कहा कि 7 दशक पूर्व देश में श्रमिकों द्वारा संचालित आंदोलनों पर विदेशी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण स्वदेशी विचारधारा शून्य रहती थी। उस समय आंदोलनो में वंदे मातरम एवं भारत माता की जय का उद्घोष करने पर विकट स्थिति उत्पन्न हो जाया करती थी। संगठन एक विशाल वृक्ष बनकर श्रमिकों के हितों के लिए कार्य कर रहा है।इस अवसर पर जितेन्द्र सोनी विभाग प्रमुख नर्मदापुरम संभाग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संगठन ने देश के श्रमिकों,विद्यार्थियों,एवं युवाओं को एक नई विचारधारा दी है। जिसके कारण हि आज सरकार श्रमिकों के हितों को ध्यान में रखकर अनेक योजनाओं के अंतर्गत कार्य कर रही है,देश के अंतिम छोर के व्यक्ति तक इन योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे श्रम पोर्टल पर करोड़ो श्रमिकों का पंजीकरण हुआ है।सरकार श्रमिकों के हितों के इएसआई,इएफओं, बीमा की सुविधा दे रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सबका साथ सबका विकास के मूल मंत्र के साथ श्रमिकों का कल्याण कर रही है। श्रमिक भाइयों के हितों के लिए कई योजनाएं लागू की है उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा स्वास्थ एवं मोबाइल की सुविधा दे रही है। भारतीय मजदूर संघ के जिलाध्यक्ष मुकेश धामन्दे ने कहा कि विश्व का सबसे युवा देश भारत है, जिसकी आबादी का 65 प्रतिशत लोग 35 वर्ष से कम आयु के हैं, यदि इस ऊर्जा को सही दिशा में लगाया गया,सही मार्गदर्शन मिलेगा तो जल्दी हमारा देश महाशक्ति के रूप में उभर सकता है। प्रधानमंत्री ने स्किल इण्डिया के लिए पहली बार डिपार्टमेंट बनाया।

ओमप्रकाश राठौर बने अखिल भारतीय तेली महासभा मध्यप्रदेश के मीडिया प्रभारी, जिला अध्यक्ष

बोड़ा। बोड़ा के सक्रिय पत्रकार एवं समाजसेवी ओमप्रकाश राठौर मीडिया प्रभारी (लक्ष्मीनारायण राठौर) को अखिल भारतीय तेली महासभा मध्यप्रदेश के मीडिया प्रभारी जिला अध्यक्ष (राजगढ़) पद पर मनोनीत किया गया है। यह मनोनयन महासभा के वरिष्ठ पदाधिकारियोंः राष्ट्रीय महिला संरक्षक यशोदा बेन मोदी, राष्ट्रीय मुख्य संरक्षक रविकरण साहू, राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल राठौर, मध्यप्रदेश प्रभारी गिरधारीलाल राठौर, म.प्र. संरक्षक हिरालाल बलसोरा, राष्ट्रीय महासचिव रामलक्ष्मण साहू तथा प्रदेश महासचिव एडवोकेट समरथ साहू ङ्क की सर्वसम्मति एवं सहमति से किया गया है।ओमप्रकाश राठौर का कार्यकाल आगामी चुनाव तक प्रभावी रहेगा। उन्हें यह पद उनकी सामाजिक सक्रियता, जागरूकता, संगठन के प्रति निष्ठा तथा जनसरोकारों में निरंतर भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए सौंपा गया है। मनोनयन पत्र में अपेक्षा व्यक्त की गई है कि ओमप्रकाश राठौर अपने कर्तव्यों का निष्ठा, पारदर्शिता एवं समाजहित में निर्वहन करते हुए जल्द ही जिले के सभी तहसीलों में कार्यकारिणी का गठन करेंगे। ओमप्रकाश राठौर ने संगठन के वरिष्ठ नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि वे समाज के उत्थान के लिए समर्पित भाव से कार्य करते रहेंगे और मध्यप्रदेश में तेली समाज की सशक्त आवाज़ बनेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिये ऑनलाइन आवेदन एवं नामांकन की प्रक्रिया शुरू

13 जुलाई तक किये जा सकेंगे नामांकन एवं आवेदन

समय जगत, रतलाम। प्रदेश में केन्द्र सरकार के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग मंत्रालय नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिये आवेदन और नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इस संबंध में लोक शिक्षण संचालनालय ने समस्त जिला कलेक्टर्स एवं जिला शिक्षा अधिकारी को दिशा-निर्देश जारी किये हैं। आवेदन एवं नामांकन वेब पोर्टल पर 13 जुलाई तक स्वीकार किये जायेंगे। प्रदेश में जिन शिक्षकों द्वारा 13 जुलाई तक नामांकन कर दिया जायेगा उनके अभिलेख, ऑडियो, वीडियो 15 जुलाई तक पोर्टल पर अपलोड किये जा सकेंगे।

जिला स्तरीय चयन समिति: शिक्षक द्वारा किये गये नामांकन की प्रथम स्तर पर स्कूटनी के लिये जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में समिति गठित होगी। समिति में राज्य शासन का प्रतिनिधित्व जिले के डाइट प्राचार्य और कलेक्टर द्वारा नामांकित प्रतिष्ठित शिक्षाविद् सदस्य के रूप में करेंगे।

राज्य स्तरीय चयन समिति: राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार एवं सम्मान के लिये राज्य स्तर पर भी समिति होगी। सचिव स्कूल शिक्षा विभाग अध्यक्ष होंगे। समिति के अन्य सदस्यों में केन्द्र सरकार के नामांकित प्रतिनिधि, संचालक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के साथ आयुक्त लोक शिक्षण सदस्य सचिव के रूप में शामिल होंगे। राज्य चयन समिति द्वारा विशेष श्रेणी सहित अधिकतम 6 अनुशंसाएं केन्द्र सरकार के ऑनलाइन पोर्टल पर अग्रेषित की जा सकेंगी।

समय सारणी: राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार की ऑनलाइन प्रक्रिया के निष्पादन की समय सारणी निर्धारित की गई है। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के ऑनलाइन आवेदन एवं नामांकन 13 जुलाई 2025 तक स्वीकार किये जायेंगे। शिक्षक द्वारा अंतिम रूप से नामांकन पूर्ण करने की अंतिम तिथि 15 जुलाई तय की गई है। जिला स्तरीय चयन समिति द्वारा राज्य चयन समिति के लिये ऑनलाइन पोर्टल पर 3 अनुशंसाओं को 16 जुलाई से 25 जुलाई तक भेजा जा सकेगा। राज्य चयन समिति द्वारा नेशनल ज्यूरी को शॉर्ट-लिस्टेड 6 अनुशंसाएं केन्द्र सरकार को ऑनलाइन 26 जुलाई से 4 अगस्त तक भेजी जा सकेंगी। पुरस्कार के संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय एवं केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के बेव पोर्टल से प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्रदेशाध्यक्ष के खिलाफ दर्ज प्रकरण के विरोध में जेल भरो प्रदर्शन में श्योपुर से जाएंगे कांग्रेसी

समय जगत, श्योपुर । प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी पर भाजपा सरकार के इशारे पर दर्ज किए गए दमनकारी ,मनमानी पूर्ण असत्य पुलिस प्रकरण के विरोध में आज 8 जुलाई को कांग्रेसी अशोकनगर में प्रदेशव्यापी न्याय सत्याग्रह कार्यक्रम में सामूहिक गिरफ्तारी देने रवाना होंगे। इसको लेकर सोमवार को जिला कांग्रेस ने कूनो पैलेस में जिलाध्यक्ष अतुल चौहान की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें चौहान ने बताया कि प्रदेश कांग्रेस के मुखिया पर दबंगों से पीड़ितों की मदद करने पर मोहन सरकार ने असत्य प्रकरण मुंगावली थाने में दर्ज कर लिया। जिसके विरोध में मंगलवार को अशोकनगर में न्याय सत्याग्रह में प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी,पीसीसी चीफ जीतू पटवारी,नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंधार पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ,दिग्विजय सिंह सहित प्रदेश भर के नेता ओर कार्यकर्ता सामूहिक

गिरफ्तारी देकर भाजपा सरकार ओर प्रशासन की दमनकारी नीति का विरोध करेंगे चौहान ने बताया कि श्योपुर, बड़ौदा, विजयपुर, कराहल,वीरपुर सहित समस्त क्षेत्रों से भारी संख्या में कांग्रेसी आज सुबह रवाना होंगे। बैठक में विधायक बाबू जड़ेल,प्रदेश सचिव योगेश जाट,वरिष्ठ नेता चीनी कुरैशी, दौलत राम गुप्ता,डा कमल शर्मा, रीतेश तोमर, कैलाश गर्ग, रामभरत मीणा, मांगीलाल फौजी,इमरान खान, इंसाफ खान, सुमेर सिंह जाटव,हंसराज मीणा,डा शहजाद रज्जाक अहमद,समीम खान, रुबीना खान,बृजेश ,सखावत खान, गिर्राज शर्मा,वाहिद खान सहित कई कांग्रेस जन मौजूद रहे।

शिक्षक संघ की बैठक शिक्षक सदन में हुई संपन्न

मंडला। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार शिक्षक संघ जबलपुर संभाग के पदाधिकारी जिसमें प्रमुख रूप से संगठन मंत्री शिक्षाविद डॉक्टर अजय तिवारी , जबलपुर जिला के जिला अध्यक्ष आशीष तिवारी , संभागीय सचिव श्रीमती राजकुमारी गुप्ता, नरसिंहपुर जिला के जिला अध्यक्ष सत्य प्रकाश त्यागी एवं मंडला जिले के जुझारू एवं क्रांतिकारी अध्यक्ष विवेक शुक्ला, प्रांतीय पदाधिकारी असीम गौतम, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अखिलेश चंद्रोल, शैल दुबे, राजकुमार सिंगोर, मंडला जिले के संगठन मंत्री योगेश चौरसिया, सचिव एवं कोषाध्यक्ष घनश्याम चौरसिया, रेवा शंकर पांडे, भाई प्रियदर्शन पटेल, नगर अध्यक्ष प्रवीण वर्मा , विभिन्न विकासखंडो से पधारे पदाधिकारीगण जिसमें प्रमुख रूप से मोहगांव से दीपक कछवाहा , बिछिया से वरिष्ठ उपाध्यक्ष मंगलदास टांडिया , सुन्हेर सिंह धुर्वे तहसील अध्यक्ष,बीजाडांडी से विवेक साहू,विनय झरिया, रमेश पटेल ,कुलभूषण सिंह यादव, मंडला विकासखंड से संदीप कछवाहा, अनिकेत, रवि साहू , उपाध्याय जी, दुष्यंत कुशवाहा ,घनश्याम सिंगौर, सचिव रेवाशंकर पांडे, कोषाध्यक्ष घनश्याम चौरसिया,नैनपुर से अजय सोनी,निखिल कुमार पटेल, बी. डी.बघेल , नामदेव जी एवं मातृ शक्तियों में श्रीमती इंदिरा सिंगरौरे , श्रीमती सुरेखा वैश्य, श्रीमती ऋतु सिंगोर, श्रीमती शांति मरावी सहित विभिन्न विकास खंडों से पधारे शिक्षक संवर्ग, अध्यापक संवर्ग के सम्माननीय साथियों की भी गरिमामयी उपस्थिति में निर्धारित एजेंडा के विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। जिस पर विभिन्न वक्ताओं ने प्रकाश डालाद्य संभाग स्तरीय बैठक में समस्त विकासखंडों से पदाधिकारीगण उपस्थित हुए थे। आगामी संभागीय स्तरीय बैठक का आयोजन जुलाई माह के अंत में जबलपुर में प्रस्तावित है।

एक गोल्ड, दो सिल्वर मेडल जीतकर कीर्तिमान रचने वाली विशाखा बनीं प्रेरणा की मिसाल

खंडवा की बेटी विशाखा पाराशर ने राष्ट्रीय तलवारबाज़ी प्रतियोगिता में दिलाया गौरव

खंडवा। नारी शक्ति, आत्मबल और संघर्ष की मिसाल बनकर खंडवा की बेटी विशाखा पाराशर ने चेन्नई में आयोजित राष्ट्रीय तलवारबाज़ी प्रतियोगिता (बी कैटेगरी) में एक स्वर्ण और दो रजत पदक जीतकर न केवल अपने परिवार, बल्कि खंडवा जिले और पूरे मध्यप्रदेश का नाम रोशन किया है।

2015 में दुर्घटना के बाद भी नहीं टूटी हिम्मत: विशाखा पाराशर के जीवन की कहानी साहस, संकल्प और संघर्ष का जीवंत उदाहरण है। वर्ष 2015 में एक दुर्घटना में छत से गिरने के कारण उनकी रीड की हड्डी में गंभीर चोट आई थी, जिससे उनके शरीर का निचला हिस्सा काम करना बंद कर गया था। डॉक्टरों की राय में ज़िंदगी सामान्य नहीं रह सकती थी, लेकिन विशाखा ने अपनी कमजोरी को हार मानने के बजाय अपनी ताकत बना लिया।

माता-पिता का संबल बना संजीवनी: विशाखा के पिता श्री विजय पाराशर एवं माता ने कभी हार नहीं मानी और अपनी बेटी को हर संभव मानसिक, भावनात्मक और नैतिक समर्थन दिया। इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर विशाखा ने खेलों में अपने भविष्य को आकार देना शुरू किया। उनकी इच्छाशक्ति और लगातार अभ्यास ने उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया जहाँ आज वे देश की एक होनहार फेंसर बन चुकी हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर दमदार प्रदर्शन: चेन्नई में 4 से 6 जुलाई तक आयोजित हुई नेशनल फेंसिंग चैंपियनशिप में विशाखा ने बी कैटेगरी में 1 गोल्ड और 2 सिल्वर मेडल जीतकर देशभर के खिलाड़ियों के बीच अपनी अलग पहचान बनाई। उनकी यह सफलता न केवल खेल प्रतिभा का प्रमाण है, बल्कि मानसिक दृढ़ता और आत्मबल का प्रतीक भी है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन करने की इच्छा: विशाखा वर्तमान में गांधीनगर स्थित स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (स्ढ्ढ) में नियमित रूप से प्रशिक्षण ले रही हैं। उनकी अगली तैयारी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर भारत का परचम लहराने की है।

अपने संघर्ष और मेहनत से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, यदि संकल्प मजबूत हो तो कोई लक्ष्य असंभव नहीं होता।

खंडवा को विशाखा पर गर्व: निगम परिवार सहित संपूर्ण खंडवा वासियों को विशाखा पाराशर की इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर गर्व है। उनके संघर्ष, जज़्बे और सफलता की कहानी निश्चित रूप से हर युवा और खासकर दिव्यांग जनों के लिए प्रेरणा है।

हांका अभियान छोड़ रील्स अभियान में व्यस्त रीवा पुलिस

■ मिनी मिर्जापुर बनने की ओर अग्रसर रीवा जिला, फॉलोवर्स बढ़ने में व्यस्त रीवा पुलिस

■ अधिकारी, दारोगा कॉन्स्टेबल पर चढ़ा सोशल मीडिया का जुनून

रीवा। मध्यप्रदेश सहित रीवा जिले की पुलिस को सोशल मीडिया पर रंग बिरंगी वीडियो बनाने का यह शौक कुछ ऐसा चढ़ा है कि अब इसको पूरा करने के लिए उन्हें वर्दी और सरकारी गाड़ियों का सहारा लेने से भी कोई गुरेज नहीं है. रीवा पुलिस को भी अजीबोगरीब शौक लग गया है. शौक भी ऐसा है कि अब छुड़ाए से भी नहीं छूट रहा है. आलम यह है कि अब तक सोशल मीडिया पर छोटे- मोटे कलाकार या युवा ही रील बनाकर ख्याति प्राप्त कर रहे थे, लेकिन अब इसमें रीवा पुलिस के दरोगा साहब से लेकर कॉन्स्टेबल और तमाम कर्मचारी भी शामिल हो गए हैं. सोशल मीडिया पर रंग बिरंगी वीडियो बनाने का यह शौक कुछ ऐसा चढ़ा है कि अब इसको पूरा करने के लिए उन्हें वर्दी और सरकारी गाड़ियों का सहारा लेने से भी कोई गुरेज नहीं है.आलम यह है कि लाइक और सोशल मीडिया पर फॉलोअर्स बढ़ाने के लिए रोजाना एक से बढ़कर एक वीडियो सामने आ रही है. रील्स बनाने का चस्का जिसे एक बार लग जाए, फिर न वह दिन देखता है न रात, न घर न द्वार. आजकल रील?स बनाने का बुखार सिर्फ आम लोगों को ही नहीं है, बल्कि पुलिस के भी सिर चढ़कर बोल रहा है. रील्स का चस्का ही ऐसा है कि बनाने वाले ये तक भूल जाते हैं कि वे कहां हैं और रील?स बनाने के बाद उनके साथ क्या हो सकता है ! रीवा पुलिस भी आन ड्यूटी रील्स बना कर अपने फालोवर्स बढ़ाने में व्यस्त हैं ! घर से ड्यूटी पर निकलते ही अपनी पोस्ट वायरल करते हैं और थाना पहुचते पहुंचते रील्स कितनी वायरल हुई कितने लोगों ने लाइक किया कितने लोगों ने कमेंट किया कितने लोगों ने शेयर किया ! वायरल होने के लिए रीवा पुलिस के वर्दी धारियों ने नया नियम बना लिया है अपराधी भले भाग जाए लेकिन रील्स जरूर वायरल होनी चाहिए ! रीवा में अपराधी पकड़े जाएं या नहीं रील्स जरूर ट्रेंडिंग में होनी चाहिए ! कभी गस्त में तो कभी पुलिस की कार्यवाही अब सब कैमरे के मुताबिक होता है क्योंकि यहां वर्दी कर्तव्य की पहचान नहीं कंटेंट की यूनिफॉर्म बन चुकी है रीवा क्राइम कंट्रोल के लिए नहीं कंटेंट क्रिएशन के लिए चर्चित हो रहा है यहां वर्दी पहनने का मतलब देश सेवा नहीं इंस्टाग्राम पर स्टारडम बनता जा रहा है रीवा पुलिस के कुछ इंस्टाग्राम स्टार अब खुलेआम ड्यूटी का मजाक बना रहे हैं ! पुलिस के जांबाज वर्दी धारी इंस्टाग्राम फेसबुक, वाटशाप सहित अन्य सोशल मीडिया पर हमेशा एक्टिव रहते हैं ! सुबह सबसे पहले वर्दी फिर रिंगलाइट फिर वीर रस वाला म्यूजिक डायलॉग ÷हमसे जो टकराएगा मिट्टी में मिल जाएगा - दबंग दबंग सिंघम स्टाईल - देशभक्ती गानो पर रियलिटी, नये पुराने रिमेक्स गानों पर डांस और एक्टिंग ! अपराधी टकराकर निकल जाते हैं ! वायरल सिर्फ रील्स होती है ! पुलिस वाले साहब अपराधी बाद में पकड़ लेंगे ! पहले इनको तो फॉलोअर्स बढ़ाने चाहिए ! रीवा जिले के कथित यूट्यूब पत्रकारों के द्वारा सिंघम की उपाधि प्राप्त वर्दीधारियों का रोज नई रील्स , नया डायलॉग , नया एंगल, नया फेस, नया फिल्टर , नया गाना लगता है थाने में नहीं जैसे शूटिंग शो में तैनात हो ! ड्यूटी तो रियल के एंड क्रेडिट में आती होगी शायद ! खैर ऐसा लगता है कि एफआईआर से ज्यादा फोकस बैकग्राउंड म्यूजिक पर ज्यादा रहता है ! रीवा पुलिस के रील्सबाज पुलिसकर्मियों का प्रोफाइल देख कर तो लगता है किसी सीरीज का प्रोमो देख रहे हैं यह पुलिस की नौकरी नहीं बल्कि लगता है कि कई वर्षों से वेब सीरीज बना रहे हैं स्क्रिप्ट तैयार, कैमरामैन तैयार, कैमरा ऑन ,रोल कैमरा एक्शन, ! फेसबुक इंस्टाग्राम सोशल मीडिया साइट में वेब सीरीज वायरल, इंतजार कमेंट का , लाइक शेयर का ! हर आधे घंटे में मोबाइल का अपना सोशल मीडिया चेक करने की आदत ! रीवा जिले की जनता पूछ रही है पुलिस रील्स बना रही है या नया व्यवस्था का मजाक ! क्या वर्दी अब कानून की ताकत है या सोशल मीडिया की टूल ! थानों में अब अपराधी नहीं ट्राइपॉड पर कैमरे सेट होते हैं और गस्त से पहले मेकअप चेक होता है और पूछताछ से पहले स्क्रिप्ट रिहर्सल होती है ! यह रील्स बना ले यह ड्यूटी कर ले ! सवाल अब जनता का है वर्दी पहनी है देश के लिए या डांस टेंस के लिए गस्त पर निकाले या फिर कोई नया ट्रांजीशन सूट कर ले यह तय करना मुश्किल हो गया है रीवा पुलिस का असल में हांका नहीं बल्कि इस समय मौका अभियान चल रहा है मौका मिलते ही कैमरा ऑन और ट्रेंडिंग ऑडियो पर वर्दी में परफॉर्मेंस शुरू अपराधी बाद में पकड़ लेंगे पहले रिल्स की क्लिप फाइनल होनी चाहिए ! एसपी साहब आपकी रीवा पुलिस सर्विस में नहीं सर्वे में व्यस्त है कौन सा अफसर कितना ट्रेंड कर रहा है ! किसकी रील्स पर कितने फॉलोवर्स किसके लिए और किसके डायलॉग पर कितनी तालियां बज रही है दिन भर यही देखा जाता है एक तरफ तो जनता अपराध से त्रस्त है दूसरी तरफ हमारी रीवा पुलिस सेल्फी मोड में व्यस्त है जनता 100 डायल करती है तो रिस्पांस आए ना आए लेकिन इंस्टा पर रियल पोस्टेड का नोटिफिकेशन जरूर आता है आपको भी आता होगा जब कानून के रक्षक स्क्रिप्ट हीरो बनने लगे तो अपराधी रियल विलन बनाकर मंच पर कब्जा कर लेते हैं वर्दी का मतलब वायरल होना नहीं वास्तविक सेवा होना चाहिए वरना अगली बार पुलिस थाने में नहीं स्क्रीनशॉट में नजर आएगी ! तो एसपी साहब जरा ध्यान दीजिए आपके पुलिसकर्मी वीर जरूर है लेकिन ऑन रील ..... !

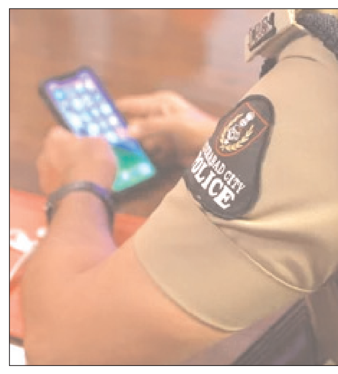

डीआईजी को आदेश जारी कर रोकना पड़ा: रीवा की पुलिसिंग पहले से ही भगवान भरोसे चल रही थी। अब उस पर पुलिस अधिकारियों को रील बनाने का शौक और घातक हो गया है। एक महिला थानेदार काम कम और रील ज्यादा बनाती है। उनका शोसल मीडिया पूरी तरह से रील से ही भरा है। ड्यूटी में हो या घर पर हर जगह की रील भरी पड़ी है। दरोगा मैडम पूरी तरह से फिल्मी हैं। एक वीडियो थाना में बैठकर मैडम ने बनाई, जो खूब वायरल हो रहा है। यह रील का शौक पुलिस महकमे के लिए सिरदर्द बन गया है। इस सिरदर्द को रोकने के लिए डीआईजी को आदेश जारी करना पड़ गया है। सगरा थाना में पदस्थ महिला थाना प्रभारी अंकिता मिश्रा के एक वायरल रील ने पूरे पुलिस विभाग की नींद उड़ा दी है। थाना में बैठकर बनाई गई रील ने पुलिस विभाग की छवि को भी धूमिल करने का काम किया है। रील सोशल मीडिया में डाल दी गई। इसके बाद उन पर ऐसे ऐसे कमेंट आए जो किसी भी विभाग के लिए बेहतर नहीं कहा जा सकता। थाना प्रभारी अंकिता मिश्रा जहां भी पदस्थ रहीं, वहां की रील बनाकर सोशल मीडिया में वायरल करती रही। उन्हें रील वाली पुलिस अधिकारी भी कहा जाता है। इस मर्तबा सोशल मीडिया में वायरल रील के कारण उनकी मुश्किलें भी बढ़ गई हैं। उनके सोशल मीडिया में कई तरह के कमेंट आ रहे हैं। इनके रील की चर्चाएं चारों तरफ फैलते ही अधिकारियों के भी कान खड़े हो गए हैं। डीआईजी को इस व्यवस्था पर रोक लगाने के लिए सख्त कदम उठाने पड़े। आदेश जारी कर रील पर रोक लगाने का फरमार जारी किया गया है।

डीआईजी ने पत्र में कहा अब जो बनाएगा रील वह नपेगा: पुलिस उप महानिरीक्षक राजेश सिंह चंदेल ने संभाग भर के पुलिस अधीक्षकों के लिए एक आदेश जारी किया है। इस आदेश में स्पष्ट रूप से कहा है कि अत्यधिक पुलिकर्मी वर्दी में अथवा सिविल में अपनी रील बनाकर सोशल मीडिया में वायरल करे हैं। पुलिस जैसे अनुशासित विभाग में रहकर किसी भी पुलिसकर्मी द्वारा ऐसा किया जाना अनुशासन के सर्वथा विपरीत होकर उसकी पद एवं गरिमा के भी प्रतिकूल है। इससे आज जनता के बीच पुलिस की छवि पर भी अत्यधिक प्रतिकूल असर होता है। डीआईजी ने सभी पुलिसकर्मियों को कड़ी हिदायत दी है कि विभागीय कार्यों के अलावा अन्य कोई भी ऐसी पोस्ट सोशल मीडिया पर न डालें जिससे पुलिस विभाग की गरिमा को छति पहुंचे। इसी प्रकार किसी भी स्तर पर के अधिकारी, कर्मचारी स्वंय की कोई रील बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड न करें। डीआईजी ने निर्देशित किया है इस आदेश सभी थाना प्रभारी रोलकाल में इस आदेश को सभी को पढ़कर सुनाए और पालन कराएं।

सार-समाचार

स्वास्थ्य अधोसंरचना विकास कार्यों की गति और गुणवत्ता हो सर्वोच्च प्राथमिकता: शुक्ल

समय जगत, भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय, भोपाल में विभागीय अधोसंरचना विकास कार्यों की गहन समीक्षा की। बैठक में राज्य योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, 15वां वित्त आयोग एवं प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-अभीम) के अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्यों की भौतिक एवं वित्तीय प्रगति की बिंदुवार समीक्षा की गई। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि निर्माण कार्यों की प्रगति नियमित रूप से मॉनिटर की जाए और सभी परियोजनाओं को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण किया जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि अप्रारंभ कार्यों की समयबद्ध शुरुआत सुनिश्चित की जाए तथा लंबित निविदाओं की प्रक्रिया को तेजी से पूर्ण किया जाए। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से कहा कि हर परियोजना की प्रोजेक्टवार समीक्षा की जाए और यह देखा जाए कि बजट के उपयोग में पारदर्शिता, समयबद्धता और उचित तकनीकी गुणवत्ता सुनिश्चित हो। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि प्रत्येक योजना की मासिक समीक्षा की जाए और कार्यों की प्रगति की फील्ड मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाये। विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि सभी लंबित कार्यों की समयसीमा निर्धारित कर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विभाग में रिक्त पड़े तकनीकी पदों (इंजीनियरिंग एवं सुपरविजन स्तर) की शीघ्र भर्ती के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्ध क्रियान्वयन के लिए तकनीकी मैनपावर की तैनाती अत्यावश्यक है। प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा संदीप यादव, परियोजना संचालक नीरज कुमार सिंह, एनएचएम की प्रबंध संचालक डॉ. सलोनी सिडाना, तथा विभागीय अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। बताया गया कि अधोसंरचना विकास के 2949 कार्य स्वीकृत हैं, जिनमें से 1972 कार्य पूर्ण तथा 754 कार्य प्रगति पर हैं। चालू वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में 335 कार्यों का सफलतापूर्वक निष्पादन हुआ है। इन परियोजनाओं के लिए राशि रुपये 2483.37 करोड़ की प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है, जिसके विरुद्ध अब तक राशि रुपये 729.52 करोड़ का व्यय हो चुका है। भोपाल में सर्वाधिक 480 कार्य स्वीकृत हुए हैं, जिसमें 306 कार्य पूर्ण हुए हैं एवं रुपये 121.10 करोड़ व्यय किया गया है। जबलपुर संभाग ने रुपये 147.69 करोड़ के व्यय के साथ सर्वाधिक वित्तीय प्रगति दर्ज की है। राज्य स्तरीय योजना मद के अंतर्गत 285 कार्य स्वीकृत, जिनमें 156 पूर्ण/हस्तांतरित एवं 118 कार्य प्रगति पर हैं। 9 कार्य अप्रारंभ हैं एवं 2 कार्य निविदा स्तर पर हैं। जबलपुर (रु 37.28 करोड़), भोपाल (रु 39.41 करोड़) और रीवा (रु 33.01 करोड़) सहित सभी संभागों में योजनाओं की सतत प्रगति जारी है।

भाजपा मंडल लालगांव में श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्म जयंती मनाई गई

रीवा। जिले के लालगांव - भाजपा लालगांव मंडल द्वारा डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्म जयंती मनाई गई इस अवसर पर स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा पुष्पांजलि समारोह एवं विचार संगोष्ठी कार्यक्रम रखा गया। समस्त कार्यकर्ता सम्मिलित होकर डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को श्रद्धांजलि अर्पित किए इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से लालगांव मंडल अध्यक्ष सुनील पांडे सहित भाजपा नेता शंकर सिंह मंडल संजय खरे, मंडल उपाध्यक्ष कामता यादव, युवा नेता दीपनारायण पांडे,वैभव सिंह , रमेश तिवारी , दिनेश सिंह, महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष व भाजपा नेत्री कल्पना वर्मा , रीना गुप्ता , पूरन पाठक फतेन्द्र सिंह,रामजी जायसवाल,रामचंद्र तिवारी, अमृतलाल प्रजापति उपस्थित थे।इस दौरान मंडल अध्यक्ष सुनील पांडे ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के राष्ट्रहितकारी विचार आज भी हमारे मार्गदर्शक हैं।

गुढ़ नगर परिषद की लचर व्यवस्था उजागर कीचड़ और बदबू से बेहाल नागरिक

गुढ़ (नि.प्र)। प्रदेश की चर्चित नगर परिषद गुढ़ की व्यवस्थाएं इन दिनों पूरी तरह चरमराई हुई हैं। थोड़ी सी बारिश में ही पूरा नगर कीचड़ से सना नजर आ रहा है। नालियों का गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है, जिससे नगरवासियों का चलना-फिरना दूभर हो गया है। बदबू और गंदगी के कारण लोगों का घरों से निकलना मुश्किल हो गया है। नगर परिषद के मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री के. एन. सिंह की निष्क्रियता और उदासीनता साफ झलक रही है। नगर की हालत बद से बदतर हो चुकी है लेकिन सीएमओ साहब अपने कार्यालय में वसूली तंत्र में व्यस्त नजर आते हैं। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि पूरे नगर में इनके दलाल सक्रिय हैं जो अवैध वसूली कर उन्हें हिस्सा पहुंचाते हैं।

प्राचार्य ने ड्यूटी करा दी बंद, लिखित शिकायत के बाद सामने आई चिकित्सक की करतूत

संजय गांधी अस्पताल के एक चिकित्सक से डरी नर्सिंग की छात्राएं

रीवा। संजय गांधी अस्पताल के एक चिकित्सक फिर से विवादों में आ गए हैं। इस बार उन्होंने सीधे नर्सिंग कॉलेज की छात्राओं से ही पंगा ले लिया है। चिकित्सक के खिलाफ छात्राओं ने कॉलेज प्राचार्य से शिकायत की। चिकित्सक से छात्राएं खुद को असुरक्षित महसूस कर रही हैं। इसके कारण ही प्राचार्य ने विभाग में जाने से ही छात्राओं को रोक दिया है। प्राचार्य ने डीन को पत्र लिखा है। डीन ने मामले में तीन सदस्यीय जांच टीम बैठा दी है। चिकित्सक की मुश्किलें अब बढने वाली हैं। संजय गांधी अस्पताल के चिकित्सक डॉ अशरफ पर इस बार शासकीय नर्सिंग कॉलेज की बीएससी नर्सिंग द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने गंभीर आरोप लगाकर हड़कंप मचा दिया है। इसकी लिखित शिकायत छात्राओं ने नर्सिंग कॉलेज प्राचार्य की थी। शिकायत की गंभीरता को देखते हुए प्राचार्य ने इस संबंध में डीन श्याम शाह मेडिकल कॉलेज को पत्र लिखकर अवगत कराया। डीन ने भी इस मामले में जांच के आदेश दे दिए हैं। इस मामले की जांच महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीडन अधिनियम 2013 के तहत गठित आंतरिक परिवाद समिति की टीम करेगी। इस टीम की पीठासीन अधिकारी नेत्र रोग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ शशि जैन हैं, वह अपनी टीम के साथ मामले की जांच करेंगी। जांच करने के बाद डीन को एक सप्ताह में जांच प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगी। छात्राओं ने यह लगाए हैं डॉ अशरफ पर आरोप बीएससी नर्सिंग की 80 छात्राओं ने लिखित में डॉ अशरफ के खिलाफ शिकायत की हैं। छात्राओं ने लिखित में कहा है कि डॉ अशरफ छात्राओं के साथ गंदा व्यवहार करते हैं। छात्राओं ने उनके व्यवहार और हाव भाव से खुद को असुरिक्षत बताया है। पत्र में कहा है कि डॉ अशरफ का व्यवहार कई मर्तबा छात्राओं को मानसिक रूप से असहज, असुरक्षित और अपमानित करने वाला रहा है। छात्राओं ने शिकायत में कहा है कि उनका व्यवहार मानसिक रूप से प्रताडित करने जैसा है। उन्होंने शिकायत में कहा है कि डॉ अशरफ के व्यवहार के कारण क्लीनिकल लर्निंग वातावरण को भी प्रभावित कर रहा है। इसके बाद प्राचार्य ने डीन को पत्र लिखकर चिकित्सक की हरकतों से अवगत कराया।

ईएनटी से छात्राओं की ड्यूटी हटाई गई: प्राचार्य के बाद डॉ अशरफ की हरकतों की जानकारी मिलने के बाद हड़कंप मच गया। नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्य ने ईएनटी वार्ड और ईएनटी ओटी से द्वितीय और तृतीय वर्ष की छात्राओं की ड्यूटी पर ही रोक लगा दी है। सभी छात्राओं का इस विभाग में ड्यूटी पर जाने से रोक दिया गया है। छात्राओं को असुरक्षित देखते हुए प्राचार्य ने डीन से इस मामले में उचित कार्यवाही की मांग की है।

डीन ने दिए जांच के निर्देश: शिकायत की जानकारी मिलने के बाद डीन डॉ सुनील अग्रवाल ने डॉ अशरफ के खिलाफ जांच के आदेश दे दिए हैं। आंतरित परिवाद समिति इस पूरे मामले की जांच करेगी। एक सप्ताह में जांच कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगी। इस जांच टीम में आंतरिक परिवाद समिति की पीठासीन अधिकारी डॉ शशि जैन, सदस्य डॉ नीरा मराठे, पीएसएम, श्रीमती रीना पटेल स्टाफ नर्स और अशासकीय सदस्य के रूप में कमलेश सचदेवा खुशी फाउंडेशन शामिल हैं। यही मामले की जांच करेंगे।

चौरसिया समाज समिति की बैठक सम्पन्न

रीवा। चौरसिया यूनिटी भवन महसांव रीवा में चौरसिया समाज समित की आवश्यक बैठक सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता अखिल भारतीय चौरसिया समाज के प्रदेश अध्यक्ष रामकृष्ण चौरसिया ने किया। बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष रामकृष्ण चौरसिया ने 29 जुलाई 2025 को नांगपंचमी चौरसिया दिवस को बढ़े ही धूमधाम के साथ मनाया जायेगा जिसमें आप सभी का हिस्सेदारी आवश्यक है। उन्होने कहा कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी चौरसिया युनिटी भवन महसांव रीवा में सुबह 10 बजे से भगवान नाग देवता एवं नागवेलि की पूजा अर्चना की जायेगी तत्पश्चात् भगवान नागदेवता एवं नागवेलि की शोभा यात्रा हनुमान चौराहा महसांव से होते हुए गोरगी, खजुहा, छोटी गोरगी, भीटी, पतौता होते हुए चौरसिया यूनिटी भवन महसांव में समाप्त होगी जहां पर वृहद कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। उन्होने कहा कि चौरसिया समाज के कक्षा 10वीं एवं 12 में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त मेधावी छात्र/छात्राओं को सम्मानित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की जायेगी और इस अवसर पर समाज के विशिष्ट लोगों को भी सम्मानित किया जायेगा। कार्यक्रम समाप्ति पश्चात् वृहद भण्डारे का आयोजन करने का भी निर्णय बैठक में लिया गया। बैठक में डा.एन.सी.चौरसिया, रामानुज चौरसिया, रामसुख चौरसिया, अयोध्या प्रसाद चौरसिया, राधेलाल चौरसिया, संतोष चौरसिया कोटेदार, हेमलाल चौरसिया, शारदा प्रसाद चौरसिया, डिगनलाल चौरसिया, हनुमान चौरसिया एवं मंदिर के पुजारी उपस्थित रहे।

भाजपा सरकार विरोधी गतिविधियां सीएमओ के चैंबर में संचालित

गुढ़ (नि.प्र)। नगर परिषद गुढ़ एक बार फिर चर्चाओं में है। यहां पदस्थ मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री के एन सिंह पर गंभीर आरोप लग रहे हैं कि वे भारतीय जनता पार्टी की सरकार विरोधी गतिविधियों में लिप्त हैं। जानकारी के अनुसार, सीएमओ कार्यालय में दिनभर भाजपा विरोधी नेताओं और लोगों का जमावड़ा लगा रहता है, जिससे नगर परिषद का प्रशासनिक वातावरण प्रभावित हो रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि कोई आम नागरिक सीएमओ से मिलने जाए, तो या तो उन्हें मुलाकात का मौका नहीं मिलता या फिर मिल भी गए तो संतोषजनक जवाब नहीं दिया जाता। सीएमओ का रवैया बेहद असहयोगात्मक और राजनीतिक पूर्वाग्रह से ग्रसित बताया जा रहा है। बताया जा रहा है कि सीएमओ श्री सिंह स्वयं कहते हैं, दिसंबर में मुझे सेवा निवृत्त होना है, मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, न ट्रांसफर हो सकता है और न कार्रवाई। मैं जैसे काम करता हूं, वैसे ही करूंगा, जिसे जो करना है कर ले।इस तरह के कथनों से नगर की जनता में रोष व्याप्त है और भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता भी इस व्यवहार से आहत हैं। अब देखना यह है कि जिम्मेदार प्रशासनिक अधिकारी पर इस तरह के आरोपों के बाद उच्चाधिकारियों की ओर से क्या कदम उठाए जाते हैं। फोटो लगानी है।

पूरे दिन पार्टी विरोधी व्यक्तियों का रहता है जमावड़ा

45 दिवसीय प्रस्तुतिपरक अभिनय नाट्य कार्यशाला आरंभ

रीवा। मण्डप सांस्कृतिक शिक्षा कला केंद्र रीवा की प्रतिष्ठित नाट्य संस्था है, प्रतिवर्ष की भांति ग्रीष्मकालीन नाट्य कार्यशाला का आयोजन दिनांक 1 जुलाई से श्रमजीवी पत्रकार भवन, कला मंदिर में दोपहर 01÷00 बजे से शाम 05÷00 बजे तक चल रही है। कार्यशाला में आयु का बंधन नहीं है कार्यशाला में नाट्य मंचन के विभिन्न आयामों के बारे में प्रशिक्षणार्थी सीख रहे हैं इस कार्यशाला में प्रमुख रूप से अभिनेता और चरित्र की तैयारी, नेपथ्य के अभ्यास, कलाकारों को प्रदान की जा रही है। कार्यशाला का निर्देशन विनोद कुमार मिश्रा कर रहे है उन्होंने बताया की कार्यशाला के दौरान कलाकार नाट्य अध्ययन, शारीरिक गतियाँ, रूपसज्जा , वस्त्र विन्यास, प्रकाश परिकल्पना, मंच परिकल्पना , मंच सामग्री, अभ्यास, लाठी प्रशिक्षण, लोकनृत्य, लोकसंगीत और व्यायाम सिखाया जा रहा है। ये अभिनेता की तैयारी के लिए बहुत ही ज्यादा आवश्यक होती है। बालकृष्ण मिश्रा एल्यूमिनी मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय इस कार्यशाला में बतौर अतिथि निर्देशक के रूप में एक नाटक का निर्देशन कर इसका मंचन भी करेंगे। मण्डप से प्रशिक्षित कलाकार आज देश के हर बड़े मंच पर काम कर रहे हैं वह निर्देशन के क्षेत्र में अभिनय एवम नेपथ्य में लगातार कार्य कर मण्डप और रीवा का नाम रोशन कर रहे हैं मण्डप की अध्यक्ष चंद्रकांता मिश्रा ने कहा संस्था समय-समय पर नाट्य कार्यशालाओं की आवश्यकता को पूरी करती आई है यहां आप अपने और आपनी कला को निखार सकते हैं आज मीडिया में बहुत स्थानों पर कार्य के अवसर हैं जहां हम अभिनय का प्रदर्शन कर सकते हैं फिल्मों, सीरियल्स, ओटीटी प्लेटफॉर्म, एवं यू-ट्यूब और इंस्टाग्राम के माध्यम से आप अभिनय को दर्शकों के बीच प्रदर्शित कर सकते हैं और सुना सकते हैं। इसके लिए रंगमंच की जानकारी होना जरूरी है।

नाट्य कार्यशाला के दौरान दो नाट्य प्रस्तुतियो की भी तैयारी की जा रही है। नाट्य कार्यशाला मे विभिन्न कला प्रशिक्षक के रूप में कुंवर सुधीर सिंह नेपथ्य, राजमणि तिवारी भोला भाई लाठी तथा लोकनृत्य, विपुल सिंह स्क्रिप्ट राइटिंग, यशो शास्त्री नाट्य संगीत के लिए एवं विनोद कुमार मिश्रा कार्यशाला निर्देशक होंगे। जिन कला प्रेमियों को इस कार्यशाला से जुड़ना है वह कला मंदिर में पत्रकार भवन मे आकर संपर्क कर सकते हैं।

निगम आयुक्त एवं भाजपा जिला अध्यक्ष की उपस्थिति में हुआ आयोजन

शहर में कुल 1 लाख पौधों का रोपण करने का लक्ष्य निर्धारित

रीवा। नगर निगम रीवा, व्यापारी महासंघ रीवा, सिन्धी सेंट्रल पंचायत, और सिन्धु भवन ट्रस्ट रीवा के संयुक्त तत्वाधान में आज शहर के हृदय स्थल सिन्धु भवन प्रांगण में पौधारोपण किया गया। यह कार्यक्रम नगर निगम आयुक्त डॉ0 सौरभ सोनवणे और भारतीय जनता पार्टी रीवा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता और सिंधी सेंट्रल पंचायत, सिंधु भवन ट्रस्ट के अध्यक्ष सिंधु रत्न दादा प्रहलाद सिंह की विशेष उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रशासन द्वारा शहर में कुल 1 लाख पौधों का रोपण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिसमें इस अभियान में रीवा व्यापारी महासंघ द्वारा 5000 पौधे विभिन्न प्रजातियों के उपलब्ध कराए गए, जिसके लिए निगम आयुक्त ने महासंघ का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान सिंधी सेंट्रल पंचायत की ओर से निगम आयुक्त का पुष्पगुच्छ एवं शॉल भेंटकर अभिनंदन किया गया। पौधारोपण कार्यक्रम के उपरांत सिंधु भवन में हाल ही में आयोजित यूपीएससी काउंसलिंग सेमिनार में भाग लेने वाले बच्चों से आयुक्त ने भेंट की और उन्हें सिविल सेवाओं की तैयारी, लक्ष्य निर्धारण एवं सफलता के मंत्र बताए। उन्होंने अपनी प्रशासनिक यात्रा के अनुभव साझा करते हुए छात्रों को प्रेरित किया कि सही दिशा, समर्पण और निरंतर सुधार से कोई भी कठिनाई सफलता के मार्ग में बाधा नहीं बन सकती। इस कार्यक्रम में सिंधी सेंट्रल पंचायत के अध्यक्ष दादा प्रहलाद सिंह जी, वरिष्ठ समाज सेवी लद्दाराम ठारवानी, कोषाध्यक्ष चंदीराम केसवानी सिंधु भवन ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष कन्हैया लाल मंगलानी नंदलाल कोटवानी, परसराम कोटवानी, सुदामलाल सचदेव, गिरधारी लाल गंगवानी, रमेश दुबे, सुशील कुंगवानी ,राजकुमार टिलवानी अजीत आहूजा, प्रहलाद चेलानी, किशोर विधवानी, दीपक दुर्गिया, रीवा व्यापारी महासंघ से संजीव गुप्ता, गुलाब साहनी, महेश हीरवानी, हरीश वाधवानी, वेद प्रकाश गुप्ता, प्रकाश गुप्ता, जितेंद्र शाह, प्रभात सोनी बंटी, अंशुमन गुप्ता, अशोक आवतानी, शहर के प्रतिष्ठित नागरिक, व्यापारी और नगर निगम की टीम उपस्थित रही। नगर निगम आयुक्त डॉ. सोनवणे ने कार्यक्रम के अंत में सभी सहभागी संगठनों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए नागरिकों से अपील की कि वे अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर शहर को हरा-भरा और स्वच्छ बनाने में योगदान दें। इसके अतिरिक्त निगम आयुक्त ने पुलिस परेड ग्राउंड में पौधारोपण की तैयारियों को लेकर निरीक्षण किया एवं व्यापारी संघ एवं अन्य सहयोगी संस्था के साथ प्रतीकात्मक पौधारोपण किया गया। निगम आयुक्त ने बताया कि कल यहां सभी सहयोगी संस्थाओं एवं रीवा जिला प्रशासन के पदाधिकारियों द्वारा 5000 पौधों का लक्ष्य रखते हुए सुबह 10 बजे से वृहद पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

संपादकीय

मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिये तेजी से बढ़ते कदम

मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है। महिला हितैषी कई योजनाओं के सफल क्रियान्वयन एवं प्रभावी संचालन की बदौलत मध्यप्रदेश इस मामले में अग्रणी राज्य बन गया है। अब मध्यप्रदेश सरकार ने एक क्रांतिकारी और दूरदर्शी कदम उठाते हुए महिलाओं और युवतियों के लिए रात की पाली में कार्य करने के द्वार खोल दिए हैं। यह निर्णय न केवल लैंगिक समानता की दिशा में एक ऐतिहासिक छलांग है, बल्कि यह भारत के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को नया आकार देने का एक साहसिक संकल्प भी है। मध्यप्रदेश दुकान एवं स्थापना अधिनियम, 1958 और कारखाना अधिनियम, 1948 के अंतर्गत यह अनुमति प्रदान की गई है, जिसके तहत महिलाएं कारखानों में रात 8 बजे से सुबह 6 बजे तक और दुकानों तथा वाणिज्यिक संस्थानों में रात 9 बजे से सुबह 7 बजे तक अपनी प्रतिभा और परिश्रम का परचम लहरा सकेंगी। मुख्यमंत्री मोहन यादव के नेतृत्व में लिया गया यह फैसला नारी सशक्तीकरण का एक चमकता सितारा है, जो यह सिद्ध करता है कि महिलाएं किसी भी समय, किसी भी क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश के विकास में योगदान दे सकती हैं। यह कदम न केवल मध्यप्रदेश की प्रगतिशील सोच को उजागर करता है, बल्कि यह भी संदेश देता है कि भारत की नारी शक्ति अब हर चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार है। यह निर्णय उन असंख्य महिलाओं के लिए एक स्वर्णिम अवसर है, जो आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की राह पर चलना चाहती हैं। आज का युग, जब वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने 24×7 कार्य संस्कृति को जन्म दिया है, महिलाओं को रात की पाली में कार्य करने की अनुमति एक ऐसी मशाल है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के 2022-23 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर मात्र 37 प्रतिशत है, जो पुरुषों की तुलना में काफी कम है। मध्यप्रदेश का यह कदम इस अंतर को पाटने की दिशा में एक ठोस प्रयास है, जो नारी शक्ति को आर्थिक मुख्यधारा में लाने का एक शानदार उदाहरण है। माना जा रहा है कि सरकार के ऐसे परिणामदायक प्रयासों से सशक्त महिला-समृद्ध मध्यप्रदेश की अवधारणा पूर्णरूपेण फलीभूत होगी।

ब्रिक्स में भारत का बढ़ता वर्चस्व संतुलित दुनिया का आधार

नजरिया

ब्राजील के रियो डी जनेरियो में रविवार को हुए 17वें ब्रिक्स सम्मेलन में सदस्य देशों ने 31 पेज और 126 पॉइंट वाला एक जॉइंट घोषणा पत्र जारी किया। इसमें पहलगाम आतंकी हमले और ईरान पर इजराइली हमले की निंदा की गई। इससे पहले 1 जुलाई को भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया की मेंबरशिप वाले क्वाड ग्रुप के विदेश मंत्रियों की बैठक में भी पहलगाम हमले की निंदा की गई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस समिट में पहलगाम की आतंकी घटना पर कठोर शब्दों में कहा कि पहलगाम आतंकी हमला सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी इंसानियत पर चोट है। आतंकवाद की निंदा हमारा सिद्धांत होना चाहिए, सुविधा नहीं। मोदी ने शांति एवं सुरक्षा सत्र में कहा कि पहलगाम में हुआ 'कायरतापूर्ण' आतंकवादी हमला भारत की 'आत्मा, पहचान और गरिमा' पर सीधा हमला है। इसके साथ ही उन्होंने एक नई विश्व व्यवस्था की मांग उठाई।

ललित गर्ग

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस समिट में महत्वपूर्ण मुद्रा में दिखाई दिये। उन्होंने एक बार फिर इसके विस्तार की बात की और सदस्य देशों से भी आग्रहपूर्ण ढंग से दबाव बनाया कि कि ब्रिक्स को विस्तार होना चाहिए। ब्रिक्स यानी बी से ब्राजील, आर से रूस, आई से इंडिया (भारत), सी से चीन और एस से दक्षिण अफ्रीका- ये दुनिया की पांच सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों का एक समूह है। ब्रिक्स एक ऐसा बहुपक्षीय मंच है, जो उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग, वैश्विक विकास और सामूहिक सुरक्षा की भावना को बल देता है। ब्रिक्स समिट काफी सफल एवं निर्णायक रहा है।

ब्रिक्स सम्मेलन में आतंकवाद, विशेषकर कश्मीर में फैले इस्लामी आतंकवाद को लेकर चर्चा ने इस मंच को वैश्विक राजनीति की दिशा तय करने वाले संगठनों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया है। इसमें भारत की भूमिका, विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की निर्णायक भूमिका रही है। इन शक्तिसम्पन्न पांचों देशों का वैश्विक मामलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है और दुनिया की लगभग 40 फीसदी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। चीन इसे अपने हित के लिए इस्तेमाल करना चाहता है, जबकि भारत इसे सही मायनों में लोकतांत्रिक संगठन बनाना चाहता है। भारत चाहता है कि ब्रिक्स समूह मिलकर दुनिया में शांति, सह-जीवन, अहिंसा, लोकतांत्रिक मूल्य, समानता एवं सह-अस्तित्व पर बल देते हुए दुनिया को युद्ध, आतंक एवं हिंसामुक्त बनाया जाये। ब्रिक्स देशों के इस सम्मेलन में एक विशेष बिंदु जो उभरकर सामने आया वह था- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का बदलता स्वरूप और इसके कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में प्रभाव। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट रूप से यह रेखांकित किया कि आतंकवाद अब किसी एक राष्ट्र की समस्या नहीं रह गई है, बल्कि यह एक वैश्विक संकट बन चुका है। उन्होंने कश्मीर में हो रहे आतंकवादी हमलों, पाकिस्तान समर्थित गतिविधियों और भारत की सीमाओं पर हो रही हिंसक घटनाओं को उदाहरण के रूप में सामने रखा। मोदी ने ब्रिक्स मंच से यह भी स्पष्ट किया कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, लेकिन जब आतंक का राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल होता है, तो वह मानवता के लिए सबसे बड़ा

खतरा बन जाता है। भारत ने लंबे समय से कॉम्प्रेहेंसिव कॉन्वेंशन ऑन इन्टरनेशनल टेररिजम्स (सीसीआईटी) की पैरवी की है। इस बार ब्रिक्स मंच पर मोदी ने इस प्रस्ताव को फिर से प्रमुखता से उठाया और एक साझा परिभाषा व वैश्विक नीति की मांग की ताकि आतंकवादियों को सुरक्षा और राजनीतिक सहारा न मिल सके। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी सुझाव दिया कि ब्रिक्स को एक साझा आतंकवाद निरोधी तंत्र बनाना चाहिए, जो सूचनाओं का आदान-प्रदान, निगरानी तंत्र और आतंक के वित्तपोषण को रोकने में सहयोग करे। भारत ने इस बार पाकिस्तान का नाम लिए बिना यह सिद्ध किया कि कश्मीर में आतंकवाद एक स्थानीय असंतोष नहीं, बल्कि बाहरी प्रायोजित आतंक है। ब्रिक्स देशों, विशेषकर रूस और ब्राज़ील ने इस बात को स्वीकारा कि कश्मीर में फैले आतंकवाद पर चिंता जायज़ है और उन्होंने भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया। यह कूटनीतिक जीत प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व कौशल को रेखांकित करती है। उन्होंने न केवल भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा की, बल्कि वैश्विक आतंकवाद के विरुद्ध एक नैतिक और व्यावहारिक आधार भी प्रस्तुत किया।

भारत 2026 में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करने जा रहा है। यह भारत के लिए भविष्य को गढ़ने का एक सुनहरा अवसर है। भारत अब न केवल आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि ब्रिक्स एक न्यायसंगत, सुरक्षित और आतंकवादमुक्त विश्व के निर्माण की दिशा में कार्य करे। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भारत की भूमिका न केवल आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक स्वरूप में दिखाई दी, बल्कि यह भी स्पष्ट हुआ कि भारत अब एक वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र के रूप में उभर चुका है। नरेंद्र मोदी ने जिस सूझबूझ, तर्कशक्ति और साहस के साथ कश्मीर मुद्दे को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया, वह भारत की कूटनीति के नए युग की शुरुआत है। आगामी वर्ष में जब भारत ब्रिक्स की अध्यक्षता करेगा, तब यह विश्वास किया जा सकता है कि न केवल भारत, बल्कि समूचा विश्व भारत की नीति, नैतिक दृष्टि और नेतृत्व क्षमता का सम्मान करेगा। इस मंच से भारत केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि मानवता, शांति और न्याय की नई इबारत लिखेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक नई विश्व व्यवस्था की मांग उठाई उन्होंने कहा कि आज दुनिया को एक बहुध्रुवीय और समावेशी व्यवस्था की जरूरत है। इसकी शुरुआत वैश्विक संस्थाओं में बदलाव से करनी होगी। मोदी ने कहा, 'बीसवीं सदी में बनाई गई वैश्विक संस्थाएं इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों से निपटने में नाकाम हैं। एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमता के दौर में तकनीक हर हफ्ते अपडेट होती है, लेकिन एक वैश्विक संस्थान 80 सालों में एक बार भी अपडेट नहीं होती। बीसवीं सदी के टाइपराइटर इक्कीसवीं सदी के सॉफ्टवेयर को नहीं चला सकते। प्रधानमंत्री ने कहा, ग्लोबल साउथ के देश अक्सर डबल स्टैंडर्ड का शिकार रहे हैं। चाहे विकास हो, संसाधनों की बात हो, या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों की, ग्लोबल साउथ को कभी प्राथमिकता नहीं दी गई है। इनके बिना, वैश्विक संस्थाएं ऐसे मोबाइल की तरह हैं, जिसमें सिम कार्ड तो है लेकिन नेटवर्क नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, वैश्विक अर्थव्यवस्था में जिन देशों का योगदान ज्यादा है, उन्हें फैसले लेने का हक नहीं है। यह सिर्फ प्रतिनिधित्व का नहीं, बल्कि विश्वसनीयता और प्रभावशीलता का भी सवाल है।

भारत का मानना था कि समान सोच वाले देशों को साथ लेकर चला जा सकता है। आनेवाले समय में ब्रिक्स दुनिया की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने लगेगा। निश्चित ही ब्रिक्स की ताकत से एक वैश्विक संतुलन स्थापित हो रहा है और अमेरिका एवं पश्चिमी देशों के अहंकार एवं दुनिया पर शासन करने की मंशा पर पानी फिरा है। हमारा भविष्य सितारों पर नहीं, जमीन पर निर्भर है, वह हमारा दिलों में छिपा हुआ है, दूसरे शब्दों में कहें तो हमारा कल्याण अन्तरिक्ष की उड़ानों, युद्ध, आतंक एवं शस्त्रों में नहीं, पृथ्वी पर आपसी सहयोग, शांति, सह-जीवन एवं सद्भावना में निहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम का मंत्र इसलिये सारी दुनिया को भा रहा है। इसलिये बदलती हुई दुनिया में, बदलते हुए राजनैतिक हालात में सारे देश एक साथ जुड़ना चाहते हैं। ब्रिक्स का संगठन ऐसा सपना है जिसे भारत रत्न स्व. प्रणव मुखर्जी ने भारत के विदेश मन्त्री के तौर पर 2006 में देखा था। प्रणव दा बदलते विश्व शक्ति क्रम में उदीयमान आर्थिक शक्तियों की समुचित व जायज सहभागिता के प्रबल समर्थक थे और पुराने पड़ते राष्ट्रसंघ के आधारभूत ढांचे में रचनात्मक बदलाव भी चाहते थे। इसके साथ ही वह बहुध्रुवीय विश्व के भी जबर्दस्त पक्षधर थे जिससे विश्व का सकल विकास न्यायसंगत एवं लोकतांत्रिक तरीके से हो सके। अब नरेन्द्र मोदी ने इसमें सराहनीय भूमिका निभाई है। उनके दूरगामी एवं सूझबूझ भरे सुझावों का ब्रिक्स देशों ने लोहा माना है। ब्रिक्स संगठन में भारत का वर्चस्व चीन की तुलना में बढ़ा है जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता एवं कूटनीति का परिणाम है।

कर्ज का जालः सहूलियत से त्रासदी तक की यात्रा

डॉ. शिवम भारद्वाज

कर्ज के बोझ तले किसी व्यक्ति का स्वयं अथवा परिवार समेत आत्महत्या कर लेने की खबरें पढ़कर मन सिहर उठता है, परंतु अब ऐसी घटनाएं चौंकाती नहीं हैं। त्रासद केवल यह नहीं कि लोग आत्महत्या कर रहे हैं, बल्कि यह भी है कि समाज ने इसे लगभग स्वीकार कर लिया है- एक सामान्य विफलता के रूप में। ऐसी घटनाएं इतनी नियमितता से सामने आ रही हैं कि हमारी सामूहिक स्मृति से बाहर होती जा रही हैं। एक समय कर्ज केवल आर्थिक निर्णय होता था- खेती, मकान, कारोबार या बच्चों की पढ़ाई के लिए लिया गया एक सोचा-समझा कदम। लेकिन अब वह सहूलियत के नाम पर हर जेब में मौजूद है- क्रेडिट कार्ड, ईएमआई, %बाय नाउ-पे लेटर ऐप्स, और आकर्षक ऑफर में लिपटे आसान कर्ज। यह सहूलियत पहले सुविधा लगती है, फिर आदत बनती है, और कई बार जानलेवा हो जाती है। तमाम परिवार के लिए हर महीने की शुरुआत अब महीने की आमदनी और तमाम किस्तों के जाने की गणना वाले तनाव के बीच फंसी होती है। स्कूल की फीस, बच्चों के सपनों का दबाव, बीमारियों के इलाज का खर्च, त्योहारों की खरीदारी, और उसके ऊपर समाज की अनकही अपेक्षाएं—ये सभी मिलकर ऐसा मनोवैज्ञानिक और आर्थिक तनाव पैदा करते हैं जहां आमदनी बार-बार नाकाफी साबित होती है। ऐसे में कर्ज एक समाधान की तरह सामने आता है, लेकिन यही समाधान धीरे-धीरे सबसे बड़ी समस्या बन जाता है। सुविधा और समाधान के नाम पर आया कर्ज अब मानसिक और सामाजिक कैद का रूप ले लेता है- जहां दिखावे की दौड़, सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ और आत्म-सम्मान की दबी चीखें व्यक्ति को भीतर से तोड़ने लगती हैं। आज कर्ज की आदत सिर्फ खरीदारी या सामाजिक प्रदर्शन तक सीमित नहीं रह गई है। तेजी से पैसा बढ़ाने की लालसा भी लोगों को ऐसे जोखिमपूर्ण रास्तों पर ले जा रही है, जहां वे अपनी मेहनत की कमाई को बिना पूरी जानकारी और समझ के दांव पर लगा देते हैं। स्टॉक मार्केट, क्रिप्टोकरेंसी, कमोडिटी ट्रेडिंग (जैसे एमसीएक्स) और हाल के वर्षों में उभरे अनेक निवेश ऐप- ये सब अब महज निवेश के माध्यम नहीं रहे, बल्कि एक नई लाइफस्टाइल और ट्रेंड का हिस्सा बन चुके हैं। सोशल मीडिया पर दिखती सफलताओं की चमक और जल्दी अमीर बनने का सपना आम लोगों को आकर्षित करता है, पर जब बिना समझे लिए गए निर्णय घाटे में बदलते हैं, तो केवल पैसा नहीं, मानसिक संतुलन भी डगमगा जाता है। नुकसान की भरपाई के लिए फिर से कर्ज लिया जाता है और व्यक्ति एक अंतहीन चक्र में फंस जाता है- जहां केवल थकान, तनाव और निराशा शेष रह जाती है। दरअसल, बात केवल आर्थिक तंगी की नहीं है, बल्कि उस मानसिक स्थिति की है जिसमें व्यक्ति को यह महसूस होता है अथवा महसूस कराया जाता है कि बिना अपडेटेड जीवनशैली के उसकी सामाजिक पहचान अधूरी है। जैसे कि बच्चों का स्कूल एक शैक्षणिक विकल्प नहीं, स्टेटस सिंबल है। शादी-ब्याह और त्योहार अब केवल सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि ऋण प्रायोजित सामाजिक प्रदर्शन बन चुके हैं। जब दिखावा जरूरत बन जाता है, तो खर्च स्वाभाविक रूप से आमदनी से आगे निकल जाता है, और फिर आता है कर्ज, जो खुद को सहारा बताकर दरवाजे पर खड़ा मिलता है- प्री-अप्रूव्ड लिमिट , जीरो डाउन पेमेंट , और कुछ घंटों में ट्रांसफर होने वाले डिजिटल लोन आदि जैसे कई विकल्पों के रूप में। ये विकल्प पहली नजर में सहूलियत लगते हैं, लेकिन असल में वे मानसिक जाल हैं जिनमें व्यक्ति फंसता चला जाता है। और जब किश्तें देना मुश्किल हो जाता है, तो केवल बजट नहीं, आत्म-सम्मान, मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक संतुलन भी दरकने लगते हैं। अंततः यह त्रासदी जन्म लेती है- जब व्यक्ति अकेलेपन, शर्म और सामाजिक तुलना के बीच घिरकर कोई भी कठोर कदम उठाने को विवश हो जाता है। दुखद केवल यह नहीं कि लोग आत्महत्या कर रहे हैं। उससे भी अधिक दुखद यह है कि समाज ने इसे %निजी विफलता% मानकर किनारे कर दिया है। लेकिन यह एक गहरी प्रणालीगत असफलता है- एक ऐसा सामाजिक ढांचा, जो बार-बार व्यक्ति से कहता है- %और बेहतर दिखो, और आगे बढ़ो%, चाहे वह भीतर से टूटता ही क्यों न जाए। विडंबना यह है कि सादगी को %कमजोरी% और दिखावे को %सफलता% का पैमाना बनाया जाने लगा है। सामर्थ्य से ऊपर जाने पर ढूंढे जाते हैं आसान ऋण के विकल्प। ऐसे में जब ऋण के नाम पर शोषण की संभावनाएं खुली हों, तो पूरी जिम्मेदारी सिर्फ एक व्यक्ति की विवेकशीलता पर डालना उचित नहीं। फिलहाल इसका कोई तात्कालिक समाधान नहीं है, लेकिन शुरुआत इस स्वीकारोक्ति से हो सकती है कि कर्ज की समस्या अब वित्तीय नहीं रही- यह सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य का प्रश्न बन चुकी है। हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि दिखावे की यह दौड़ कई लोगों को धीरे-धीरे ऐसे निर्णयों की ओर धकेल रही है, जिनसे वापस लौटना कठिन होता है। किसी व्यक्ति की इज्जत उसके खर्च से नहीं, उसकी सादगी और संतुलन से बनती है। हर व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि जो खर्च वह कर रहा है, वह वाकई जरूरत है या सामाजिक भय का परिणाम जोकि उसके जीवन में जहर घोल रहा है।

श्यामा प्रसाद मुखर्जीः राष्ट्र के चरमोत्कर्ष की यज्ञवेदी पर प्राणोत्सर्ग

हेमेन्द्र क्षीरसागर

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ऐसे महान देशभक्त थे जिन्होंने राष्ट्र के चरमोत्कर्ष, एकता और अखण्डता की यज्ञवेदी पर अपना प्राणोत्सर्ग कर दिया। वह एक साथ ही शिक्षाविद्, लेखक, सासंद, राजनीतिज्ञ और मानवतावादी कट्टर देशभक्त थे। इन्होंने विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की और शीध्र ही एक प्रख्यात शिक्षाविद् और प्रशासक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। उनकी इस उपलब्धि को मान्यता उस समय प्राप्त हुई जब 1934 में कलकत्ता विश्विद्यालय के कुलपति नियुक्त होने वालों में वह सबसे कम आयु के थे। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी स्वतंत्र भारत के निर्माताओं में से थे। उनका जन्म 6 जुलाई 1901 को हुआ था। वे उन नेताओं में से थे, जो खुद आगे आकर जोखिम झेलते हैं। उनके लिए भारत प्रथम था और भारत की अखण्डता और वैभव ही प्रमुख लक्ष्य। जान दे दी, पर कश्मीर जाने नहीं दिया। मंत्रीमंडल को ठोकर मार दी, लेकिन सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। हॉ, मैं हिन्दू हूँ इस देश का राष्ट्रत्व हिन्दू हैं। यह अटल सत्य हैं, पर इसका अर्थ यह नहीं कि हिन्दू किसी दूसरे मजहब या उपासना पद्धति के विरूद्ध हैं। ऐसा होता तो इतिहास ही कुछ और होता। कश्मीर हर हिन्दुस्तानी का हैं। हर दिल में कश्मीर के लिए दर्द उठना चाहिए जो हनीफुद्दीन और अजय आहूजा के दिलों में उठा। डॉ. मुखर्जी ने अपने जीवन और अपने बलिदान, दोनों से ही इस देश को प्राण दिए। उनके लिए भारतीय होने का अर्थ राजनीति के कपट जाल में फॅसना नहीं, वरन् उस कपट जाल को तोडना था। बहुत कम लोगों को यह जानकारी होगी कि आज जो पंजाब और बंगाल का हिस्सा भारत में दिखता हैं, उसके पीछे डॉ. श्यामाप्रसाद मुखजी का जुझारूपन और आंदोलन मुख्य कारण रहे हैं। डॉ. मुखर्जी के वह शब्द इतिहास में प्रसिद्ध हैं, जब उन्होंने कहा था, 'कांग्रेस ने हिन्दुस्तान का बॅटवारा किया और मैंने पाकिस्तान का।' इस देश का दुर्भाग्य रहा कि स्वतंत्र, किन्तु खंडित भारत की कमान उस व्यक्ति के हाथों में सौंपी गई, जिसे भारतीयता किवां हिन्दुत्व से चिढ थी और स्वयं को देश का अंतिम ब्रिटिश शासक कहलाने में गर्व का अनुभव करता था। श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने देखा कि विभाजन की भीषण त्रासदी झेलकर जो हिन्दु भारत पहुँच रहे हैं और जो पाकिस्तान में रह गए हैं, उनके प्रति पंडित नेहरू बेहद उपेक्षपूर्ण और बहुत हदतक निर्मम नीति अपना रहे हैं। इस बिन्दु पर सरदार पटेल और पं. नेहरू में गम्भीर मतभेद पैदा हो गए थे। सरदार पटेल तो यहॉ तक चाहते थे कि पूर्वी पाकिस्तान से कुछ जमीन ले लेनी चाहिए। भले ही इसके लिए सशस्त्र पुलिस कार्यवाही ही क्यों न करनी पडे पं. नेहरू ने लियाकत अली से समझौताकर हिन्दुओं के भविष्य को पूरी तरह पाकिस्तानी दरिन्दों के हाथों में छोड दिया। यह देखकर डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी आगबबूला हो उठे और उन्होंने उद्योग तथा आपूर्ति मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया। अपना त्यागपत्र देते समय उन्होंने इसके पीछे के कारणों का विस्तार से उल्लेख किया जो आज भी ऐतिहासिक तथा प्रेरणप्रद एक दस्तावेज के रूप में माना जाता हैं। संकल्पित, मंत्रीमण्डल से त्यागपत्र देने के बाद डॉ. मुखर्जी ने संसद में प्रतिपक्ष की भूमिका निभाने का निश्चय किया। लेकिन वह जल्दी ही समझ गए कि प्रतिपक्ष की प्रभावी भूमिका निभाने के लिए संगठित पार्टी बनाना जरूरी हैं। इसी उद्देश्य से वह प्रतिपक्ष के राजनीतिक मंच के गठन की संभावनाओं को तलाशने की ओर अग्रसर हुए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी किसी सशक्त व्यक्तित्व के नेतृत्व में राजनीतिक दल प्रारंभ किए जाने की जरूरत महसूस कर रहा था। डॉ. मुखर्जी और स्वयंसेवक संघ दोनों ही जिस बात की आवश्यकता अनुभव कर रहे थे। वह समान थी और इसी में से अक्टूबर, 1951 में भारतीय जनसंघ का उद्भव हुआ जिसके संस्थापक अध्यक्ष डॉ. मुखर्जी थे। डॉ. मुखर्जी को अपने जीवन में बडी चुनौती का समना दो वर्ष बाद 1953 में करना पडा। जम्मू और कश्मीर में शेख अब्दुल्ला की पृथकतावादी राजनीतिक गतिविधियों से उभरी अलगाववादी प्रवृत्यिां 1952 तक बल

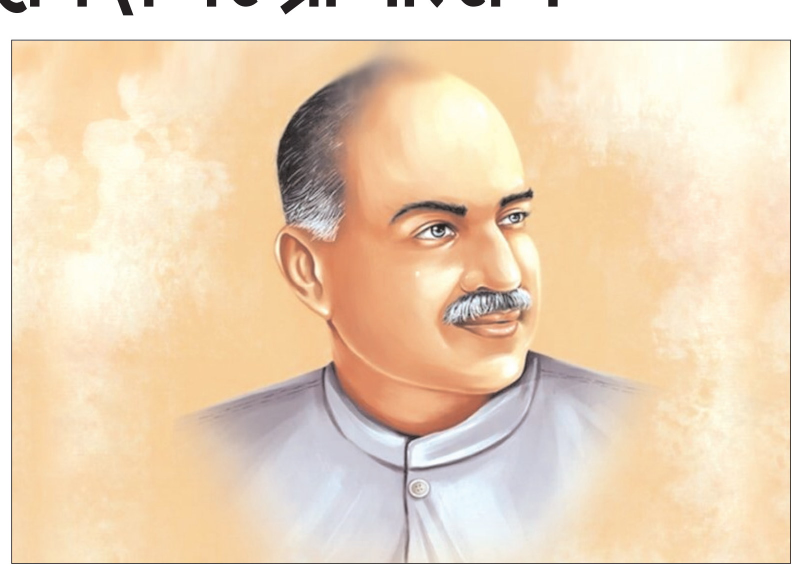

पकडने लगी थीं, जिससे राष्ट्रीय मानस विक्षुब्ध हो उठा। डॉ. मुखर्जी ने प्रजा परिषद् के सत्याग्रह को पूर्ण दिया जिसका उद्देष्य जम्मू कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना था। उस समय जम्मू कश्मीर का अलग झण्डा था, अलग संविधान था और वहां का मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री कहलाता था। डॉ. मुखर्जी ने जोरदार नारा बुलन्द किया थाः '' एक देश में दो निशान, एक देश में दो प्रधान, एक देश में दो विधान, नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे। अगस्त 1952 में जम्मू की विशाल रैली में उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त कियाः या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊंगा या फिर उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर दूंगा।'' अपने संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने नई दिल्ली में नेहरू सरकार और श्रीनगर में शेख अब्दुला की सरकार को चुनौती देने का निश्चय किया और पं. नेहरू से कहा कि वे जम्मू जरूर जाएंगे और बिना 'परमिट' के जाएंगे। बलिवेदी, 11 मई को रावी पर करते समय ही लखनपुर में डॉ. मुखर्जी को गिरफ्तार कर श्रीनगर जेल ले जाया गया। 40 दिन तक न उन्हें चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई और न अन्य बुनियादी सुविधाएं दी गई। भारत का यह शेर श्रीनगर की जेल में रहस्यमय परिस्थितियों में 23 जून 1953 को चिरनिद्रा में सोया गया। श्रद्धांजलि स्वरूप नरेंद्र मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर को अनुच्छेद 370 और 35 ए द्वारा दिए गए विशेष दर्जे को हटाने के लिए संसद ने 5 अगस्त, 2019 को मंजूरी दी। यह ऐतिहासिक भूल को ठीक करने वाला ऐतिहासिक कदम था।

अंतरिक्ष में अनुसंधान से मानवता हेतु नई उम्मीदें

सुरेश सेठ

सुखद है कि 41 वर्ष के बाद किसी भारतीय अंतरिक्ष यात्री ने न केवल अपने साथियों के साथ अंतरिक्ष में कदम रखा बल्कि डॉकिंग की नई उपलब्धि के साथ उसने वहां स्थित अंतरिक्ष स्टेशन में भी प्रवेश कर लिया। वे पहले भारतीय थे जिन्होंने न केवल 14 दिन के लिये इस स्टेशन में कदम रख लिया बल्कि दुनिया को भारत की ओर से वसुधैव कुटुम्बकम का एक संदेश भी मिला। शुभांशु 140 करोड़ भारतीयों की उम्मीद ही नहीं, जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, बल्कि वे एक नई दुनिया और एक नया भारत बनाने के लिए कुछ विशेष शोध अभियान पर भी हैं। बेशक यह सपना निजी निवेशकों की भागीदारी के साथ देखा जा रहा है और उत्सुक साहसी पर्यटक इस सपने के पूरा होने की उम्मीद कर रहे हैं। अब सोचा जा रहा है कि वैज्ञानिक उपलब्धियों के इस निर्देश के साथ पर्यटन का एक नया क्षेत्र अंतरिक्ष में भी खोल दिया जाए। यह वैश्विक कमाई का एक बड़ा साधन बनेगा और क्योंकि भारत उपग्रहों के प्रक्षेपण में तो सफलता हासिल कर ही चुका है और तीसरी दुनिया के छोटे देशों के लिए संचार उपग्रह प्रक्षेपण कर रहा है। इसलिए अब वह अंतरिक्ष पर्यटन का मार्ग निर्देशक बन सकेगा। इस प्रकार अपने लिए कमाई का एक और उपयोगी मैदान खोल लेगा जहां निवेशकों को इस साहसिक अभियान को शुरू करने की हिम्मत के कारण अधिक प्रतिदान मिल सकेगा। लेकिन इससे भी अधिक इस अंतरिक्ष स्टेशन में हमारे यात्रियों के प्रवेश के बाद जिन उपलब्धियों की उम्मीद की जा रही है उसमें से मानवता के लिए महामारी बन रही बीमारियों के उपचार के लिए रास्ता खुलने की उम्मीद है। ये बीमारियां हैं मधुमेह और कैंसर। इस शोध का एक लक्ष्य पृथ्वी पर मधुमेह के नियंत्रण में मदद करना है। दूसरी तेजी से फैलती बीमारी है कैंसर। अभी इस कैंसर का उपचार बहुत खर्चीला है। यह शुभ सूचना है कि शुभांशु शुक्ला और उनके साथी शिन पर रवाना होने के बाद 14 दिनों तक इन बीमारियों के चिकित्सा प्रयोगों का हिस्सा बनेंगे। अंतरिक्ष यात्रियों में से एक अंतरिक्ष में अपने पूरे प्रवास के दौरान निरंतर ग्लूकोज मीटर पहने रहेगा और वास्तविक समय के रक्त शर्करा माप की निगरानी पृथ्वी पर अनुसंधान करके की जाएगी। उड़ान के दौरान इसके नमूने इकट्ठे होंगे और सही उपचार के परीक्षण किए जाएंगे। जो सफल होगा, उसी से अब अंतरिक्ष के सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से रोगों का इलाज होगा। अंतरिक्ष उड़ानों से जोड़ों और रक्त प्रवाह पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच होगी। आसान शब्दों में कहें तो इसका अर्थ यह कि आर्थराइटिस या जोड़ों की बीमारियों का क्या कोई हल अंतरिक्ष का यह शोध हमें दे सकता है? कैंसर का अध्ययन भी यहां विशेष रूप से किया जा सकता है। समझा जाता है कि कैंसर की कोशिकाएं सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण में आसानी से पुनर्जीवित हो सकती हैं। अगर ऐसा है तो ये स्टैम कोशिकाएं और इनका पुनर्जीवन आदमी की उम्र बढ़ाने को कैसे प्रभावित कर सकता है, इसका अध्ययन भी होगा। यह अध्ययन स्टैनफोर्ड स्टैम सैल इस्टीट्यूट और जेएम फाउंडेशन की मदद से किए जाएंगे। निस्संदेह, अगर इस अभियान में इस प्रकार कैंसर निदान की कोई बेहतर दवा या उपचार विकसित करने में सफलता मिल जाती है तो यह मानवता के लिये अच्छी खबर होगी। फिर 14 दिन तक हमारे ये सभी यात्री कम्प्यूटर स्क्रीन का ही निरंतर प्रयोग करेंगे। इससे यह भी पता चल जाएगा कि इसका शारीरिक और हमारी संज्ञा पर क्या प्रभाव पड़ता है। आमतौर पर कहा जाता है कि कम्प्यूटर के निरंतर इस्तेमाल से तेजी से आंखों की हरकतें प्रभावित होती है। इसलिए इस शोध को मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी माना जा रहा है। अब नहीं कहते कि इन सभी समस्याओं का पूरा-पूरा हल हम इसी यात्रा या शोध अभियान में ले आएंगे लेकिन एक सही शुरुआत तो हो गई। प्रायः किसी वैज्ञानिक शोध में कदम दर कदम सफलता हासिल की जाती है। इस बार क्योंकि इस शोध अभियान का एक भाग मानवीय चिकित्सा और हमारी दुरूह बीमारयों के इलाज के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए इस अभियान का महत्व और भी बढ़ जाता है।

पीतांबरा पीठ मंदिर के आस-पास के अतिक्रमण कारियों को नगर पालिका ने थमाए नोटिस

अतिक्रमण न हटाने पर प्रतिदिन लगेगा एक हजार रुपए का अर्थदंड

दतिया। कलेक्टर स्वप्निल वानखेड़ के निर्देश पर श्री पीतांबरा पीठ मंदिर के आस-पास से अतिक्रमण हटाने की कबायद नगर पालिका द्वारा प्रारंभ कर दी गई है। नगर पालिका ने मंदिर के पास मैन रोड पर फूल मालाएं, प्रसाद वितरण काउंटर सजाने वालों एवं दुकानों के बाहर फुटपाथ पर भारी भरकम सामान रखने वालों को नोटिस थमाए गए। उल्लेखनीय है कि शनिवार को श्री पीतांबरा पीठ मंदिर पर आने वाले श्रद्धालुओं को जाम से छुटकारा दिलाने की कबायद प्रशासन द्वारा की जा रही है। नगर पालिका ने दुकानदारों को नोटिस देकर अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए। अतिक्रमण करने वालों को चेतावनी दी गई है कि नोटिस के बाद भी अतिक्रमण किए पाए जाने पर हर दिन लगेगा एक हजार रुपए का जुर्माना। स्वच्छता प्रभारी रहीश कुरैशी ने टीम सहित दुकानदारों के पास जाकर दिए नोटिस। विगत शनिवार को कलेक्टर स्वप्निल वानखड़े ने दिए थे अतिक्रमण पर कार्रवाई करने के निर्देश। अब देखना यह है कि प्रशासन की यह कार्यवाई नोटिस दिए जाने तक ही रहती है या हकीकत में राजगढ चौराहे से लेकर बम-बम महादेव मंदिर तक का सड़क के दोनों ओर का रास्ता साफ होता है। जिला प्रशासन को सीतासागर की दीवार किनारे खड़ होने वाले चार पहिया वाहन जो किराये पर संचालित करने के लिए दिन भर अतिक्रमण कर खड़ रहते हैं इनको भी सख्ती के साथ हटाना चाहिए क्योंकि इन वाहनों से भी आवागमन वाधित होता है।

भारतीय मजदूर संघ का परिचय वर्ग कार्यक्रम आयोजित

दतिया। रविवार को बुंदेला कॉलोनी स्थित सरस्वती विद्यापीठ विद्यालय में भारतीय मजदूर संघ के 70 वर्ष पूर्ण होने पर जिला स्तर पर भारतीय मजदूर संघ का परिचय वर्ग कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रांतीय कार्य समिति सदस्य अरविंद मिश्रा उपस्थित रहे। इस अवसर पर बीएमएस कार्यकारिणी सदस्य एवं बीएमएस के सभी अनुसांगिक संगठन के सभी पदाधिकारी आदि उपस्थित रहे। दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक चले कार्यक्रम में पदाधिकारियो व सदस्यों से ब्यक्तिगत परिचय प्राप्त कर उनके कार्य करने व संगठन के विकास पर बिस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम का संचालन अमित उचाड़िया एवं आभार जिलाध्यक्ष श्रीमती विमलेश वंशकार ने व्यक्त किया। इस अवसर पर शैलेंद्र यादव, मनोज निचरले, मदन बौद्ध, विनय साहू, भारत सोनी, संजय श्रीवास्तव, रेखा नामदेव, परीक्षा यादव, महिपाल सिंह गुर्जर, वीरेंद्र इंदौलिया, सुरेश कुमार श्रीवास्तव, अजय सविता, तरुण वर्मा एवं रोहित गुर्जर आदि उपस्थित रहे।

बंधन लाइफ ने लॉन्च किया आईइन्कम वेल्थ

समय जगत, भोपाल। बंधन ग्रुप की जीवन बीमा कंपनी, बंधन लाइफ इंश्योरेंस ने आज बंधन लाइफ आईइन्कम वेल्थ प्लान लॉन्च किया। यह प्लान प्रीमियम भुगतान के 5 से 7 कार्यदिवस के भीतर तुरंत आय देना शुरू करता है और उम्र 100 साल तक जीवन कवर प्रदान करता है। इस आय में गारंटीड भुगतान के साथ-साथ संभावित कैश बोनस शामिल होते हैं। इस प्लान की एक प्रमुख विशेषता है %सिक्योर पॉलिसी बेनिफिट, जिसके तहत यदि पॉलिसी अवधि के दौरान पॉलिसीधारक के साथ कोई अनहोनी हो जाती है, तो परिवार को एकमुश्त राशि मिलती है और आगे की प्रीमियम भुगतान की जरूरत नहीं होती, इसके बावजूद परिवार को आय और मैच्योरिटी बेनिफिट मिलते रहते हैं। सिर्फ तीन महीने की न्यूनतम प्रवेश आयु के साथ, माता-पिता और गार्जियन्स बंधन लाइफ आईइन्कम वेल्थ का उपयोग करके अपने बच्चों के लिए बचपन से ही वित्तीय व्यवस्था करना शुरू कर सकते हैं, जो शिक्षा, विवाह या पहला घर जैसी बड़ी जरूरतों के लिए मददगार हो सकती है। यह पार्टिसिपेटिंग जीवन बीमा प्लान कई प्रकार के पेआउट विकल्प प्रदान करता है और महिला पॉलिसीधारकों को 1.5 प्रतिशत अतिरिक्त आय का लाभ भी देता है। बंधन लाइफ इंश्योरेंस के एमडी और सीईओ सतीश्वर बी. ने इस नवाचार के महत्व पर जोर दिया और कहा, बंधन लाइफ में हम अपने ग्राहकों की असल जिंदगी की वित्तीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत में कई लोग तनख्वाह दर तनख्वाह पर जीते हैं, अक्सर बिना किसी वित्तीय सुरक्षा के जिस पर वे भरोसा कर सकें। कई लोगों को मासिक खर्चों का प्रबंधन करने के लिए भी उधार लेना पड़ता है। नौकरी छूटने या मेडिकल इमरजेंसी से परिवार वित्तीय संकट में पड़ सकता है। आईइन्कम वेल्थ इसी जरूरत को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। बंधन लाइफ आईइन्कम वेल्थ सिर्फ एक पॉलिसी नहीं है, बल्कि एक ऐसा वित्तीय समाधान है, जो न सिर्फ जीवन भर चलने वाला लाइफ कवर देता है, बल्कि तत्काल अतिरिक्त आय भी प्रदान करता है। चाहे रोज़मर्रा के खर्चों के लिए इस्तेमाल किया जाए या बड़े सपनों के लिए बचत की जाए, यह अतिरिक्त इन्कम हमारे ग्राहकों को सम्मान और आत्मविश्वास के साथ जीने में सक्षम बनाती है। बंधन लाइफ आईइन्कम वेल्थ को जीवन के हर चरण में ग्राहकों की सहायता के लिए सोच-समझकर डिज़ाइन किया गया है, जो 100 वर्ष की आयु तक जीवन बीमा देता है। यदि पॉलिसीधारक का निधन हो जाता है, तो परिवार को भुगतान किए गए कुल प्रीमियम का कम से कम 105 प्रतिशत मिलता है, जिससे उन्हें लंबे समय तक आर्थिक सहयोग मिलता है।

भाजपा जिला अध्यक्ष ने प्राणपुर स्थित दुर्गम घाटी पर सड़क मार्ग को सुधारने और वैकल्पिक मार्ग बनाने ष्टस्बऔर केंद्रीय मंत्री को लिखा पत्र

चंदेरी। चंदेरी क्षेत्र की समस्याओं के लिए हमेशा ही जनता के साथ खड़े रहने वाले भाजपा जिला अध्यक्ष आलोक तिवारी ने एक पहल की है जिसकी दिन भर सोशल मीडिया पर लोगों ने तारीफ की और कहा की हमें गर्भ है की इस गंभीर समस्या के लिए कोई नेता सामने आया। दरअसल बीते दिनों प्राणपुर पर आए दिन सड़क हादसे बढ़ते जा रहे थे। जिसको लेकर भाजपा जिला अध्यक्ष आलोक तिवारी ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव और केंद्रीय मंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद ज्योतिराज सिंधिया को एक पत्र भेजा है जिसमें उन्होंने अपने भेजे हुए पत्र में बताया कि चंदेरी विधानसभा में अंतराज्यीय मार्ग पर प्राणपुर की दुर्गम घाटी स्थित है जो कि मध्य प्रदेश और उत्तरप्रदेश की सीमा को जोड़ती है यह घाटी बहुत ही दुर्गम है उक्त घाटी से वाहनों के आवागमन में काफी दिक्कतें होती हैं एवं बीते दिनों घाटी पर प्रतिदिन छोटे बड़े वाहन पलटते रहते हैं जिस कारण से जान माल की हानि भी होती है उन्होंने पत्र लिखकर उक्त घाटी का चौड़ीकरण व सुधार किए जाने की मांग की है साथ ही उन्होंने अपनी भेजे गए पत्र में अनुरोध किया कि नया कोई वैकल्पिक मार्ग का निर्माण करवाया जाए जिससे वाहनों को आवागमन की सुविधा हो। उन्होंने केंद्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर प्राणपुर घाटी के चौड़ीकरण कराने और नए वैकल्पिक मार्ग बनाए जाने की मांग की ताकि क्षेत्र में हो रही दुर्घटनाओं पर अंकुश लग सके।

समय-सीमा की साप्ताहिक बैठक में कलेक्टर ने की समीक्षा, अपर कलेक्टर भी रहे उपस्थित

समय जगत, शहडोल । कलेक्टर डॉ. केदार सिंह ने समय-सीमा की साप्ताहिक बैठक में विभागवार सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को संतुष्टि के साथ निराकरण दर्ज कराने के निर्देश दिए हैं। सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों के निराकरण हेतु मैदानी अमले को भी दायित्व सौंपे तथा जिला प्रमुख अधिकारी शिकायतो के निराकरण की स्थिति की मॉनीटरिंग करें। लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत समय-सीमा में दी जाने वाली सेवाओं का निराकरण समय-सीमा के भीतर अनिवार्य रूप से कर लिया जाए। कलेक्टर ने 06 जुलाई को जिले में हुई अतिवृष्टि से हुए नुकसान का संबंधित अधिकारियों से आकलन करने के निर्देश दिए। उन्होंने ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, लोक निर्माण विभाग, प्रधानमंत्री सड़क योजना, जल संसाधन विभाग सहित अन्य अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे जिले की सड़कों तथा पुल-पुलियों का निरीक्षण करें तथा जहां भी वर्षा के कारण संरचनाएं क्षतिग्रस्त हुई हैं, उनका आकलन कर प्रतिवेदन तैयार करें। बैठक में अपर कलेक्टर श्री सरोधन सिंह, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती अन्तोनिआ एक्का, भागीरथी लहरे सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

पेड़ लगाओ, जीवन पाओ, धरती को हरा-भरा बनाओ, धरती माता का श्रृंगार करने किया गया पौधरोपण

समय जगत, शहडोल । पेड़ लगाओ, जीवन पाओ, धरती को हरा-भरा बनाओ, प्रकृति को हरा-भरा बनाने व पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रेरणा एवं माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में एक पेड़ मॉ के नाम अभियान चलाया जा रहा है। पेड़ से हमे न केवल ऑक्सीजन मिलती बल्कि पेड़ो में पक्षियों का आवास भी होता है। पेड़-पौधे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। पेड़ पौधे वायुमंडल के तापमान को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाते है। यदि आज हम पौधो को रोपण नही करेंगे तो आने वाले समय में वायुमंडल का तापमान और अधिक बढता जाएगा, जो जीवन के लिए अत्यंत हानिकारक साबित होगा। हमें पर्यावरण के प्रति सचेत रहना होगा और पौधो का रोपण करने के लिए स्वयं जागरूक रहते हुए दूसरों को भी जागरूक करना होगा। एक पेड़ मॉ के नाम अभियान के तहत जनपद पंचायत जयसिंहनगर के ग्राम गंधिया में धरती माता का श्रृंगार करने के लिए पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यालय नगरपालिक निगम कटनी (म.प्र.)

क्रमांक/94 /रा.वि.ना.शा./2025 — कटनी दिनांक 04/07/2025

नामांतरण सूचना

आम जनता को सूचित किया जाता है कि म0प्र0 नगरपालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत निम्नलिखित भवनों पर नाम परिवर्तन हेतु आवेदन पत्र प्राप्त हुये है भवन के नाम परिवर्तन पर किसी को कोई आपत्ति हो तो इस सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अदर अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत करें। आपत्ति प्राप्त न होन की दशा मे मात्र कर वसूली हेतु करपजी मे नाम परिवर्तन की कार्याही की जावेगी।

क्र.	नाम हस्तांतरक	नाम हस्तांतरिती	नामांतरण का आधार	भवन क्रमांक एवं वार्ड का नाम
1	श्री धरमदास चौरसिया/श्री छोटेलाल चौरसिया	श्री कमल कुमार/श्री लक्ष्मीचंद जैन	रजिस्ट्री	119 बी.डी.अग्रवाल वार्ड
2	श्रीमति सरलादेवी/श्री जे.पी. मिश्रा	श्री दीपक मिश्रा/स्व.जगन्नाथ मिश्रा	रजि.वससीयतनामा मृत्यु प्रमाण पत्र	181 मदन मोहन चौबे वार्ड
3	श्रीमति राजकुमारी जायसवाल/स्व.राजेन्द्र कुमार जायसवाल	श्री नीरज कुमार, श्री पंकज कुमार जायसवाल दोनों के पिता स्व.राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल	मृत्यु प्रमाण पत्र शपथ पत्र	513 बाबू वंशरूप वार्ड
4	श्रीमति राजकुमारी जायसवाल/स्व.राजेन्द्र कुमार जायसवाल	श्री नीरज कुमार, श्री पंकज कुमार जायसवाल दोनों के पिता स्व.राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल	मृत्यु प्रमाण पत्र शपथ पत्र	527 बाबू वंशरूप वार्ड
5	श्री मेघराज खूबचंदानी/श्री गिरधारी लाल खूबचंदानी	श्री दर्शन कौर खुराना/श्री गुरूभेज सिंह खुराना	रजिस्ट्री	934 बाबू वंशरूप वार्ड
6	श्री मेघराज खूबचंदानी/श्री गिरधारी लाल खूबचंदानी	श्री दर्शन कौर खुराना/श्री गुरूभेज सिंह खुराना	रजिस्ट्री	978 बाबू वंशरूप वार्ड
7	श्री दिलीप कुमार/श्री श्यामसुन्दर मरहर द्विवेदी (ब्राहम्ण)	श्रीमति प्रिया बूलचंदानी/श्री अंशुल कुमार बूलचंदानी	रजिस्ट्री	693 फारेस्टर वार्ड
8	श्री ललित कुमार मित्तल/श्री सी.आर.मित्तल	श्रीमति हरजिन्दर कौर/श्री तेजिन्दर सिंह पंजवानी पुत्र श्री चतुर कौर/ श्री तेजिन्दर सिंह पंजवानी	रजिस्ट्री	281 के अंश भाग विश्राम बाबा वार्ड
9	शिवा बिल्डकॉन कटनी द्वारा पार्टनर श्री हीरानंद टहलरानी/श्री किशनचंद टहलरानी एवं श्री विकास गुप्ता/श्री गोपालचारी गुप्ता	श्रीमति विजय कुमार गुप्ता/श्री गोपालदास गुप्ता	रजिस्ट्री	141 के अंश भाग विश्राम बाबा वार्ड
10	मेसर्स शुभ बिल्डर्स कटनी द्वारा पार्टनर श्री हीराचंद/श्री किशनचंद एवं श्री विकास गुप्ता /श्री गोपालचारी गुप्ता, श्री हीरालाल/ श्री लालचंद गुप्ता, श्री श्यामलाल/श्री गोपाल वाधवानी	श्रीमति रजनी पाण्डेय/श्री रामबिहारी पाण्डेय	रजिस्ट्री	421 का अंश भाग रविन्द्रनाथ टैगोर वार्ड

राजस्व अधिकारी
नगरपालिक निगम कटनी

कार्यालय प्राचार्य सांदीपनि विद्यालय निवास जिला मण्डला

क्र./सां.वि./अ.शि./भर्ती/2025/1083 — निवास दिनांक 07.07.2025

अतिथि शिक्षक विज्ञापन

लोक शिक्षण संचालनालय म.प्र. भोपाल का पत्र क्र./अति.शि./2025–26/199 भोपाल दिनांक 26.06.2025 शैक्षणिक सत्र 2025–26 में रिक्त पदों के विरूद्ध अतिथि शिक्षकों की व्यवस्था के संबंध जी.एफ.एम.एस.पोर्टल के माध्यम से ऑनलाईन आवेदन किया जाना है। विषयावार रिक्त पदों की जानकारी निम्नानुसार हैः–

क्र.	विषय	वर्ग	रिक्त पद संख्या	शैक्षणिक योग्यता
1	भौतिकी	01	1	बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातकोत्तर
2	अग्रेजी	01	1	बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातकोत्तर
3	अंग्रेजी	02	3	डी.एड/बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातक
4	हिन्दी	02	2	डी.एड/बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातक
5	गणित	02	2	डी.एड/बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातक
6	विज्ञान	02	2	डी.एड/बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातक
7	संस्कृत	02	1	डी.एड/बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातक
8	सा.विज्ञान	02	1	डी.एड/बी.एड एवं संबंधित विषय में स्नातक
9	आर्ट एण्ड क्राफट	02	1	संबंधित विषय से उत्तीर्ण
10	नृत्य शिक्षक	03	1	संबंधित विषय से उत्तीर्ण
11	लैब शिक्षक	03	1	संबंधित विषय से उत्तीर्ण
12	आईटी शिक्षक	03	1	संबंधित विषय से उत्तीर्ण
13	पीटीआई/खेल शिक्षक	03	1	संबंधित विषय से उत्तीर्ण

प्राचार्य
सी.एम.राईज शास. मॉडल उ.मा.वि.
निवास जिला मण्डला

जाहिर सूचना

जाहिर सूचना के माध्यम से सूचित किया जाता है कि ट्रेक्टर क्रमांक MP47AG8773 जो कि स्व.अनोखीलाल कासदे के नाम से पंजिकृत है।अतः उक्त ट्रेक्टर को उनकी पत्नी सुनीता बाई कासदे पति स्व.अनोखीलाल कासदे के नाम स्वामित्व अंतरण करने हेतु जिला परिवहन कार्यालय हरदा में आवेदन प्रस्तुत किया है।अगर किसी को कोई आपत्ति हो तो मय दस्ताबेज के सूचना प्रकाशन से सात दिवस के अंदर आरटीओ कार्यालय हरदा में आपत्ति दर्ज करा सकते है।

सुनीता बाई कासदे पति स्व. अनोखीलाल कासदे वार्ड नंबर 2,पोस्ट मोरगढ़ी,तहसील खालवा,जिला खंडवा

नाम परिवर्तन

यह सर्व साधारण जानकारी के लिए है कि में दीपक कुर्मी पुत्र रामस्वरूव जाति कुर्मी निवासी ग्राम असोबर्री तहसील लटेरी जिला विदिशा पिन 464114 घोषणा करता हूं कि मेरा आधार कार्ड में मेरा नाम गलती से राजकुमार लिखा गया है, मेरा वास्तविक नाम दीपक कुर्मी है। जिसे तदनुसार संशोधित किया जा सकता है।

न्यायालय नायब तहसीलदार बैरागढ चीचली वृत्त कोलार भोपाल म.प्र.

प्रकरण क्रं. RS/444/0760/6241/2025

इश्तहार

आवेदक आर.बी.एस.चौहान आ./पत्नि स्व.एल.बी.एस. चौहान निवासी ग्राम दामखेडा कोलार रोड द्वारा ग्राम दामखेडा स्थित खसरा नंबर 81, 120, 124, 125 व अन्य क्षेत्रफल 1500 वर्गफुट.भूमि का बटवारा किये जाने का आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतएव आवेदक के उपरोक्त आवेदन के संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था को आपत्ति हो तो इस इश्तहार के जारी होने के दिनांक 22/07/2025 के भीतर इस न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। समयावधि पश्चात आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 07/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से जारी किया गया।

अति. तहसीलदार तहसील कोलार जिला भोपाल

नाम सुधार सूचना

मैं अंजली सोनी पति अजय कुमार सोनी निवासी अंबेडकर वार्ड पथरोली मोहल्ला करेली बस्ती तहसील करेली जिला नरसिंहपुर की निवासी हूं मैंने भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा नरसिंहपुर से पॉलिसी क्रमांक 356 732 782 दिनांक 9 मार्च 2013 को ली की थी जिसमें मेरे मायके का नाम लक्ष्मीबाई सोनी लिखा गया था शादी के बाद ससुराल में मेरा नाम अंजली सोनी पति अजय कुमार सोनी हो गया है लक्ष्मी बाई एवं अंजली सोनी दोनों मेरे ही नाम है जो मेरे परिचय पत्र आधार कार्ड बैंक पासबुक अंक सूची सहित सभी जगह दर्ज है अतः मेरा नाम अंजली सोनी पति अजय कुमार सोनी एल आई सी सहित सभी जगह लिखा पड़ा एवं जाना जाए जिस किसी भी व्यक्ति को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो वह विज्ञप्ति प्रकाशन तिथि से 15 दिवस के अंदर मुझे या सक्षम न्यायालय में अपनी आपत्ति साक्ष्य के साथ दर्ज करा सकता हैं।

दिनांक 8 अप्रैल 2025

अंजली सोनी पति अजय कुमार सोनी अंबेडकर वार्ड करेली बस्ती तह. करेली जिला नरसिंहपुर म.प्र.

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि वाद क्रमांक RCSA 595/2025 प्रमोद दुबे बनाम प्रणव भार्गव एवं शकुंतला भार्गव माननीय न्यायालय न्यायाधीश, वर्ग-12, सिविल न्यायाधीश वरिष्ठ वर्ग, सुश्री पलक राय, जिला एवं सत्र न्यायालय, भोपाल (म.प्र.) में विचाराधीन है। यह वाद खसरा नंबर 209/2 एवं 251, 252/312 के अंश भाग से संबंधित है, जो कुल क्षेत्रफल लगभग 0.037 हेक्टेयर (अर्थात् लगभग 4000 वर्गफीट) है। यह भूमि पटवारी हल्का नंबर 40, राजस्व निरीक्षक मंडल 4, विकासखंड-फंदा, नगर निगम सीमा, वार्ड क्रमांक 26, तहसील-हुजूर, भोपाल में स्थित है।

इस भूमि की चतुर्दिक सीमाएँ वर्ष 2023 की स्थिति के अनुसार निम्नानुसार हैं:-

पूर्व में भूखंड क्रमांक 9, पश्चिम में भूखंड क्रमांक 7, उत्तर में श्री नन्नूलाल की भूमि, दक्षिण में 20 फीट चौड़ी सड़क जो वर्तमान में अविकसित भूमि के रूप में विद्यमान है। उक्त भूमि मेरे पक्षकार प्रमोद दुबे पुत्र श्री कामता प्रसाद दुबे, निवासी L.I.G. 132-बी, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल द्वारा क्रय की गई थी एवं इसका विधिवत अनुबंध (Agreement) किया गया था। तथापि विक्रेताओं द्वारा यथासमय रजिस्ट्री (पंजीयन) न किए जाने के कारण मेरे पक्षकार द्वारा न्यायालय में विशिष्ट निवर्तन वाद (Suit for Specific Performance) प्रस्तुत किया गया है, जो अब भी विचाराधीन है।

अतः आमजन एवं संबंधित पक्षों को सूचित किया जाता है कि न्यायालय के निर्णय आने तक उपरोक्त भूमि से संबंधित किसी भी प्रकार का लेन-देन, क्रय-विक्रय अथवा अनुबंध करने से पूर्व पूर्ण सावधानी रखें। अन्यथा की स्थिति में क्रेता/संबंधित व्यक्ति स्वयं उत्तरदायी होंगे।

विस्मित मारन, एडवोकेट
पता-73/1, रातीबड़, नीलबड़ भोपाल म.प्र.
मो. 8260995500

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

सतलापुर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी मण्डीदीप जिला रायसेन में भूखण्ड / भवन क्रमांक ई.डब्ल्यू.एस. 87 ए-सेक्टर मण्डल द्वारा श्री कृष्णाकान्त भट्ट आत्मज श्री तुकाराम भट्ट के नाम पर आवंटित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 09/09/1999 को उप पंजीयक कार्यालय औबेदुल्लागंज जिला रायसेन से पंजीकृत है। आवंटी द्वारा लीज नवीनीकरण दिनांक 01/08/2024 को उप पंजीयक कार्यालय में पंजीकृत करवा ली गई है। केता/विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्रीमती रानू चौरसिया पत्नी श्री गोविन्द चौरसिया के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय औबेदुल्लागंज जिला रायसेन द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 09/10/2024 को क्रेता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्रीमती रानू चौरसिया पत्नी श्री गोविन्द चौरसिया के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

लहारपुर बागमुगालिया हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल में भूखण्ड / भवन क्रमांक एल.आई.जी.-II/72 मण्डल द्वारा श्रीमती कुसुम चौधर पत्नी श्री दिनकर राव चौधर के नाम पर आवंटित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 24/05/2006 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। क्रेता/विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्रीमती कल्पना साहू पत्नी श्री लक्ष्मी नारायण साहू के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 28/03/2024 को क्रेता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्रीमती कल्पना साहू पत्नी श्री लक्ष्मी नारायण साहू के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

लहरपुर बाममुगालिया सिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल भूखण्ड / भवन क्रमांक एल.आई. जी.-I 161 मण्डल द्वारा श्रीमती शीतला सिंह पत्नी श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह के नाम पर आवंटित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 10/06/1999 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। श्रीमती शीतला सिंह पत्नी श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह (माता) की दिनांक 21/10/2021 एवं श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह आज श्री महेन्द्र प्रताप सिंह (पिता) की दिनांक 18/08/ 2022 को मृत्यु होने के उपरांत उनके पुत्रगण 1) श्री पवन सिंह 2) श्री प्रफुल्ल- सिंह 3) श्री प्रशान्त सिंह आत्मग स्व श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह के संयुक्त नाम पर नामान्तरण आदेश क. 474 दिनांक 18/12/2024 को नामान्तरित किया गया है। केता विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र शपथ-पत्र, संयुक्त समथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपति भी उत्तम कुमार मीना आत्मज श्री चेन सिंह मीना एवं श्रीमती रेखा मीना पत्नी श्री उत्तम कुमार मीना के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उपपंजीयक कार्यालय द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 02/03/2025 को केता के क्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर उक्त संपत्ति श्री उत्तम कुमार मीना आत्मज श्री चैन सिंह मीना एवं श्रीमती रेखा मीना पत्नी श्री उत्तम कुमार मीना के संयुक्त नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति उत्तराधिकारी या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत कर समयावधि के पश्चात कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं की जायेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

राजीव नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल में दुकान कं 07 (16 दुकानें) श्री सूर्यप्रकाश त्यागी आत्मज श्री वाय. के. त्यागी के एकल नाम पर नामांतरण आदेश क्रमाक 524 दिनांक 11/01/2025 के द्वारा नामांतरित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 08/10/2004 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत किया गया है। श्री सूर्यप्रकाश त्यागी के द्वारा उक्त संपत्ति विक्रय पत्र दिनांक 02/03/2025 के द्वारा नेशनल ट्रांसपोर्ट कोर्पोरेशन अधिकृत व्यक्ति श्री भानूप्रताप वर्मा आत्मज स्व. श्री महेन्द्र पाल सिंह एवं नेशनल ट्रांसपोर्ट कोर्पोरेशन अधिकृत व्यक्ति श्री ललित कुमार झा आत्मज स्व. श्री चन्द्र भूषण झा को विक्रय कर दिया गया है। अतः उक्त संपत्ति केता/विक्रेता द्वारा नेशनल ट्रांसपोर्ट कोर्पोरेशन अधिकृत व्यक्ति श्री भानुप्रताप वर्मा एवं नेशनल ट्रांसपोर्ट कोर्पोरेशन अधिकृत व्यक्ति श्री ललित कुमार झा के संयुक्त नाम से हस्तान्तरण करने हेतु दिनांक 20/06/2025 को ऑनलाईन आवेदन पत्र, परिचय पत्र सत्यापन प्रमाण पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र, एवं विकय पत्र की छायाप्रति प्रस्तुत किये गये है। भवन के हस्तांतरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर उक्त संपत्ति नेशनल ट्रांसपोर्ट कोर्पोरेशन अधिकृत व्यक्ति श्री भानुप्रताप वर्मा एवं नेशनल ट्रांसपोर्ट कोर्पोरेशन अधिकृत व्यक्ति श्री ललित कुमार झा के संयुक्त नाम से हस्तान्तरण करने हेतु प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

राजीव नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल में भवन क्रमांक एल.आई.जी-203 बी-सेक्टर श्रीमती सुषमा सैनी पत्नी श्री राजेश सैनी के नाम मण्डल हस्तांतरण आदेश क्रमांक 2427 दिनांक 18/07/2005 के द्वारा हस्तांतरित है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 07/12/2005 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत किया गया है। श्रीमती सुषमा सैनी के द्वारा उक्त भवन विक्रय पत्र दिनांक 26/05/2022 के द्वारा श्रीमती मुन्नी बघेल पत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश बघेल को विक्रय कर दिया गया है। अतः उक्त भवन केता/विक्रेता द्वारा श्रीमती मुन्नी बघेल पत्नि स्व. श्री ओमप्रकाश बघेल के नाम से हस्तान्तरण करने हेतु दिनांक 16/06/2025 को ऑनलाईन आवेदन पत्र, परिचय पत्र सत्यापन प्रमाण पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र, एवं विकय पत्र की छायाप्रति प्रस्तुत किये गये है। भवन के हस्तांतरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर उक्त संपत्ति श्रीमती मुन्नी बघेल पत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश बघेल के नाम हस्तान्तरण करने हेतु प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति/ उत्तराधिकारी/या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय नायब तहसीलदार संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

रा.प्र.क्रं.0439/अ-6/25-26

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 18/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय नायब तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम रूसल्ली, खसरा नंबर 9 क्षेत्रफल 1200 वर्गफिट, उस व्यक्तिा विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) रामदेव राय आ. जीवन राय निवासी भोपाल

आज दिनांक 17/02/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

आम सूचना

फ्लैट नं. नूबियर एम.आई.जी. डी-309, जिसका क्षेत्रफल 335.60 वर्गफिट है जो कि 'हाउसिंग बोर्ड कालोबी' नेहरू नगर, तहसील हुजूर, जिला भोपाल के संबंध मे

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पक्षकार श्री बक्शी सिंह बेलवाल पुत्र श्री बीर सिंह बेलवाल एवं श्रीमति तुलसी बेलवाल पत्नि श्री बक्शी सिंह बेलवाल के स्वत्व, स्वामित्व का फ्लैट नं. जूबियर एम.आई.जी. डी- 309, जिसका क्षेत्रफल 335.60 वर्गफिट है जो कि हाउसिंग बोर्ड कालोनी नेहरू नगर, तहसील हुजूर, जिला भोपाल मे स्थित है उक्त संपत्ति को मेरे पक्षकार द्वारा विक्रय किया जा रहा है। उक्त संपत्ति को मेरे पक्षकारगण ने श्री रंजीत गिरजे एवं श्रीमति सरोज गिरजे से पंजीकृत विक्रय पत्र के माध्यम से कय किया है जिसके पंजीयन का इंद्राज उप पंजीयक कार्यालय भोपाल मे दस्तावेज क्रमांक 6851, दिनांक 31.03.2011 मे दर्ज है एवं श्री रंजीत गिरजे एवं श्रीमति सरोज गिरजे ने उपरोक्त संपत्ति को कलीम उल्ला खान पुत्र श्री गरीब उल्ला खान से पंजीकृत विक्रय पत्र के माध्यम से क्रय किया है जिसके पंजीयन का इंद्राज उप पंजीयक कार्यालय भोपाल मे दस्तावेज क्रमांक 2738, दिनांक 29.12.1998 मे दर्ज है एवं कलीम उल्ला खान पुत्र श्री गरीब उल्ला खान ने उपरोक्त संपत्ति को मध्य प्रदेश गृह निर्माण मंडल भोपाल से पंजीकृत लीज डीड के माध्यम से प्राप्त किया है जिसके पंजीयन का इंद्राज उप पंजीयक कार्यालय भोपाल मे दस्तावेज क्रमांक 2231, दिनांक 17.11.1998 मे दर्ज है जो कि उपरोक्त संपत्ति की प्रथम लिंक डीड है उक्त उक्त संपत्ति की मूल डीड दिनांक 17.11.1998 कही गुम हो गई है तथा काफी प्रयास करने के उपरांत भी उक्त डीड की मूल कॉपी नही मिल पा रही है उक्त संपत्ति की मूल प्रति दिनांक 17.11.1998, जिस किसी को मिले वह मेरे कार्यालय मे उक्त दस्तावेज को प्रस्तुत करें एवं उक्त संपत्ति के संबंध मे किसी भी व्यक्ति, संस्था, बैंक, सरकारी व गैर सरकारी कार्यालय को कोई आपत्ति हो तो वह इस सूचना प्रकाशन के 7 दिवस के अंदर मेरे कार्यालय मे मय दस्तावेजो के आपत्ति प्रस्तुत करे एवं उपरोक्त डीड की मूल प्रति का कोई भी दुरूपयोग ना करें। यदि कोई भी उपरोक्त वर्णित संपत्ति की मूल रजिस्ट्री का दुरूपयोग करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जावेगी। एवं उसके परिणाम की संपूर्ण जबावदारी संबंधित व्यक्ति की रहेगी।

ROHIT YADAV ADVOCATE
Office:-56, C.I. Enclave
Chunabhatti, Kolar Road
Bhopal (MP) 462016
Mob. 9993020804

बजरंग दल सेवा सप्ताह अंतर्गत निःशुल्क चिकित्सा शिविर का हुआ आयोजन

डॉक्टरों की टीम ने महिलाओं ,पुरुषों वृद्धजनों सहित बच्चों का चेकअप कर दिए परामर्श

सिरोंज । विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के सेवा सप्ताह अंतर्गत तहसील रोड स्थित संस्कार गार्डन में निशुल्क स्वास्थ्य चिकित्सा कैंप का आयोजन किया जिसमें भोपाल के एल एन मेडिकल कॉलेज एवं जेके हॉस्पिटल के डॉक्टर के स्टाफ द्वारा बड़ी संख्या में पधारे महिला पुरुष बच्चे एवं वृद्ध जनों को बीमारी से संबंधित चेकअप कर परामर्श दिया साथ ही दवाइयां भी वितरित की गई इस कैंप में हड्डी रोग विशेषज्ञ, आंखों के विशेषज्ञ, सर्जरी विशेषज्ञ ,शुगर ,पीडिया ,मेडिसिन ई सी जी जैसी सुविधाओं से आम लोगों को परामर्श देकर दवाइयां भी दी गई भोपाल के जे के हॉस्पिटल से मेडिसिन के लिए डॉ शांतनु , जैनिक विशेषज्ञ डॉ आर्तिक, अर्थो विशेषज्ञ डॉ अंजली, आंखों के लिए डॉ नूपुर , पीडिया डॉ राजकुमार ,सर्जरी डॉ बिलाल सहित करीब 15 लोगों का स्टाफ उपस्थित रहा सोमवार को करीब 11ः00 बजे से प्रारंभ हुए शिविर का शुभारंभ विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के अधिकारियों एवं सभी डॉक्टरों के स्टाफ सहित भगवान श्री राम जी के चित्र पर फूल माल अर्पण दीपक प्रज्वलित कर शुभारंभ हुआ साथ ही संगठन के लोगों ने पधारे हुए डॉक्टर स्टाफ को राम नाम का पताका पहना कर स्वागत किया इस अवसर संगठन के अधिकारी बजरंग दल विभाग संयोजक सचिन यादव विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता प्रमुख , राकेश सक्सेना , बजरंग दल जिला संयोजक जगदीश शाक्य , जिला धर्म प्रसार प्रमुख अर्जुन शाक्य , जिला प्रिंट मीडिया प्रमुख प्रदीप राठौर , जिला सहसंयोजक मनजीत तिवारी अनिल राठौर , बसंती लाल कुशवाह , रमेश जैन अविनाश अग्रवाल तुलसीनारायण शाक्य अशोक साहू रोहित यादव नितेश गोस्वामी भानु सेन नरेंद्र नामदेव दिनेश सेन संजीव यादव अनिल कुशवाहा जगदीश पंथी सहित बड़ी संख्या में संगठन के कार्यकर्ता उपस्थित रहेलोग उपस्थि रहें

पुलिस ने हत्या मामले का किया खुलासा

समय जगत, रायसेन। बाड़ी कस्बे में हुई सनसनीखेज हत्या की वारदात को पुलिस ने महज 12 घंटे के भीतर सुलझाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। मृतक रजित ठाकुर की हत्या करने वाला कोई और नहीं, बल्कि एक विधि विरुद्ध बालक (नाबालिग) निकला, जो पूर्व में चोरी के मामले में भी संलिप्त रहा है। पुलिस अधीक्षक पंकज कुमार पाण्डेय के निर्देशन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपूसे व एसडीओपी अदिती बी. सक्सेना के मार्गदर्शन में, थाना प्रभारी राजेश तिवारी की अगुवाई में गठित टीम ने इस गंभीर अपराध का खुलासा किया। पुलिस जानकारी के अनुसार, फरियादी पप्पू आदिवासी ने 5 जुलाई की रात अपने बेटे रजित ठाकुर के लापता होने की सूचना पुलिस को दी थी। सुबह जब जानकारी मिली कि एमपी कान्वेंट स्कूल के पीछे सड़क पर युवक मृत अवस्था में पड़ा है, तो क्षेत्र में हड़कंप मच गया। मौके पर पहुंचे परिजनों व पुलिस को रजित के सिर, पेट और सीने पर धारदार हथियार से हमले के कई गंभीर घाव मिले। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए मामला दर्ज कर विभिन्न टीमों का गठन किया और मात्र 12 घंटे में आरोपी की पहचान कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपी ने अपराध स्वीकार करते हुए हत्या में उपयोग किए गए धारदार छुरे और मृतक का मोबाइल भी पुलिस को सौंपा। गिरफ्तार आरोपी विधि विरुद्ध बालक बाड़ी क्षेत्र का निवासी है, जिसके खिलाफ पूर्व में चोरी का प्रकरण भी दर्ज है। इस पूरे खुलासे में थाना प्रभारी राजेश तिवारी, उप निरीक्षक संजय यादव, सउनि. मोहन यादव, प्रआर. मोहनीश मिश्रा, जितेन्द्र सिंह, प्रदीप चौधरी, शिवशंकर चावड़े, आरक्षक देवेन्द्र सिंह, रामुसिंह, ललित शर्मा, मनोज टेकाम, सौरभ सहित नगर रक्षा समिति के सदस्य रानू प्रजापति, पवन ठाकुर, मंगल सिंह और दिनेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस की इस त्वरित कार्रवाई से बाड़ी क्षेत्र में आमजन के बीच राहत की भावना है और पुलिस की कार्यकुशलता की सराहना की जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

मोहर्रम पर निकली सवारी, अली हुसैन के नारों से गूंजा शहर

समय जगत, छापीहेड़ा । नगर में सोमवार को मोहर्रम पर अखाड़ा के साथ निकले जुलूस में मोहर्रम त्योहार पर हजरत हुसैन की शहादत की याद में निकले ताजिए मुस्लिम समाज जनों ने सोमवार को मातमी माहौल में ताजिया का . परंपरागत हथियारों के साथ मैं अखाड़े में इस अवसर पर बड़ी संख्या में मुस्लिम समाज महिला पुरुष बच्चे ताजिए के जुलूस में शामिल हुए चल समारोह नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए विसर्जन किया ।इस पूरे चल समारोह के दौरान पुलिस बल ने सहयोग प्रदान किया ।

ऑल इज़ वेल हॉस्पिटल बुरहानपुर में स्वास्थ्य शिविर का किया गया आयोजन

समय जगत, बुरहानपुर । बुरहानपुर के मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल ऑल इज़ वेल हॉस्पिटल बुरहानपुर द्वारा 6 जुलाई रविवार को ऑल इज़ वेल हॉस्पिटल बुरहानपुर में नि :शुल्क जनरल सर्जरी का स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया ।शिविर में 40 से अधिक मरीजों ने शिविर का लाभ उठाया ।शिविर में ऑल इज़ वेल हॉस्पिटल के चिकित्सक डॉ. गौरव सिंह परदेसी (एम. एस. सर्जरी) के द्वारा इस मौसम में होने वाली स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का परामर्श दिया गया । सभी मरीजों को मौसमी विकारों से बचने एवं सुरक्षित रखने की सलाह दी ।सभी मरीजों का निःशुल्क जनरल चेकअप, ब्लड प्रेशर एवं सोनोग्राफी की जाँच की गई ।ऑल इज़ वेल हॉस्पिटल के संचालक श्री कबीर चौकसे जी के दिशा निर्देशन में, एवं ऑल इज वेल हॉस्पिटल स्टाफ के सहयोग से स्वास्थ्य शिविर का सफल आयोजन किया गया ।

विश्व हिंदू परिषद- बजरंग दल की बैठक में आगामी कार्ययोजना पर हुई चर्चा

समय जगत, सिलवानी । विश्व हिन्दू परिषद्व बजरंग दल जिला बरेली सिलवानी प्रखंड की बैठक संपन्न हुई ।बैठक दो सत्रों में की गई ,जिसमें एक सत्र में महेश जी नामदेव प्रांतीय सदस्य नीरज जी जोशी जिला धर्मप्रसार प्रमुख ने ली दूसरे सत्र में जिला मंत्री बलवंत सिंह जी ठाकुर और जिला सह संयोजक राहुल जी नामदेव ने बैठक में आगामी कार्यक्रम की योजना की चर्चा हुई ।जिसमें प्रखंड समिति सम्मेलन, बाबा बूढ़ा अमरनाथ यात्रा , अखण्ड भारत संकल्प दिवस, एवं स्थापना दिवस के विषय पर योजना बनाई गई ।बैठक में प्रखंड संयोजक राघवेंद्र कुशवाहा प्रखंड अध्यक्ष अनिकेत पुरिया प्रखंड से सहसंयोजक सुशील जी सोनी प्रखंड सह मंत्री हरदयाल मेहरा नगर अध्यक्ष राजकुमार मेहरा विजय नामदेव विद्यार्थी प्रमुख लकी कुलकर्णी भविष्य साहू अर्जुन आर्य जितेन्द्र बंसल रिक्की मेहरा संदीप कुशवाह बिनित कुशवाह नितेश कुशवाह अंकेश ठाकुर पंबन ठाकुर आकाश एवं दुर्गावाहिनी से रिया सोनी को प्रखंड संयोजिका का दायित्व दिया गया ।

मातमी धुन में निकला मोहर्रम का जुलूस

समय जगत, सुठालिया । नगर में मुस्लिम समुदाय द्वारा हजरत इमाम हुसेन साहब की शहादत का पर्व मोहरर्म गत तीन दिनों से मनाया जा रहा था ।इस मौके पर शनिवार रात्रि व रविवार शाम के बाद सोमवार दोपहर स्थानीय गड़ी के पीछे स्थित चौकी पर से मातमी धुन में मोहर्रम निकाले गए जो नगर के मुख्य मार्गो श्री राम मंदिर चोक सदर बाजार गांधी चोक मेन मार्केट बस स्टेंड से ब्यावरा रोड होते हुए समीपस्थ पार्वती नदी पर कर्बला के लिए रवाना हुए । इस मौके पर स्थानीय नागरिकों ने ताजिये पर इत्र लोबान रेवड़ी अगरबत्ती प्रसाद चढ़ाकर इस्तकवाल किया ।इस दौरान बड़ी संख्या में ताजियो के जुलूस में मुस्लिम वर्ग की महिलाओ,पुरुषो,बच्चों ने उपस्थित दर्ज की ढोल ताशे के साथ मातमी धुन में या हुसैन के नारे लगाए इस दौरान महिलाए भी शामिल रही ।मोहर्रम के दौरान पुलिस व्यवस्था चाक चौबंद रही. तहसीलदार दोजी राम अहिरवार व थाना प्रभारी प्रवीण जाट रविवार रात्रि को अपने समूचे पुलिस दल बाल के साथ पूरे समय मौजूद रहे ।

समन्वित प्रयासों से हॉकी को पहुंचाएंगे बुलंदियों पर: शर्मा

समय जगत, इटारसी। पूर्व हॉकी कोच द्वारा खेल मैदान को राजनीति का मैदान बनाना निंदनीयहै मैं किसी भी कीमत पर खेल के मैदान को राजनीति का मैदान नहीं बनने दूंगा उक्त विचार विधायक एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉक्टर सीता शरण शर्मा ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा। पत्रकार वार्ता में डॉ शर्मा ने आरोप लगाया कि कम उम्र के बच्चों के आधार कार्ड बनाये गये, और बड़े बच्चों को खिलाया गया।अवैध हॉकी संघ की दादागिरी चल रही थी।जिला हॉकी संघ सचिव पद के से गुरयानी को जबलपुर संघ ने हटा दिया है।नकली संघ, हॉकी नर्मदापुरम बना है। जिसमे अध्यक्ष रज्जू तोमर को बनाया कोई अच्छा व्यक्ति को बनाया जाता,उन्हें बनाया जिन्होंने प्लाट पर कब्जा किया है। राजेंद्र सिंह तोमर वैध अध्यक्ष नही है। गुरयानी सचिव एवं कोच नही है।बहुत सोच विचारकर नई बॉडी का गठन किया गया है।श्री शर्मा ने कहा कि कोई बच्चे भ्रमित न हो हॉकी आगे अच्छी चलेगी।आधार कार्डो में अब जन्मतिथि नही बदलेगी।बारिश के बाद एक अच्छी प्रतियोगिता आयोजित की जावेगी। टूर्नामेंट में बच्चो से पैसे लिये जाते थे। हमने एसपी एवं टीआई को शिकायत कि है कि जिन लोगों ने बच्चों के आधार कार्डो पर जन्मतिथि चेंज कराई है,उनके खिलाफ कार्यवाही की जाये।नगरपालिका अध्यक्ष पंकज चोरे ने कहा कि भ्रम फैलाया जा रहा है।अब बच्चों को दीप सिंह द्वारा हॉकी सिखाई जाएगी। हम सब मिलकर हॉकी को सर्बोच स्थान पर ले जाने का प्रयास करेंगे। विधायक डॉ शर्मा ने कहा जबलपुर हॉकी से हॉकी नर्मदापुरम का कोई लेना देना नहीं है। भ्रम फैलाया जा रहा है। एफिलियेशन का भ्रामक प्रचार करने के मामले ने संगठन पदाधिकारियों के खिलाफ एफआईआर करवाई जाएगी। संगठन के पूर्व सचिव कन्हैया गुरयानी को जबलपुर फेडरेशन ने बाहर निकाला है। विधायक बोले फीडर सेंटर के नाम पर खूब घोटाला किया गया। इसकी भी जांच होगी। इस अवसर पर हॉकी संघ के अध्यक्ष पंकजचौरे, जितेंद्र ओझा, श्री भटिया शाहिद अनेक खिलाड़ी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय तेली महासभा के नवागत जिला मीडिया प्रभारी ओमप्रकाश राठौर का हुआ भव्य स्वागत

बोड़ा । अखिल भारतीय तेली महासभा के नवनियुक्त जिला मीडिया प्रभारी ओमप्रकाश राठौर का प्रथम बार ग्राम चंद्रपुरा (ढाबला) आगमन पर जोरदार स्वागत-सत्कार एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समाजजन एवं महासभा के पदाधिकारियों ने अंग वस्त्र भेंट कर ओमप्रकाश राठौर का अभिनंदन किया।

यह सम्मान समारोह अखिल भारतीय तेली महासभा राजगढ़ जिला अध्यक्ष आत्माराम राठौर के नेतृत्व में संपन्न हुआ। समारोह में जिला युवा उपाध्यक्ष महेंद्र कुमार राठौर सहित युवा टीम ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने जिला मीडिया प्रभारी के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

समाज के नवाचारों और संगठनात्मक मजबूती के लिए प्रतिबद्ध ओमप्रकाश राठौर ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा कि वे महासभा के कार्यों को मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का भरसक प्रयास करेंगे और समाज की गतिविधियों को सकारात्मक रूप से प्रचारित-प्रसारित करेंगे।

इस अवसर पर रवि राठौर, रामकृष्ण राठौर,तेली समाज के अनेक वरिष्ठ जन, युवाजन, और समाजसेवी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में समरसता, संगठन और समाज हित के भाव स्पष्ट रूप से देखने को मिले।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125 वीं जंयती पर हुई निबंध प्रतियोगिता

बुरहानपुर । मेरा युवा भारत (युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार) के सहयोग एवं मार्गदर्शन में शासकीय सुभाष उत्कृष्ट बालक छात्रवास बुरहानपुर में कार्यक्रम हुआ जिस में 63 छात्रओ ने भाग लिया - जिला युवा अधिकारी मोनिका चौधरी ने बताया कि हमारे मार्गदर्शक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन एक साधारण, सेवक एवं देश भक्त के रुप में व्यतित हुआ है आजादी के बाद भारत मुलभूत सेवाओ के लिए संघर्ष कर रहे था वही पर जाती संघर्ष, कश्मीर मुद्दे, एक कानून, एक संविधान जैसे ज्वलंत समस्याओं पर कार्य किया, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, हितेश सातव अधिवक्ता , सचिन चित्रलीकर सर ने अपने विचार रखे, तथा निबंधन प्रतियोगिता में भाग ले कर प्रथम, विशाल सोलंकी, व्दितीय, चेतन राठौर, तृतीय, किर्तन गोपाल को प्रणाम पत्र, व पुरुस्कार से सम्मानित किया गया ।

उप जेल में विचाराधीन कैदी के साथ मारपीट का मामला आया सामने

गंजबासौदा । उप जेल परिसर एक विचाराधीन कैदी के साथ मारपीट करने का मामला प्रकाश में आया है ।सबसे खास बात यह है कि मारपीट में घायल हुए विचाराधीन कैदी का जेल पुलिस ने चोरी छुपे इलाज भी करवा लिया गया और इस प्रक्रिया में अभी तक मारपीट करने वाले अन्य कैदियों के खिलाफ जेल पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की है ।हत्या के मामले में उप जेल में बंद शरद शर्मा के भाई शिवा शर्मा ने पूरे मामले की जानकारी आवेदन पर लिखकर न्यायालय में पेश कर दोषियों के खिलाफ ठोस कार्रवाई करवाई जाने की मांग की है ।शिवा शर्मा द्वारा न्यायालय में दिए गए आवेदन में कहा गया है कि गत दिवस वह अपने भाई शरद शर्मा से मिलने उप जेल गया था ।जहां शरद ने शिवा को बताया की गत दिवस किसी बात को लेकर अंशुल रघुवंशी, त्रियंक दांगी, संजय रघुवंशी, मोनू ने किसी बात को लेकर उसके साथ मारपीट कर दी जिससे उसे सिर में दो टांके और हाथ पैर में चोट आई है ।बाद में शिवा शर्मा ने इस संबंध में न्यायालय में आवेदन देकर पूरे मामले की जांच और दोषियों के खिलाफ ठोस कार्रवाई की मांग की है ।

'एक पेड़ मां के नाम' थीम पर भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जिला कोरिया द्वारा वृहद पौधारोपण कार्यक्रम किया गया आयोजित

समय जगत, कोरिया। कोरिया। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष बृजमोहन अग्रवाल एवं राज्य मुख्य आयुक्त डॉ. सोमनाथ यादव के आह्वान पर ÷एक पेड़ मां के नाम÷ थीम के अंतर्गत भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, जिला संघ कोरिया एवं वन विभाग कोरिया के संयुक्त तत्वावधान में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, घुघरा परिसर में संपन्न हुआ, जिसमें कलेक्टर कोरिया श्री चंदन संजय त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप में तथा पुलिस अधीक्षक श्री रवि कुमार कुर्रे, वनमंडलाधिकारी श्री चंद्रशेखर शंकर सिंह परदेसी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम में अनुभागीय अधिकारी सोनहत राकेश साहू, उपज्ञवनमंडलाधिकारी संस्कृति बारले, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती शिवकुमारी सोनपाकर, अध्यक्ष जनपद पंचायत सोनहत श्रीमती आशा देवी, एसएमडीसी घुघरा अध्यक्ष श्री राजाराम राजवाड़े एवं अन्य जनप्रतिनिधि व अधिकारीगण भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जिला मुख्य आयुक्त श्री देवेंद्र तिवारी के निर्देशन एवं जिला शिक्षा अधिकारी तथा पदेन जिला आयुक्त स्काउट जितेंद्र कुमार गुप्ता के आदेशानुसार किया गया। अपने स्वागत उद्बोधन में जिला मुख्य आयुक्त श्री तिवारी ने कार्यक्रम की रूपरेखा और वृक्षारोपण के महत्व पर प्रकाश डाला। पुलिस अधीक्षक श्री कुर्रे ने वृक्षारोपण के साथ-साथ समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे नशाखोरी, सड़क दुर्घटनाएं और पॉक्सो एक्ट के प्रति जागरूकता पर बल देते हुए स्काउट्स व गाइड्स को समाज में जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि कलेक्टर श्री त्रिपाठी ने उपस्थित विद्यार्थियों व नागरिकों को वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक करते हुए सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल-विवाह, प्रेम-प्रसंग के नाम पर मानव तस्करी, महिलाओं पर लैंगिक हिंसा तथा ट्रैफिक नियमों के पालन जैसे विषयों पर गंभीरता से चिंतन करने और समाज को जागरूक करने का आह्वान किया। उन्होंने बच्चों को मोबाइल एवं सोशल मीडिया के सही उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया और अध्यापन कार्य पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी। साथ ही विद्यालय के शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम के लिए संस्था के स्टाफ, ग्रामवासियों एवं छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं दीं।

ताजियों का कारवां विसर्जन के लिए कर्बला हुआ रवाना

बिस्टान । तीन दिन मोहर्रम पर्व के अंतिम दिन सोमवार 4 बजे सभी ताजियें विसर्जन के लिए कारवां बनाकर कर्बला मैदान के लिए रवाना हुए ।दो दिन तक मन्नतों का दौर चला आज बिस्टान अनकवाड़ी गोपालपुरा के सभी ताजियें चक्की चौक से एक साथ कर्बला मैदान के लिए निकले बरसात के बिच चारों तरफ़ गमगीन माहौल था ओर या हुसैन या हुसैन कि सदा सुनाई दे रही थी ।कारवां मस्जिद चौक से चलकर उंट बावड़ी कर्बला मैदान में पहुंचा जहां देश में अमन-चैन शांति और समृद्धि कि दुआ कर ताजियों को विसर्जित किया गया ।पुलिस प्रशासन ने पुरे समय मुस्तैदी के साथ अपना कर्तव्य निभाया और शहर में सभी समुदाय ने सहयोग भाईचारे के साथ त्यौहार में सहयोग किया ।जानकारी मुस्लिम समाज कि ओर से शाकिर कुरेशी ने दी ।

गुमानपुरा एवं सोनगढ़ में ग्रामीणों ने किया विधायक प्रताप ग्रेवाल का स्वागत

समय जगत, अमझेरा । सरदारपुर विधायक प्रताप ग्रेवाल की कोशिसो से खरमौर अभ्यारण्य सरदारपुर से 14 ग्राम मुक्त हो गए है खरमौर अभ्यारण्य का डीनोटिफिकेशन 3 जुलाई 2025 को जारी किया गया है अब खरमौर अभ्यारण्य के 14 ग्राम गुमानपुरा, बिमरोड, छडावद, धुलेट, पिपरनी, सेमल्या, केरिया, करनावद, सियावद, अमोदिया, सोनगढ, महापुरा, टिमायची, भानगढ के ग्रामीणजन अपनी निजी भूमि की खरीदी बिक्री कर सकेंगे ।पूर्व में अधिसूचित क्षेत्र 348.12 वर्ग किलोमीटर मे से 215.2872 वर्ग किलोमीटर राजस्व भूमि खरमौर के आरक्षित क्षैत्र से बाहर हुई है अब सिर्फ 132.8344 वर्ग किलोमीटर वन भूमि खरमौर अभ्यारण्य मे रहेगी ।खरमौर अभ्यारण्य का डीनोटिफिकेशन जारी करवाने मे अहम भूमिका निभाने वाले विधायक प्रताप ग्रेवाल का ग्राम गुमानपुरा एवं सोनगढ आगमन पर ग्रामीणो ने पुष्पमाला से स्वागत कर आभार व्यक्त किया ।इस दौरान ग्राम गुमानपुरा मे पूर्व सरपंच भारत सिंगार, नारायण चोधरी, नानुराम कोटवाल, हेमाजी मोलवा, बसंत गेहलोत, कोदाजी चोयल, रितेश चोधरी, रतनलाल पडियार, कमलसिंह राठौड, नेमालाल अगलेचा, कानालाल अगलेचा, निलेश काग, नारायण गेहलोत, अरूण मोलवा, पारस चोधरी, ग्राम सोनगढ मे सरपंच शैतान मेडा, राजेन्द्र लोहार, भानुप्रतापसिंह टिमायची, गोपाल डिडवानिया, सीताराम पटेल, देवीलाल शर्मा, राहुल सेन, राहुल सौलंकी, रमेश सौलंकी, कालुराम चोयल, पूर्व सरपंच भेरूलाल सहित बडी संख्या मे ग्रामीणजन उपस्थित रहे ।

शहर में लोबान की महक के साथ निकला 125 ताजियों का कारवां

धार। ख्वाजा के गुलामो का यह नारा हे या हुसैन भारत का बुलंदी पर सितारा हो या हुसैन क़र्बला हिला कर रख दिया ऐसा सुरमा हे हुसैन हम इस मिट्टी से वफ़ा करके रहेंगे ,मर जाएंगे मगर ईमान से सौदा नही करेंगे। ऐसे कलाम आका हुसैन की शान मे कलाकारों ने पड़े। धार शहर मे करीब 125 ताजियो का कारवा निकला जो लोबान की खुसबू से शहर महक उठा। दरअसल मुहर्रम माह की 10 तारीख योमें आशूरा के दिन मुस्लिम समाज के लोग हजरत इमाम हुसैन की शहादत को याद करते हुए धार्मिक परंपराओं अनुसार मुहर्रम का पर्व मनाते है , इस दौरान प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी नगर के हटवाड़ा स्थित इमामबाडा से सरकारी ताजिया के साथ ही करीब एक सो 25 छोटे-बड़े ताजिए सलामी देने के बाद नगर में जुलूस के रूप में निकाले गए , जिसमें बड़ी तादाद में मुस्लिम समाज के युवाओ के साथ ही महिला पुरुष एवम बच्चे भी शामिल हुए , जुलुस मे मुस्लिम समाज के लोग या हुसेन या हुसेन के नारे लगाते चल रहे थे। ताजिया जुलूस नगर के प्रमुख मार्गो से होते हुए निकाला गया।जहा जगह जगह ताजिया पर शेहरा पेश किया। सरकारी ताजिया के के पीछे मन्नत धारी मजनू झूमते हुए चल रहे थे।वही मजनूओ से कुछ युवक कोड़े खाते हुए भी नजर आये ताजिया जुलूस के दौरान अनूठी सांप्रदायिक सद्भावना देखी गई जहा सभी धर्म के लोग जुलूस मे शामिल होकर सद्भावना की मिसाल पेश की , ताजिया जुलूस के दौरान लोग मन्नते उतारते ताजियों के नीचे से निकलते दिखे , दोपहर करीब 4 बजे हटवाड़ा के इमामबाड़ा से शुरू हुआ ताजिया जुलूस नगर के प्रमुख मार्गो से होते हुए।क़र्बला मुंज सागर तालाब पहुँचा जहा रात्रि दो बजे करीब परंपरा अनुसार ताजियों का विसर्जन किया गया । जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए। इस दौरान एडिडनल एस पी विजय डाबर, एस डी एम रौशनी पाटीदार,सी एस पी रविन्द्र वास्कले डी एस पी आनंद तिवारी कोतवाली थाना प्रभारी समीर पाटीदार,नौगांव थाना प्रभारी सुनील शर्मा, यातायात थाना प्रभारी प्रेम सिंह ठाकुर तहसीलदार दिनेश उइके, टीम बल के साथ पैदल भ्रमण कर ताजिया विसर्जन तक अर्लट रहे। और सौहार्दपूर्ण वातावरण मे शांति से मुहर्रम का पर्व सम्पन्न करवाने मे अपनी अहम भूमिका अदा की। सरकारी ताजिया कमेटी के सदर अनवर खान अन्नू ने शांतिपूर्ण और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मे मुहर्रम का पर्व सम्पन्न करवाने के लिए जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

लोगों के लिए परेशानी बना ग्रेड सेपरेटर निर्माण कार्य,कीचड़ से सना एनकेजे मार्ग

समय जगत, कटनी। रेलवे के विकास कार्यों के नाम पर की जा रही अनदेखी अब शहरवासियों और ग्रामीणों दोनों के लिए रोज की मुसीबत बन चुकी है। एनकेजे मार्ग और सिमरोल नदी पुल के आगे की स्थिति दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है। बारिश की पहली ही बौछार ने एलएनटी कंपनी के भ्रष्ट कार्यों की पोल खोल दी। नतीजा एनकेजे का मुख्य मार्ग पूरी तरह जलमग्न हो गया है। भारी वाहनों द्वारा लाई गई चिकनी मिट्टी ने रास्तों को इतना फिसलन भरा बना दिया है कि राह चलते लोग एक-एक कर गिर रहे हैं। घायल हो रहे हैं, पर न रेलवे के अधिकारी जवाब दे रहे, न ही जिला प्रशासन की ओर से कोई ठोस कार्रवाई दिख रही है।

बंद नालों ने बढ़ाई आफत : रेलवे द्वारा बनाए जा रहे ग्रेड सेपरेटर पुल की निर्माण प्रक्रिया के दौरान निकासी नालों को बिना वैकल्पिक व्यवस्था के बंद कर दिया गया। नतीजतन एक रात की बारिश में ही पानी ने मुख्य मार्ग को कमर तक डुबो दिया। हालात इतने खराब हैं कि स्कूली बच्चों को रोजाना 10 किलोमीटर का अतिरिक्त रास्ता तय कर तिलक कॉलेज मार्ग से स्कूल पहुंचना पड़ रहा है।

एक दर्जन गांवों की राह में कांटे : एनकेजे, रोशन नगर, नयागांव सहित एक दर्जन से अधिक गांवों के ग्रामीणों के लिए यह मार्ग अब अभिशाप बन गया है। एलएनटी और इरकॉन जैसी कंपनियों के भारी वाहनों और मशीनों ने सड़कों की हालत खस्ताहाल कर दी है। रोजाना गिरते-घायल होते लोग अब चुप नहीं रहना चाहते।

नाला पाटने से बढ़ी जलभराव की समस्या : नयागांव की ओर से आने वाले पानी के प्राकृतिक बहाव को रोक दिया गया है। नाले को पाट दिया गया, जिससे पहली बारिश में ही मुख्य मार्ग पर जल का जमाव कमर तक पहुंच गया। इससे आवागमन पूरी तरह ठप हो गया और कई गांवों के लोग रोज की जिंदगी में भारी कठिनाई झेल रहे हैं। निवासियों में आक्रोश, उग्र आंदोलन की चेतावनी विगत दिनों मूंगा बाई और अन्य स्थानीय लोगों ने प्रदर्शन कर प्रशासन का ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश की थीए लेकिन समस्याएं जस की तस बनी हुई हैं। अब लोगों का आक्रोश उबाल पर है। क्षेत्रवासियों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही रास्ते की मरमत और जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं की गई।

पवई उप जेल में बंद कैदी की मौत, परिजनों ने लगाए जेल प्रबंधन पर गंभीर आरोप

समय जगत, पन्ना। पन्ना जिले की पवई उप जेल में बंद एक कैदी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई जिसको लेकर मृतक कैदी के परिजनों ने जेल प्रबंधन पर अवैध वसूली तथा इलाज न कराने को लेकर गंभीर आरोप लगाए जिससे जिले भर में हड़कंप मचा हुआ है जानकारी के अनुसार पवई अप जेल में हरिराम अहिरवार नामक कैदी वन अपराध के संबंध में बंद था जिसकी तबीयत बिगड़ी तथा उसके पांव में दर्द हुआ जेल प्रबंधन द्वारा उप स्वास्थ्य केंद्र पवई में इलाज कराया उसके बाद पन्ना जिला चिकित्सालय लेकर आ रहे थे रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई इस संबंध में मृतक कैदी रामचरण के परिजनों माता पत्नी तथा भाई ने कहा कि जेल के सिपाहियों द्वारा पैसे की मांग की गई थी तथा पचास हजार रुपए जेल प्रबंधन द्वारा इलाज के लिए मांगे जा रहे थे हमारे द्वारा तीन हजार दिए भी गए और अधिक पैसा ना होने के कारण हम नहीं दे सके जिसको लेकर जेल मेंपदस्थ सिपाहियों द्वारा उसकी मारपीट की गई जिससे उसकी मौत हुई है परिजनों द्वारा यह भी आरोप लगाया कि जेल विभाग में पदस्थ अधिकारी तथा सिपाहियों द्वारा सभी कैदियों से पैसों की मांग की जाती है जो पैसे नहीं देते हैं उम्र कैदियों को परेशान किया जाता है इनका कहना है. रामचरण अहिरवार नामक एक कैदी मृत अवस्था में आया था उसके एक पांव में चोट थी आगे कुछ नहीं था।

इनका कहना है-
कैसे क्या हुआ पीएम के बाद ही स्पष्ट होगा।

डॉक्टर सौरभ त्रिपाठी जिला चिकित्सालय पन्ना

संक्षिप्त समाचार

पौधरोपण कर उनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जागरुकता फैला रहे हैं पंचायत सचिव भीमसेन यादव

समय जगत, जयसिंहनगर/शहडोल। एक पेड़ मां के नाम अंतर्गत आज परिचय कराते हैं एक ऐसे शख्स का जो लगातार पौधे रोपित कर उन्हें संरक्षित करने का काम भी कर रहे हैं। ये हैं भीमसेन यादव जो जनपद पंचायत जयसिंहनगर अंतर्गत ग्राम पंचायत सचिव के पद पर कार्यरत हैं। यह सुबह उठकर पूजा पाठ करते हैं उसके बाद पौधे लेकर सार्वजनिक स्थलों की ओर चल पड़ते हैं। वहां पौधे रोपित कर उनकी सुरक्षा का बेहतर इंतजाम करते हैं जैसा कि आप इस तस्वीर पर साफ देख सकते हैं। इनका कहना है कि लोग हर साल लाखों – करोड़ों पौधे लगाते हैं लेकिन सुरक्षा के अभाव में वह नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि भले ही हम केवल एक पौधा लगाएं लेकिन वह धरातल पर सुरक्षित हो तब हमारा कार्य सफल माना जाएगा। उनका कहना है ? कि पर्यावरण की स्थिति को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और साथ ही उसकी सुरक्षा के इंतजाम करने चाहिए। वह अब तक कई सार्वजनिक स्थलों पर पौधे रोपित कर चुके हैं।

नाला अवरूद्ध होने से गरीबों के घरों में भरा पानी, घर– गृहस्थी का सामान डूबा, ग्राम पंचायत इटवा का है मामला

समय जगत, पन्ना। पन्ना जिले की ग्राम पंचायत इटवां खास के अंतर्गत आने वाले जयपाल कालोनी मड़ईयन में 5 जुलाई को दोपहर में हुई भारी बारिश से गरीबों के घर पानी में डूब गए। जिससे ग्रामीणों को भारी नुक़सान और परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है, नाले के रास्ते को कुछ लोगों द्वारा पत्थरों की बाड़ खकरी लगाकर अवरूद्ध किया गया है। जिससे पानी निकलने का मार्ग अवरूद्ध होने से, उनके घरों में पानी भर गया है। विदित है बरसाती नालों में अतिक्रमण से अचानक हुई भारी बारिश का पानी आसानी से नहीं निकल पाता है। जिससे इस तरह की घरों में जल भराव की स्थिति देखने को मिलती है। इसको लेकर घरों में अचानक हो रहे जल भराव से ग्रामीणों में डर की स्थिति बनी हुई है। वहीं ग्रामीणों ने समस्या से निपटने और भविष्य में किसी भी अनहोनी से बचने के लिए अतिशीघ्र अवरूद्ध किए गए नाले के रास्ते को खुलवाने व अन्य अतिक्रमण भी हटाने और सिरस्वाहा बांध में जलभराव को नियंत्रित रखने की प्रशासन से गुहार लगाई है।

पुलिस अधीक्षक ने किया कुठला थाने का औचक निरीक्षण

समय जगत, कटनी। पुलिस अधीक्षक अभिनय विश्वकर्मा ने शनिवार की रात कुठला थाने का आकस्मिक निरीक्षण किया। जिले का पदभार ग्रहण करने के बाद पहली बार कुठला थाने पहुंचे पुलिस अधीक्षक अभिनय विश्वकर्मा ने थाने के दस्तावेजों को चेक करते हुए अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। पुलिस सूत्रों से प्राप्त जानकारी के मुताबिक भ्रमण के दौरान पुलिस अधीक्षक श्री विश्वकर्मा ने थाने के अभिलेख चेक करने के उपरांत थाना भवन का निरीक्षण करते हुए थाने के रखरखाव का जायजा लिया।

विराग सागर का प्रथम समाधि स्मृति दिवस कार्यक्रम हुआ आयोजित

नगर में विराजित पट्टाचार्य विशुद्ध सागर ने साझा की गुरुदेव से जुड़ी स्मृति

पथरिया। बुंदेलखंड के प्रथम दिगम्बर आचार्यश्री विराग सागर महराज की जन्मस्थली पथरिया में प्रथम समाधि के दिन स्मृति दिवस के रूप में अतिशय क्षेत्र पार्श्वनाथ जैन बड़े मंदिर के विशाल प्रांगण में प्रातःकाल की बेला में पट्टाचार्य विशुद्ध सागरससंघ के मंगल सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ भोपाल से आए पूर्व कलेक्टर सुरेश जैन, न्यायमूर्ति विमला जैन, अरुण कोडरिया अहमदाबाद, गौरव जैन सागर ने किया। समाधि सम्राट आचार्य विराग सागर के चरण चिन्ह का प्रक्षालन भी बाहर से पधारे अतिथियों को प्राप्त हुआ। जैनाचार्य विराग सागर की मंगल संगीतमय पूजन का अवसर भी भक्तों को प्राप्त हुआ। सुरेश जैन, अरुण कोटाडिया, बापू जैन ने भावभीनी विनयांजलि अर्पित की।

आचार्य विशुद्ध सागर ने स्मृति दिवस पर उदगार व्यक्त किए। जिसमें उन्होंने अपने दीक्षा गुरु विराग सागर से जुड़े हुए कई संस्मरण सुनाए। पथरिया में जन्मे बेटे अरविंद ने धर्म संस्कारों से ऐसी नींव भरी की आज श्रमण परंपरा का विशाल महल खड़ा कर दिया। 400 से अधिक जैनेश्वरी दीक्षाएं प्रदान की जो आज पूरे विश्व में धर्म की प्रभावना कर रहे है। बुंदेलखंड की पावन भूमि के पथरिया ग्राम में अवतरित अध्यात्म, मानवता की प्रतिमूर्ति 350 ने पूरे भारत में 2 लाख किलोमीटर पैदल चलकर अहिंसा व्यसन मुक्ति, शाकाहार, भारत निर्माण की भावना लेकर अलख जगाई। अनोखे संत जिनका संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक प्रेरणा से भरा रहा। उनके जीवन का हर अध्याय, अद्भुत ज्ञान, असीम करुणा और मानवता के उत्थान के लिए उनकी सौम्य दृष्टि और दिव्य मुस्कान प्रेरित करने वाली थी। उनका आशीर्वाद आनंद से भर देने वाला था जो हमारे अंतर्मन के साथ-साथ पूरे वातावरण में उनकी दिव्य उपस्थिति का अहसास करा रहा था। उनका जाना उस अद्भुत मार्गदर्शक को खोने के समान है जिन्होंने मेरा और अनगिनत लोगों का मार्ग निरंतर प्रशस्त किया है। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के संस्मरण में कहा कि जब बालक अरविंद कटनी के जैन संस्कृत विद्यालय में शिक्षा अध्ययन कर रहे तब आचार्यश्री का स्वास्थ्य खराब होने पर दिन रात सेवा व्यावृत्ति करते थे, तभी उनके मन में वैराग्य उमड़ गया और घर का रास्ता भूल गए। सन 1990 में पथरिया के पंचकल्याणक में आचार्य विद्यासागर एवं मुनि विरागसागर के संयुक्त सानिध्य में ऐतिहासिक संपन्न हुआ। लगभग 2 घंटे की मंगल देशना में पूज्य पट्टाचार्य ने अनेक संस्मरण सुनाए। साथ ही कहा गुरु के बारे में बोलने मेरा सामर्थ्य नहीं। घंटों तो क्या कई दिनों का समय भी बोलने मिले तो पूरा नहीं सुनाया जा सकता है। सभी की भावना अनुरूप चातुर्मास की मंगल कलश स्थापना का आयोजन 12 जुलाई को विरागोदय तीर्थ धर्म में आयोजित होगा जिसमें पूरे देश से हजारों की संख्या में भक्त शामिल होंगे।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

समय जगत, दमोह। अंतर्राष्ट्रीय सहकारी वर्ष 2025 अंतर्गत शासकीय महारानी लक्ष्मी बाई कन्या उमा विद्यालय दमोह में स्कूल की छात्राओं को सहकार से समृद्धि विषय पर सौरभ कोठिया सहायक आयुक्त सहकारिता के मुख्य आतिथ्य प्राचार्य डॉ. आलोक सोनवलकर की अध्यक्षता व संजय हजारी प्र. महाप्रबंधक, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक व एमके राय, एपीसी समग्र शिक्षा के विशिष्ट अतिथ्य में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम स्थान निशा पटैल, राधिका लोधी द्वितीय स्थान. प्रतीक्षा यादव तृतीय स्थान, रेशमा कुर्मी, अंबिका लोधी, चतुर्थ कंचन रैकवार, निकिता गोड़, पंचम नम्रता अहिरवार, दिव्या जाटव ने प्राप्त करने पर पुरस्कार वितरण शील्ड वितरण किया गया। संचालन जिला सहकारी संघ के सीईओ संजीव दुबे ने किया। आभार शुभम् सिंह फील्ड प्रभारी कोआपरेटिव बैंक ने माना। अतिथियों का पुष्पहार से स्वागत डीपी सेन ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सौरभ कोठिया व संजीव दुबे ने सहकारी समितियों के इतिहास, गठन, कार्य प्रणाली व समाज में योगदान की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर स्कूल स्टाफ में श्रीमति प्रियंका अठया, रेनू गुप्ता, नीतू ठाकुर, श्रद्धा डिम्हा, पूनम गौतम, अभिलाषा खरे, मंगलेश पांडे, हर्षा दवे सांदीपनी स्कूल, बैंक से गोविंद नेमा, अशोक रैकवार, वीरू प्रजापति व गुलाब सिंह ठाकुर की उपस्थिति रही।

ओबेदुल्लागंज में पुलिस, पत्रकार और जनप्रतिनिधियों ने किया पौधारोपण

समय जगत, ओबेदुल्लागंज। ओबेदुल्लागंज थाना परिसर और जीडीपी कार्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुलिस प्रशासन, स्थानीय पत्रकार बंधु और जनप्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ आयोजित इस कार्यक्रम में सभी ने मिलकर पौधे रोपे। थाना परिसर और जीडीपी कार्यालय के आसपास विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए गए, जिससे हरियाली को बढ़ावा मिल सके। इस मौके पर थाना प्रभारी भारत प्रताप सिंह, ओर एसडीओपी शीला सुराणा एवं स्टाफ उपस्थित रहे। सभी जनप्रतिनिधियों ने भी पर्यावरण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक निवेश है। पेड़ों से हमें शुद्ध हवा मिलती है और वे जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने में सहायक होते हैं। कार्यक्रम में पत्रकारों ने भी सक्रिय रूप से हिस्सा लिया और इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दिया। यह आयोजन पुलिस, पत्रकार और जनप्रतिनिधियों के बीच बेहतर समन्वय और सामंजस्य का प्रतीक भी बना। सभी ने मिलकर इस पहल को सफल बनाया, जो निश्चित रूप से ओबेदुल्लागंज में हरियाली बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के नेतृत्व में भाजपा संगठन और कार्यकर्ताओं में होगा नई ऊर्जा का संचार : दिलराज सिंह

कटनी। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में हेमंत खंडेलवाल निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। अब भाजपा संगठन की कमान उनके हाथों में सौपी गई है। हेमंत खंडेलवाल के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध नवनिर्वाचित होने पर भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य दिलराज अमर सिंह ने प्रदेशाध्यक्ष से मिलकर बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की है। हेमंत खंडेलवाल को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित होने पर भाजपा भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य दिलराज अमर सिंह ने कहा कि हेमंत खंडेलवाल की संगठनात्मक यात्रा में वर्षों की तपस्या, अनुशासन और सेवा की भावना ने ही आपको एक कर्मनिष्ठ, जनसंपर्क में दक्ष और नेतृत्व क्षमता के रूप में स्थापित किया है। आपको भाजपा प्रदेशाध्यक्ष के रूप में उत्तरदायित्व निश्चित ही संगठन और प्रत्येक कार्यकर्ता को नई ऊर्जा, नई दिशा और सशक्त भविष्य की ओर अग्रसर करेगा। श्री सिंह ने बताया कि हेमंत खंडेलवाल संघ पृष्ठभूमि से आते हैं। उनकी संघ के अलावा पार्टी संगठन में भी मजबूत पकड़ है। वह बैतूल के पूर्व सांसद एवं दो बार के विधायक हैं। उनके पिता विजय कुमार खंडेलवाल बैतूल लोकसभा से तीन बार सांसद रह चुके हैं, तब से ही वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा से जुड़े हुए हैं। पिता के निधन के बाद हेमंत ने बैतूल लोकसभा से उपचुनाव लड़ा और निर्वाचित होकर सांसद बने। इसके बाद वह बैतूल विधानसभा से दूसरी बार के विधायक हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल का जन्म 2 सितंबर 1964 को उत्तरप्रदेश के मथुरा में हुआ। वे पूर्व सांसद विजय कुमार खंडेलवाल के बेटे है। श्री हेमंत खंडेलवाल ने बी.कॉम, एलएलबी, जेएच गवर्नमेंट कॉलेज, बैतूल से शिक्षा हासिल की है। वे संघ पृष्ठभूमि से आते हैं, उनकी संघ के अलावा पार्टी संगठन में भी मजबूत पकड़ है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर हुआ पौधारोपण

श्यामा प्रसाद मुखर्जी का स्वप्न था कि देश सांस्कृतिक अखंडता के मार्ग पर बढ़े आगे

समय जगत, खुरई। भारतीय जनता पार्टी नगर मंडल ग्रामीण मंडल धनोरा मंडल ने संयुक्त रूप से पूर्व मंत्री एवं विधायक कार्यालय में डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कि 124 वी जन्म जयंती मनाई श्री मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 में कलकत्ता शहर में हुआ था वे हिन्दू राष्ट्रवाद , एवं अखण्ड भारत की बात करते थे जनसंघ के संस्थापक डॉ मुखर्जी ने कश्मीर से 370 हटाने की बात उठाई थी और इसे समाप्त करने के लिए आमरण अनशन किया था वे कश्मीर में तो उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाला गया जहाँ संदिग्ध परिस्थिति में मौत हो गई आज बीजेपी की सरकार जहां हिन्दुत्व की राह पर आगे चल रही है वहीं यह श्यामा प्रसाद मुखर्जी का ही सपना था कि देश सांस्कृतिक अखंडता के रास्ते पर आगे बढ़े. वरिष्ठ भाजपा नेता वरिष्ठ भाजपा नेता देशराज यादव ने डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए डा. मुखर्जी के हिन्दूत्व विचारधारा को बताया उन्होंने कहा कि वे अखण्ड भारत और लोगों राष्ट्रीय भावना पैदा करना था। आगे कहा संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी डा. मुखर्जी के विचारों और उनके सपनो का भारत बनाने की दिशा बढ़ रहा है सभी उपस्थित सदस्य ने वृक्षारोपण किया। राम शास्त्री ने ने सभी अतिथियों एवं वरिष्ठ जनो का आभार मना। इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष राहुल चौधरी, धनोरा मंडल अध्यक्ष राजपाल सिंह राजपूत, ग्रामीण मंडल अध्यक्ष रविंद्र सिंह राजपूत, प्रवीण जैन, ओम प्रकाश घोरट,अजीत सिंह अजवानी इंदिराज सिंह ठाकुर ,मुन्ना सिंह दांगी , छोटू रोकडिया माधव सिंह सिलोधा,इंद्र कुमार राय,,, नितिराज पटेल, हरिशंकर कुशवाहा ,,, गनेश पटेल, ,, श्रीमती अर्चना जैन, ,रामबाबू बकील साब, राजा भाई धागर, , सौरव नेमा इन्द्र राज ठाकुर, हेमंत ठाकुर संतोष राजकुमार, प्रफुल्ल बोहरे, छोटू रोकडिया काशीराम अहिरवार, मुकेश रमेश साहू, शैलेंद्र ,पप्पू पटेल धर्मेन्द्र असाटी,अखिलेशपांडा सोनू यादव बिट्टू ठाकुर ऋतिक कुशवाहा एवं सभी महिला मोर्चा के पदाधिकारी कार्यकर्ता सभी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सिविल अस्पताल को केन्द्र सरकार से मिला गुणवत्ता प्रमाण पत्र

समय जगत, खुरई। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाओं और मरीजों को बेहतर इलाज उपलब्ध कराने के लिए सिविल अस्पताल को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक प्रमाण-पत्र प्रदान किया है। पूर्व गृहमंत्री एवं विधायक भूपेन्द्र सिंह ने इस उपलब्धि पर सिविल अस्पताल के समस्त स्टाफ एवं क्षेत्र के नागरिकों को बधाई दी है।ज्ञातव्य है कि सिविल अस्पताल सहित विधानसभा क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार हेतु पूर्व गृहमंत्री एव विधायक भूपेन्द्र सिंह सतत् प्रयासरत रहे हैं। जिन्होंने खुरई के सिविल अस्पताल को अनेक सुविधाएं और चिकित्सा उपकरण उपलब्ध कराये हैं, जो अन्य अस्पतालों में बहुत कम है। भूपेन्द्र सिंह खुरई और मालथौन के प्रवास के दौरान दोनों स्थान के अस्पतालों का आये दिन निरीक्षण करते रहे हैं। जिसके चलते अस्पतालों में बेहतर व्यवस्थाएं और सुविधाएं मिली है। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानकों को सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ-साथ वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के लिए विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की टीम द्वारा राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक प्रमाण पत्र के लिए चयनित अस्पतालों का निरीक्षण कर वहां के मरीजों के लिए उपलब्ध सेवाओं की गुणवत्ता का परीक्षण करते हुए मरीजों से भी फीडबैक लिया जाता है। इन कड़े मानकों पर खरा उतरने वाले अस्पतालों को ही गुणवत्ता प्रमाण-पत्र जारी किये जाते है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की टीम ने खुरई के सिविल अस्पताल के निरीक्षण में 89.22 प्रतिशत अंक देते हुए राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक प्रमाण-पत्र प्रदान किया है। उल्लेखनीय है कि सागर जिले में एकमात्र खुरई के सिविल अस्पताल को यह उपलब्धि हासिल हुई है। विगत दिनों भोपाल में डिप्टी सीएम एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजेन्द्र शुक्ल ने खुरई सिविल अस्पताल के बीएमओं डॉ. रामजी ठाकुर को उक्त प्रमाण-पत्र प्रदान किया।

मनरेगा में भ्रष्टाचार मामले की खबर सुर्खियों में आने के बाद सीईओ ने दिये जांच के आदेश

सरपंच बन गया मजदूर: पांढुर्ना पंचायत में हुई गड़बड़ियों पर सख्त कार्यवाही के बने आसार

समय जगत- बैतूल। जिले की जनपद पंचायत आठनेर की ग्राम पंचायत पांढुर्णा इन दिनों सुर्खियों में है। कारण है–महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत सामने आया एक गंभीर और चौंकाने वाला भ्रष्टाचार का मामला, जिसमें पंचायत के ही सर्वोच्च जनप्रतिनिधि को मजदूर बनाकर भुगतान की प्रक्रिया चलाई जा रही थी। जब मीडिया ने इस पर से परदा हटाया, तो जनपद पंचायत में हलचल मच गई। विशेषकर 2 जून 2025 को प्रकाशित हमारी खबर का प्रशासन पर त्वरित असर भी देखने को मिला। पंचायत के ग्राम रोजगार सहायक अनिल सराटकर द्वारा डाली गई एक डिमांड और जारी मस्टररोल में सरपंच सुखदेव माकोड़े का नाम बतौर मजदूर दर्ज पाया गया। यह स्थिति उस शासन व्यवस्था की विडंबना को उजागर करती है, जिसमें निगरानी करने वाला व्यक्ति स्वयं लाभार्थी बन बैठा है। योजना की पारदर्शिता और उद्देश्य दोनों को यह घटना गहरे रूप से आहत करती है। कागजों में सरपंच के नाम पर मजदूरी दर्शाकर भुगतान की प्रक्रिया अपनाई गई, जो न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि नैतिकता और प्रशासनिक शुचिता के भी खिलाफ है।जब इस संदर्भ में ग्राम रोजगार सहायक अनिल सराटकर से सवाल किया गया, तो उन्होंने बेहद लापरवाही से जवाब दिया ग्राम पंचायत में तो मेट भी डिमांड डाल देता है और मस्टररोल भी निकाल लेता है।÷ अपने कर्तव्यों से पल्ला झाड़ते हुए उन्होंने सारा ठीकरा मेट पर फोड़ दिया। सवाल यह उठता है कि यदि मेट को ही यह सब करना है, तो फिर शासन द्वारा ग्राम रोजगार सहायकों की नियुक्ति क्यों की जाती है? क्या वे केवल नाम मात्र के कागजी अधिकारी बनकर रह गए हैं? सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार, जिस डिमांड के आधार पर यह पूरा खेल रचा गया, वह स्वयं अनिल सराटकर द्वारा डाली गई थी। मस्टररोल भी उन्हीं के द्वारा तैयार किया गया था, जिसमें सरपंच के नाम पर कार्यदिवस अंकित किए गए। जैसे ही मामला सामने आया, तत्काल प्रभाव से मस्टररोल और डिमांड को शून्य कर दिया गया, जिससे साफ जाहिर होता है कि कुछ तो गलत था, जिसे छिपाने की कोशिश की गई।इस पूरे मामले को गंभीरता से लेते हुए जनपद पंचायत आठनेर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी देवेंद्र दीक्षित ने जांच के आदेश दे दिए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया है कि दोषी पाए जाने पर रोजगार सहायक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उल्लेखनीय है कि सीईओ दीक्षित की छवि अब तक एक ईमानदार और नीतिपरक अधिकारी की रही है। वे योजनाओं की गुणवत्ता और पारदर्शिता के प्रति हमेशा सजग रहे हैं, लेकिन यह मामला उनके अधीनस्थ तंत्र की कार्यप्रणाली पर बड़ा सवाल खड़ा करता है। पांढुर्णा पंचायत का यह प्रकरण केवल एक घटना नहीं है, बल्कि यह संकेत है कि कई पंचायतों में इस तरह की अनियमितताएं गहराई से जड़ें जमा चुकी हैं। राजनीतिक संरक्षण और निजी स्वार्थों की साझेदारी ने मनरेगा जैसी कल्याणकारी योजना को भ्रष्टाचार का माध्यम बना दिया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस योजना का उद्देश्य ग्रामीणों को रोजगार देना था, वह अब चुनिंदा लोगों की आय का साधन बनती जा रही है। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि जब पंचायत का जिम्मेदार प्रतिनिधि ही नियमों की अनदेखी करे, तो आम ग्रामीणों के हक की रक्षा कौन करेगा? पंचायतों में जवाबदेही की कमी और निगरानी तंत्र की शिथिलता से ऐसे मामले पनपते हैं। अब निगाहें इस बात पर हैं कि सीईओ के निर्देशों के बाद क्या वास्तव में दोषियों पर कार्रवाई होती है या यह मामला भी कागजों में दबकर रह जाएगा? जनता, प्रशासन और मीडिया की संयुक्त भूमिका ही ऐसे मामलों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित कर सकती है। इस मामले ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि यदि मीडिया सजग हो, तो प्रशासन को भी नींद से जागना पड़ता है। हमारी टीम इस प्रकरण से जुड़े हर पहलू की पड़ताल कर रही है और आने वाले समय में इससे जुड़े और भी खुलासे सामने लाए जाएंगे। यह तो बस शुरुआत है, भ्रष्टाचार की परतें अभी और खुलनी बाकी हैं?

सार-समाचार

खाद वितरण व्यवस्था पर भड़के किसान उमरखली रोड पर किया चक्काजाम

समय जगत, खरगोन। शहर के उमरखली रोड़ स्थित विपणन केंद्र पर सोमवार को उस वक्त हंगामें की स्थिति बनी, जब कोई एक दिन पहले तो कोई आधी रात से कतार में लगा था, इन्हें नजर अंदाज कर अन्य काउंटर खोलकर टोकन बांटे जाने लगे। यह देख कतार में लगे किसान भड़क गए और सड़क पर आकर प्रदर्शन शुरु कर दिया। इस प्रदर्शन में एक हजार से अधिक किसान शामिल हुए। सूचना पर पहुंचे एसडीएम बीएस कलेश ने किसानों को समझाईश देकर टोकन सहित खाद वितरण व्यवस्था शुरु कराई। किसान चंपालाल बड़ोले पिपलझोपा, रवि तंवर, शाहिद तंवर, रसीलाल रावत बाणगंगा आदि ने बताया कि रविवार देररात तो कोई रात तीन बजे केंद्र पर पहुंचा था। पहले टोकन मिलने की आस में कतार लगाई, लेकिन सुबह करीब 11 बजे तक केंद्र खुला तो तय स्थान के बजाय दूसरे काउंटर से टोकन बांटे जाने लगे। इससे कतार टूट गई और बाद में आए लोगों को टोकन मिल गया।

छीपाबड़ पुलिस ने नशा बेचने वाले को किया गिरफ्तार

समय जगत खिरकिया। छीपाबड़ पुलिस ने ड्रग्स के आरोपी को किया गिरफ्तार किया गया। थाना प्रभारी आर पी कवरेती ने बतया की दिनांक 06.07.2025 को 10.40 बजे मुखबीर द्वारा सूचना प्राप्त हुई की दुलिये का एक उचा पुरा आदमी गोस बाल काले निली जिंस पेट सफेद सर्ट काले रंग की मोटर सायकल से दिखा जैसे ही संदेही में पुलिस को देखा भागने का प्रयास करने लगा जिस पर व्यक्ति पर मुखबीर व्दारा बताये गये संदेह के आधार पर संदेही को हमराह स्टाफव स्वतंत्र साक्षियों की मदद से हिकमत अमली से पकडने का प्रयास किया जो पुलिस को देखकर कच्चे रास्ते से तालाब की ओर भागने लगा जिसे घेराबंदी कर पकडा, संदेही से नाम पता पूछने पर उसने अपना नाम विष्णु प्रसाद पिता हरिप्रसाद जाट उम्र 54 साल निवासी कन्नोद थाना खातेगांव जिला देवास के कब्जे से अवैध मादक पदार्थ आर्टिकल जिसमें 32.37 ग्राम एम डी मादक पदार्थ किमती 320000-/ रुपये एवं आर्टिकल 6 रजनी गंधा के पाउच एक बीस रुपये के नोट से बना पाईप एक निला छोटा पन्नी नुमा बैंग पांच छोटी पन्नी, एक वीवो कम्पनी का मोबाईल फोन एवं संदेही की कब्जे की मोटर सायकल सम्पूर्ण सम्पति कीमती 381720 रुपये को 14.45 बजे विधिवत वाहन सहित जप्त किया गया। थाना प्रभारी ने बताया की आरोपी के विरूध्द धारा 8/22 एन.डी.पी.एस. एक्ट का अपराध पंजीबध्द कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया।

विश्वकर्मा वंशज उत्थान संगठन की बैठक संपन्न

समय जगत, बड़वाह। विश्वकर्मा वंशज उत्थान संगठन की बैठक विश्वकर्मा मंदिर नावघाटखेडी मे संपन्न हुई। बैठक मे मुख्यातिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविन्द पांचाल, राष्ट्रीय सलाहकार समिति के अध्यक्ष रामप्रसाद टैकरवाले, राष्ट्रीय महामंत्री मुकेश पांचाल, प्रदेश प्रभारी संजय पांचाल की उपस्थिति मे संघठन का विस्तार किया गया।जिसमे यशवन्त कर्मा को प्रदेश संगठन मंत्री, राजेश कर्मा को खरगोन जिलाध्यक्ष, देवेन्द्र विश्वकर्मा को जिला उपाध्यक्ष एवं कैलाश कर्मा नेताजी को इन्दौर संभाग का प्रभारी नियुक्त किया। बैठक में समाज में सामूहिक विवाह परिचय सम्मेलन करवाए जाने पर चर्चा हुई। सभी पदाधिकारियों ने संघठन को मजबूत बनाये जाने पर विचार रखे।बैठक मे कैलाश विश्वकर्मा, पंडित मुकेश कृष्ण शास्त्री महाराज एवं समाज जनउपस्थित रहे।बैठक का संचालन यशवंत कर्मा ने किया व आभार देवेंद्र कर्मा ने माना।

वार्ड 18 आदर्श कॉलोनी में जल भराव के निराकरण के लिए सीएमओ को दिया ज्ञापन

मुरैना/जौरा। नगर पंचायत क्षेत्र के वार्ड 18 में स्थित आदर्श कॉलोनी में बरसात का जल भराव होने से यहां रहने वाले नागरिक परेशान हैं। जल भराव के निराकरण के लिए सीएमओ को ज्ञापन भी दिया है। स्थानीय निवासी युवा समाजसेवी अरविंद श्रीवास्तव एवं रहवासियों द्वारा दिए गए ज्ञापन में लिखा है कि आदर्श कॉलोनी वार्ड 18 में बरसात का पानी चारों तरफ भर गया है जिससे यहां रहने वाले रहवासी अपने-अपने घरों से निकलने में परेशान हो रहे हैं। वहीं कीचड़ दलदल से भी परेशानी हो रही है। बरसात का गंदा पानी भरा रहने से मच्छर भी पनप रहे हैं जिससे बीमारियां फैलने का खतरा भी मंडरा रहा है। बरसात के इस जल भराव का सही निकास नहीं होने से उक्त समस्या का निराकरण नहीं होने से यहां रहने वाले सभी नागरिक परेशान हो रहे हैं। अरविंद श्रीवास्तव अरबाज खान अर्जुन रिंकू भूपेश बंटी महेश आदि रहवासियों ने सीएमओ वीरेंद्र रावत को ज्ञापन देकर जल भराव के निराकरण की भी मांग की है।

जिला भाजपा कार्यालय में स्वागत समारोह किया गया आयोजित

भाजपा कार्यकर्ता मेरा जीवन व प्राण, उनके सम्मान में कभी नहीं आने दूंगा कमी: हेमंत खण्डेलवाल

समय जगत- बैतूल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं केंद्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उइके ने रविवार को बैतूल जिला भाजपा कार्यालय में आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल के बैतूल में जगह-जगह पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया। कार्यकर्ताओं ने प्रथम नगर आगमन पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री खण्डेलवाल का तुलादान कर स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता मेरा जीवन व प्राण है। उनके सम्मान में कभी कमी नहीं आने दूंगा। पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता ने जो प्यार, स्नेह दिया उसका कर्ज जीवन भर नहीं उतार पाऊंगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत दुनिया का सिरमौर बनेगा। कार्यक्रम को केंद्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उइके ने भी संबोधित किया।

संगठन को और मजबूत बनाने की जिम्मेदारी हम सभी कार्यकर्ताओं की- श्री हेमंत खण्डेलवाल: भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि एक सप्ताह में दो घटनाएं मेरे जीवन में घटित हुई, जिसमें पहली मुझ जैसे सामान्य कार्यकर्ता को पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश नेतृत्व ने प्रदेश अध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा, दूसरी घटना आज आप सभी कार्यकर्ताओं का जगह-जगह प्रेम, स्नेह और आशीर्वाद मिला। इन दोनों घटनाओं को मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। पार्टी नेतृत्व ने आप सभी कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत व परिश्रम से ही प्रदेश अध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा। आप सभी कार्यकर्ताओं की बदौलत बैतूल का नाम आज देशभर में रोशन हुआ है। उन्होंने कहा कि आप कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी अब और बढ़ गई है, क्योंकि मैं प्रदेशभर में संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाने में लगा रहूंगा। बैतूल में भाजपा के कमल की चमक को और आगे ले जाने की जिम्मेदारी आप सभी कार्यकर्ताओं की है। हम सभी कार्यकर्ता पार्टी संगठन को और आगे ले जाने का कार्य करना है।

कार्यकर्ताओं के लिए मैं दिन-रात खड़ा रहूंगा, आप सरकार के कायों को जन-जन तक पहुंचाएं: भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि भाजपा राजनीतिक दल के साथ एक परिवार है। पार्टी कार्यकर्ता परिवार के सदस्य हैं। पार्टी संगठन मजबूत हो, हर कार्यकर्ता को सम्मान महसूस हो, इसका मैं पूरा प्रयास करूंगा। पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए मैं दिन-रात खड़ा रहूंगा। पार्टी कार्यकर्ताओं के प्रति मेरी असीम श्रद्धा व लगाव है, जिसमें मैं कभी कमी नहीं होने दूंगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार कई जनकल्याणकारी और जनहितैषी योजनाएं चला रही हैं, जो लोगों के जीवन में बदलाव लाने कार्य कर रही हैं। लोगों के जीवन में बदलाव लाने सभी कार्यकर्ता गांव-गांव जाएं और जन-जन तक भाजपा सरकारों की कल्याणकारी योजनाओं को बताएं और उनका लाभ दिलाने का प्रयास करें। जनता को जनहितैषी योजनाओं का लाभ मिले, तभी प्रदेश और देश का विकास होगा और भारत विश्व गुरू बनेगा। आप सभी कार्यकर्ताओं के अपार स्नेह से मैं अभिभूत हूं।

आबकारी विभाग द्वारा 136 विभागीय एवं 92 आपराधिक प्रकरण दर्ज

मुरैना। कलेक्टर अंकित अस्थाना के आदेशानुसार जिला आबकारी अधिकारी जितेन्द्र सिंह गुर्जर के मार्गदर्शन में माह जून 2025 में जिले में अवैध मदिरा आधिपत्य एवं परिवहन के कुल 92 प्रकरण दर्ज किये गये हैं। जिला आबकारी अधिकारी जितेन्द्र सिंह गुर्जर ने बताया कि मुरैना वृत्त में जितेन्द्र सोलंकी पुत्र दिनेश सोलंकी, निवासी-गणेशपुरा, मुरैना, अनुज इंदौलिया पुत्र रामेश्वर, निवासी-छोंदा, सोनू गुर्जर पुत्र अमर सिंह, निवासी-खेरा, भूपति गुर्जर पुत्र रामौतार, निवासी-गोठियापुरा, धरमवीर गुर्जर पुत्र मेवाराम, निवासी-जींगनी, गौरव शिवहरे पुत्र सुरेश, निवासी-बामौर, छोटेलाल गुर्जर पुत्र कप्तान, निवासी-खटानेकापुरा एवं धनीराम कुशवाह पुत्र कन्हैयालाल निवासी-करुआ, अम्बाह वृत्त में देवीराम उपाध्याय पुत्र राजेन्द्र, निवासी-खिल्ली, भूरे सिंह पुत्र प्रताप सिंह, निवासी खिल्ली. सत्यवीर राठौर पुत्र नारायण सिंह, निवासी-अम्बाह, शोभाराम पुत्र गिरवर, निवासी-चाँद का पुरा, भूपेन्द्र सिंह पुत्र विशम्भर सिंह, निवासी-लक्ष्मण का पुरा, मुकेश सखवार पुत्र देवीलाल, निवासी-बगिया पुरा, महेश सिंह तोमर पुत्र बुद्ध सिंह, निवासी- बुआ का पुरा एवं हरदेश सिंह पुत्र प्रमोद सिंह तथा लक्ष्मण सिंह पुत्र फूल सिंह, निवासी-सुनावली, सबलगढ़ वृत्त में रघुराज जाटव पुत्र जसवंत, बनवारी लाल पुत्र में चेऊराम, शेर सिंह धाकड़ पुत्र सखनलाल, अरविंद सिकरवार पुत्र कुलदीप सिंह, पंचम रावत पुत्र जनवेद, महेंश धाकड़ पुत्र गोपीराम, राजबहादुर पुत्र जसवंत सिंह एवं विवेक धाकड़ पुत्र नारायण तथा जौरा वृत्त संजय शर्मा पुत्र सुरेश शर्मा, निवासी-ग्राम चचिहा, बागचीनी, कमल किशोर जाटव पुत्र रामदास जाटव, निवासी-ग्राम सांकरा, टिंकू कुशवाहा पुत्र रामधन कुशवाहा, निवासी- तालपुरा, थाना बागचीनी, जौरा, माखन कुशवाहा पुत्र सोनेराम कुशवाहा, निवासी- फूलपुर जौरा, गजराज कुशवाहा पुत्र केदार कुशवाहा, निवासी-गेपरा फाटक, अनिल शाक्य पुत्र रामेश्वर शाक्य, निवासी-उरहेड़ी, आदि राम कुशवाहा पुत्र रामजीलाल कुशवाहा, निवासी-काशीपुर जौरा एवं रंजीत जादौन पुत्र सिमरजीत जड़ों, निवासी- गोपालपुर हाल मुकाम पगारा रोड, जौरा आदि के विरुद्ध प्रकरण पंजीबद्ध किये गये हैं।

11 अगस्त को निकलेगा 57वां शिवडोला

10 जुलाई को गुरू पूर्णिमा पर धूमधाम से मनाया जाएगा श्रावण मास

खरगोन। नगर के अधिष्ठाता भगवान श्री सिद्धनाथजी महादेव भादौ वदी दूज 11 अगस्त 2025 सोमवार को प्रातः नौ बजे से परंपरानुसार राजशी ठाठ बांट के साथ परंपरागत मार्ग पर नगर भ्रमण के लिए निकलेंगे। इससे पूर्व 10 जुलाई गुरु पूर्णिमा से श्री सिद्धनाथ महादेव मंदिर भावसार क्षत्रिय समाज भावसार मोहल्ला खरगोन पर श्रावण मास धूमधाम से मनाया जाएगा। श्रावण में नित्य पूजनए आरती आदि धार्मिक अनुष्ठान होंगे। प्रतिदिन मुख्य आरती रात्रि 9 बजे से प्रारंभ होगी। रविवार को राधाकुंज मांगलिक परिसर में श्री सिद्धनाथ महादेव मंदिर सार्वजनिक श्रावण मास समारोह आयोजन समिति की महत्वपूर्ण बैठक समिति अध्यक्ष नवनीतलाल भंडारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। समिति प्रवक्ता प्रकाश भावसार ने बताया इस अवसर पर समिति संरक्षक बबलू पाल, दीपक डंडीर, उपाध्यक्ष गुलाबचंद भावसार, मनोज भावसार, कोषाध्यक्ष राधाकृष्ण महाजन आदि मंचासीन थे। मंचासीन पदाधिकारियों सहित समिति संरक्षक मनोहर भावसार, निलेश भावसार, उपाध्यक्ष डॉ. मोहन भावसार, कोषाध्यक्ष श्यामसुंदर महाजन, सचिव रणजीतसिंह डंडीर, विनीत महाजन, रवि धारे, हरिओम राठौड़, कल्याण भावसार, सदस्य डॉ. शरद दिंडोरकर, संतोष मुकाती, अभिषेक भावसार, आषीष मल्लीवाल आदि ने महत्वपूर्ण सुझाव रखे। बैठक में विभिन्न बिंदुओं पर विचार.विमर्श किया गया। शिवडोला में झांकियों की संख्या में बढ़ोतरी की जाएगी। उक्त झांकियों का समापन किला परिसर पर होगा। शासन.प्रशासन से शहरी क्षेत्र की समस्त शराब दुकानें बंद रखने का अनुरोध किया जाएगा।

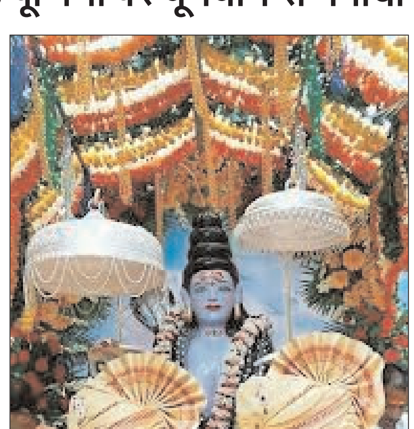

ये हुए महत्वपूर्ण निर्णय: 10 जुलाई से प्रतिदिन रात्रि 9 बजे श्रावण मास की मुख्य आरती होगी। आरती के मुख्य यजमान को रात्रि आठ बजे अनिवार्य रूप से मंदिर आना होगा।

गर्भगृह में प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक अभिषेक नहीं होगा। इस दौरान नंदी हाल में अभिषेक कर सकेंगे।

. शिवलिंग का श्रृंगार प्राकृतिक व सात्विक वस्तुओं से ही होगा। श्रृंगार में रासायनिक वस्तुओंए सेंटए स्प्रे आदि का प्रयोग वर्जित रहेगा।

श्रावण मास के अंतिम सोमवार रूद्राक्ष मित्र मंडल द्वारा परंपरानुसार प्रातः 4 बजे से ओंकार आरती की जाएगी।

किसानों की खाद की समस्या को लेकर कांग्रेस ने कलेक्टर के नाम सौंपा ज्ञापन

समय जगत, सिवनी मालवा। ब्लॉक कांग्रेस के नेतृत्व में किसानों की खाद की समस्या को लेकर वरिष्ठ कांग्रेस नेता राधेश्याम पटेल ने कलेक्टर के नाम एसडीएम सरोज परिहार को ज्ञापन सौंपा। जिसमें मांग की गई हैं कि सिवनी मालवा में इफको का रैक प्वाइंट होने के बाद भी अभी तक यहां रैक क्यों नहीं दिया गया। सिवनी मालवा की सहकारी समितियों ने पहले ही समय रहते पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध कराने की मांग की थी। फिर भी समितियों तक मांग के अनुरूप खाद उपलब्ध नहीं कराया गया। जल्द से जल्द खाद की आपूर्ति की जाए। जिससे किसानों को आर्थिक हानि नहीं हो। इस दौरान राधेश्याम पटेल ने बताया कि वर्तमान समय में सिवनी मालवा के कई हिस्सों से यह खबरें आ रही हैं कि किसानों को समय पर आवश्यक खाद जैसे यूरिया, डीएपी, पोटाश आदि उपलब्ध नहीं हो पा रही है। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। क्योंकि खेती का एक-एक दिन बेहद कीमती होता है। खाद की अनुपलब्धता के कारण किसानों की फसलें प्रभावित हो रही हैं। जिससे उन्हें भारी आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। खाद की किल्लत के कारण किसानों को लंबी कतारों में खड़ा रहना पड़ता हैं। फिर भी उन्हें पर्याप्त मात्रा में खाद नहीं मिल पाती। ज्ञापन देने वालों में गोपाल कृष्ण शर्मा, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष विजय पटेल, कल्लू रघुवंशी मौजूद रहे।

आरोपी को न्यायालय के समक्ष पेश कर भेजा गया जिला जेल

शराब के पैसे नहीं देने पर पत्नी को उतारा मौत के घाट, पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

समय जगत खिरकिया। एक युवक ने अपनी पत्नि को कुल्हाडी मारकर मौत के घाट उतार दिया। जिसकी सूचना छीपाबड पुलिस को मिली खेडा छीपाबड वार्ड क्र 15 में एक घर के सामने वाले कमरे में एक महिला का शव पेट के बल ओधे मुह पडा है जिसकी पहचान परिजनों ने इन्द्राबाई पति रंजीत नाथ उम्र 48 साल निवासी वार्ड क्र.15 छीपाबड के रूप में की। महिला के शव की पंचनामा कार्यवाही की गई जो महिला के सिर पर गहरा घाव होकर खून निकल रहा था। मृतिका के शव पर सामने मुह के आस पास खून के छीटे व हल्के रगड जैसे निशान दिखाई दिये शव पंचनामा तैयार कर मौके पर देहाती नालसी अप.क्र. 0/25 धारा 103 (1) बीएनएस की लेख किया गया एंव फरियादिया राखी पति सचिन निसोदे निवासी छीपाबड ने बताया कि आरोपी रंजीत नाथ शराब पीने का आदी हैं जिसने इन्द्राबाई से शराब पीने के पैसे मांगे थे। मृतिका इन्द्राबाई द्वारा शराब पीने के लिए आरोपी रंजीत को पैसे न देने पर आरोपी ने कमरे में रखी कुल्हाडी उठाकर इन्द्राबाई को जान से खत्म करने के उद्देश्य से सिर पर वार किया बाद लगातार वार किये जिससे मृतिका इन्द्राबाई की मृत्यु हो गयी। फरियादिया की रिपोर्ट पर देहाती बालसी क्रमांक 0/25 धारा 103 (1) बीएनएस का कायम किया गया बाद असल अपराध क्रमांक 321/25 धारा 103 (1) बीएनएस का कायम कर विवेचना में लिया गया। घटना स्थल से भौतिक साक्ष्य जप्त किये गये एवं दिनांक 07/07/25 को आरोपी रंजीत पिता सजनलाल नाथ उम्र 50 वर्ष निवासी वार्ड क्रमांक 15 छीपाबड को गिरफ्तार कर आरोपी द्वारा पेश किये जाने पर घटना में प्रयुक्त आलाजरर लोहे की कुल्हाडी व घटना के समय पहने हुए कपडे पेश किये आरोपी द्वारा घटना में प्रयुक्त आलाजरर व घटना के समय पहने कपडे पुलिस द्वारा विधिवत जप्त कर कब्जे में लिया गया। उक्त कार्यवाही पुलिस अधीक्षक अभिनव चौकसे अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में एसडीओपी राबर्ट गिरवाल के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी आरपी कवरेती द्वारा अपराध क्रमांक 321/25 धारा 103 (1) बीएनएस के आरोपी रंजीत पिता सजनलाल नाथ उम्र 50 वर्ष निवासी वार्ड क्रमांक 15 छीपाबड तहसील खिरकिया जिला हरदा को दिनांक 07/05/25 को विधिवत गिरस्तार किया गया आरोपी रंजीत नाथ को माननीय न्यायालय खिरकिया के समक्ष पेश कर आरोपी को माननीय न्यायालय द्वारा जिला जेल हरदा भेजा गया।

स्वत्वाधिकारी, समय जगत मीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी द्वारा श्री बालाजी प्रिंटर्स प्लॉट नं. 21, सेक्टर-एच, गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, भोपाल 462011 से मुद्रित कर जी-1 गोयल निकेत अपार्टमेंट प्रेस कॉम्पलेक्स जोन-1 एमपी नगर भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। पिन नं. 462011, संपादक **अभिनव त्रिपाठी।**
RNI-MPHIN/2004/13180 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। **फोन :** 0755-4700402, ई-मेलः dainiksamayjagat@gmail.com

निर्धन परिवारों का होगा आर्थिक सत्यापन : डीएम

बच्चों को न्यूनतम शुल्क पर निकट के स्कूल में मिलेगा एडमिशन

समय जगत, ललितपुर। कलैक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी की अध्यक्षता में विशेष नामांकन अभियान के अन्तर्गत की गयी बैठक में दिये गये निर्देशों के अनुपालन की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने विगत सत्र 2024-25 में कक्षा 8 उत्तीर्ण सभी विद्यार्थियों का कक्षा 9 में प्रवेश सुनिश्चित कराने, विगत 03 वर्ष में किसी भी कक्षा को उत्तीर्ण करने के बाद पढ़ाई छोडने़ वाली 12 से 18 वर्ष की बालिकाओं का संगत कक्षा में प्रवेश सुनिश्चित कराने तथा कक्षा 01, 06 व 09 में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को कन्या सुमंगला योजनान्तर्गत शत-प्रतिशत लाभ दिलाये जाने, अनुसूचित जन जाति की बालिकाओं को समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ दिलाये जाने के हेतु निर्देश दिए। डीआईओएस द्वारा वर्तमान सत्र में कक्षा-9 में प्रवेश लेने वाले एवं विगत वर्ष में कक्षा 8 में पढने़ वाले बच्चों का विकास खण्ड वार डाटा जिलाधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया गया तथा समस्त नोडल अधिकारियों ने अपने-अपने विकासखण्ड के 02-02 ग्रामों के कक्षा-8 उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं तथा विगत वर्षो में किसी भी कक्षा को उत्तीर्ण करने के उपरान्त पढ़ाई छोडने़ वाली बालिकाओं के अब तक प्रवेश नहीं लेने सम्बन्धी आख्या प्रारूप पर प्रस्तुत की गयी। डीएम ने सभी बीईओ व सीडीपीओ से ब्लाक वार 02-02 ग्रामों की प्रस्तुत प्रवेश लेने वाले एवं प्रवेश नहीं लेने वाले छात्र-छात्राओं के सम्बन्ध में समीक्षा की गयी।

ब्लाक स्तरीय अधिकारियों ने जिलाधिकारी को समीक्षा के दौरान संज्ञानित कराया गया कि अधिकतर छात्र-छात्राओं के परिजनों ने आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण प्रवेश नहीं लेने के सम्बन्ध में अवगत कराया गया। डीएम ने निर्देशित किया कि उक्त स्थिति संगत प्रतीत नहीं होती है ऐसे परिवारों का आर्थिक सत्यापन सम्बन्धित विकासखण्ड के खण्ड विकास अधिकारियों के माध्यम से कराकर शासन द्वारा संचालित योजना का लाभ दिलाया जाये एवं उनकी आर्थिक कठिनाईयों का यथोचित समाधान कराया जाये। यदि आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के दृष्टिगत छात्र-छात्राओं द्वारा प्रवेश नहीं लिया जा रहा है तो डीआईओएस निकटतम विद्यालय के प्रधानाचार्य से वार्ता कर न्यूनतम शुल्क पर ऐसे छात्र-छात्राओं का प्रवेश कराना सुनिश्चित करें। डीएम ने यह भी निर्देशित किया गया कि जिन बच्चों के आधार कार्ड, जन्म प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र नहीं बने हैं अथवा उपरोक्त प्रमाण-पत्रों में संशोधन होना अपेक्षित हो कि ग्रामवार, विद्यालयवार सूची बनाकर खण्ड शिक्षा अधिकारी के द्वारा सम्बन्धित तहसील के उप जिलाधिकारी को उपलब्ध करायी जाये तथा समन्वय करके उनके उपरोक्त प्रमाण-पत्र वरीयता पर बनवाये जायेंगे। खण्ड शिक्षा अधिकारियों ने अवगत कराया कि कुछ बच्चों के मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण उनके माता-पिता उन्हें प्रवेश दिलाने के लिए तैयार नहीं है जिसके सम्बन्ध में जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि ऐसे बच्चों की ग्रामवार सूची तैयार कर आगामी बैठक में प्रस्तुत की जाये जिससे उनके स्वास्थ्य परीक्षण के सम्बन्ध में सीएमओ से वार्ता कर छात्र-छात्राओं के चिकित्सीय परीक्षण के सम्बन्ध में कार्ययोजना बनाकर अग्रेतर कार्यवाही सुनिश्चित की जा सके। डीएम ने बीएसए को निर्देशित किया गया कि मानसिक रूप से कमजोर बच्चों हेतु समग्र शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षा की व्यवस्था के प्राविधान हेतु ललितपुर में विशेष कैम्प संचालन हेतु महानिदेशक, स्कूल शिक्षा लखनऊ को पत्राचार प्रस्तुत करें। आगामी बैठक में कक्षा-8 उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के प्रवेश सम्बन्धी सूचना को यू-डायस डाटा के अनुसार ही ब्लाकवार संकलित कर प्रस्तुत की जाये। बीएसए को यू-डायस के अनुसार ब्लाकवार डाटाशीट बैठक से 02 दिन पूर्व डीआईओएस को उपलब्ध करायेंगे जिससे सूचना को डीआईओएस द्वारा आगामी बैठक में प्रस्तुत किया जा सके। विशेष नामांकन की बैठक में बीईओ नगर क्षेत्र नीतू द्वारा लक्ष्य शिक्षक गुणवत्ता संप्राप्ति प्रोजेक्ट का प्रदर्शन किया गया, जिसमें स्कूलों में शैक्षिक गुणवत्ता को सुधारने में किए गये प्रयासों को बताया गया।

इसके अंतर्गत सीएसआर फण्ड से विद्यालय में फर्नीचर टॉयलेट एवं लाइब्रेरी की स्थापना एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रोजेक्ट के अंतर्गत एक लक्ष्य नामक पत्र भी इतब से निकाला गया जिसमें अध्यापकों द्वारा शिक्षक के संबंध में किया जा रहे विशेष कार्य नवाचार एवं बच्चों की पेंटिंग, कविता, सुलेख आदि प्रकाशित की जाती थी, लक्ष्य प्रोजेक्ट के संचालन से विकास खंड में एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं शैक्षिक गुणवत्ता की दिशा में उल्लेखनीय सुधार हुआ। बैठक में डीडीओ अतिरंजन सिंह, बीएसए, कृषि अधिकारी, डीएसओ, प्रोबेशन अधिकारी, प्रभारी डीपीओ, माध्यमिक शिक्षा विभाग के नामित ब्लाक स्तरीय अधिकारी, समस्त विकासखण्ड के खण्ड शिक्षा अधिकारी एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी सहित जिला समन्वयक (प्रशिक्षण), जिला समन्वयक (सामुदायिक सहभागिता) उपस्थित रहे।

पेंशनर्स एसोसियेशन की बैठक संपन्न

समय जगत, निवाड़ी। गया के हनुमान जी मंदिर प्रांगण पृथ्वीपुर में पेंशनर्स की बैठक का आयोजन पेंशनर्स एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष गोटी राम अहिरवार के मुख्य आतिथ्य में एवं महामंत्री बृजेश द्विवेदी जी , कार्य कारी अध्यक्ष एडवोकेट विनोद वर्मा, तहसील अध्यक्ष निवाड़ी श्री आर पी तिवारी के विशिष्ठ आतिथ्य में किया गया । तहसील पृथ्वीपुर की कार्यकारिणी द्वारा सभी अतिथियों और पेंशनर्स का फूल मालाओं से स्वागत किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ नाथूराम मनकेरे पेंशनर्स के मधुर बांसुरी वादन से किया गया तथा उन्होंने एक गीत भी प्रस्तुत किया । इसके पश्चात राजेंद्र प्रसाद मिश्रा सेवा निवृत प्राचार्य, हल्के राम वर्मा सेवा निवृत हेड मास्टर, आरसी जैन सेवा निवृत प्रधानाध्यापक, आर पी तिवारी, एडवोकेट नाथूराम अहिरवार विधि सलाहकार, श्री सोनी जी आदि ने पेंशनर्स की विभिन्न समस्याओं की संदर्भ में अपने विचार प्रकट किये । रामचरण वर्मा द्वारा मानवता के आधार पर गीत प्रस्तुत किया गया तथा एमपी अहिरवार ब्लॉक अध्यक्ष तहसील निवाड़ी द्वारा भी मधुर कण्ड से आध्यात्मिक गीत को प्रस्तुत किया गया । अन्य पेंशनर्स ने भी संक्षिप्त में अपने विचार प्रकट किए । जिला अध्यक्ष गोटी राम ने कहा कि संगठन को और अधिक मजबूत करने के लिए भरसक प्रयास किए जाएंगे और मीटिंग करके पेंशनर्स को जागरूक किया जाएगा । तहसील अध्यक्ष पृथ्वीपुर ओपी श्रीवास्तव ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हर माह में बैठक करके पेंशनर को जागरूक करने का प्रयास निरंतर जारी रहेगा । कार्यक्रम में द्वारका प्रसाद अहिरवार, चिंतामणि अहिरवार, मनीराम खंगार, एच एल अहिरवार , एन आर भारती, दयाराम अहिरवार, मदन प्रसाद अहिरवार, मुन्नालाल अहिरवार, बलदेव प्रसाद अहिरवार, गोरेलाल अहिरवार, बी एल अहिरवार , झब्बे लाल अहिरवार, छेदेलाल कोरी, ब्रजलाल बेड़िया, कैलाश चंद अहिरवार, जे एल अहिरवार आदि पेंशनर्स उपस्थित रहे । कार्यक्रम का संचालन एडवोकेट विनोद बाबू वर्मा द्वारा किया गया तथा पेंशनर्स की विभिन्न समस्याओं के संबंध में विचार प्रकट करते हुए कहा कि पेंशनर्स एकजुट रहे, जिससे अपने हितों की सुरक्षा की जा सके । वरना सरकार कभी भी कुठाराघात कर सकती है ।अंत में ब्लॉक अध्यक्ष पृथ्वीपुर नाथूराम अहिरवार द्वारा सभी अतिथियों और पेंशनर्सन का हृदय से आभार व्यक्त किया ।

कारवां टॉकीज अभियान का उत्साहजनक समापन

समय जगत, ललितपुर। चार दिवसीय जॉइन इंडियन आर्मी - कारवां टॉकीज अभियान का समापन जिले में देशभक्ति, उद्देश्य और जनसहभागिता की सशक्त अभिव्यक्ति के साथ हुआ। अंतिम चरण में वर्णी जैन इंटर कॉलेज एवं जीआईसी में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जहां बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, शिक्षकगण और स्थानीय युवा सेना की सेवा भावना और अवसरों के संदेश से सीधे जुड़े। यह अभियान भारतीय सेना के भर्ती निदेशालय की संकल्पना पर आधारित था और मुख्यालय भर्ती जोन लखनऊ के तत्वावधान में एआरओ आगरा द्वारा अत्यंत कुशलता से जमीन पर कार्यान्वित किया गया। अभियान ने बीते चार दिनों में ललितपुर ज़िले के कई शैक्षणिक संस्थानों और ग्रामीण क्षेत्रों को प्रभावी रूप से कवर किया-उन हजारों युवाओं तक पहुंचते हुए, जिन्होंने पहले कभी सेना में करियर के विकल्पों को इतने निकट से नहीं जाना था। विशेष रूप से डिजाइन किए गए कारवां टॉकीज वाहन, जिसमें एलईडी स्क्रीन, सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली और प्रेरणादायक दृश्य सामग्री थी, ने युवाओं को सेना के और करीब लाया। अनुशासन, ईमानदारी और राष्ट्र सेवा जैसे मूल्यों की झलक दिखाते हुए सेना अधिकारियों ने छात्रों के साथ प्रत्यक्ष संवाद कर अग्निवीर, तकनीकी और अधिकारी स्तर की प्रवेश योजनाओं की गहराई से जानकारी साझा की। मौके पर ही ऑनलाइन पंजीकरण में मदद और सूचना-पत्रकों का वितरण किया गया। अंतिम दिन के संवाद विशेष रूप से अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों में उल्लेखनीय उत्साह के साथ संपन्न हुए। सेना प्रतिनिधियों ने बिचौलियों और एजेंटों के विरुद्ध अपनी जीरो टॉलरेंस नीति को दोहराया और युवाओं से केवल आधिकारिक, पारदर्शी एवं निरूशुल्क भर्ती प्रक्रियाओं पर भरोसा रखने का आह्वान किया। युवतियों को शामिल कर समावेशिता को भी महत्व दिया गया, जिससे उन्हें राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित किया जा सके। पूरे अभियान के दौरान एआरओ आगरा का सटीक, व्यापक और संवादपूर्ण निष्पादन अत्यंत सराहनीय रहा। प्रत्येक गांव और संस्था तक पहुंच सुनिश्चित की गई, जिससे कोई क्षेत्र अछूता न रहे। शिक्षकगण और स्थानीय नेताओं ने इस पहल को दूरदर्शी, समयोचित और गहराई से प्रेरक बताया। जैसे ही यह प्रभावशाली जनसंपर्क यात्रा अपने समापन पर पहुंचती है, भारतीय सेना एक बार फिर योग्यता-आधारित चयन, समान अवसर, और अभ्यर्थी-केंद्रित सुधारों के प्रति अपने संकल्प को दोहराती है। ललितपुर में कारवां टॉकीज की यह विरासत उन सभी युवाओं के दिलों में अंकित हो जाएगी।

कवि पंकज पंडित के साथ डिजिटल खिड़की ने मंच देने के लिए किया अनुबंध

ललितपुर। ताज नगरी आगरा बीते एक सप्ताह से देश भर के कवियों के लिए जिज्ञासा का केंद्र रही। आगरा में आयोजित काव्य लेखन व प्रस्तुति कार्यशाला का जिसमें देशभर के कई अल्पज्ञात व प्रतिभावान कवि कवयित्री शामिल हुए। कार्यशाला का उद्देश्य युगकवि डा.कुमार विश्वास के निर्देशन में सभी कवि कवयित्रियों को कवि सम्मेलन जगत में सफलता का सूत्र समझाकर उनकी प्रतिभा को मंच देना था। ललितपुर जनपद के युवा ओजस्वी कवि पंकज पंडित के साथ देश के अन्य कवि भी डिजिटल खिड़की से अनुबंधित हैं। इस दौरान अन्य मेंटर्स में कवयित्री कविता तिवारी, कवि रमेश मुस्कान, कवि कुलदीप अंगार, कवि दिनेश बावरा, कवि ज्ञानप्रकाश आकुल, कवि सुदीप भोला रहे।

डम्पर से कुचलकर गौवंशों की मौत पर भारी आक्रोश

गऊ पुत्र सेना ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

समय जगत, ललितपुर। शनिवार की देर रात तेज रफ्तार डम्फरों द्वारा गौवंश को रौंदे जाने की हृदयविदारक घटना पर कड़ी कार्यवाही किये जाने की मांग को लेकर गऊ पुत्र सेना ने अध्यक्ष प्रशान्त शुक्ला के नेतृत्व में एक ज्ञापन जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी को सौंपा है। ज्ञापन में बताया कि जिले के ग्राम मिर्चवारा के पास बजाज पावर प्लांट की ओर से संचालित तेज रफ्तार राख ले जा रहे डम्फर ने एक हृदय विदारक दुर्घटना में आधा दर्जन से अधिक गौवंश को बेरहमी से रौंद दिया गया, जिनमें कई की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई तथा कुछ गंभीर रूप से घायल होकर तड़पती रही। यह कोई पहली पटना नहीं है। बजाज पावर प्लांट के भारी वाहन, विशेषकर राख से भरे डंफर, लगातार तेज गति से सामीण क्षेत्रों से गुजरते हैं, जिससे आमजन के साथ-साथ निरपराध पशु-पक्षियों की जान पर संकट बना रहता है। उक्त घटना से गौसेवकों के साथ स्थानीय लोगों में आरी आक्रोश है, मौके पर आक्रोश प्रकट किया। लेकिन प्रशासन की ओर से अभी तक कोई त्वरित राहत अथवा ठोस कार्यवाही देखने को नहीं मिली है। गऊ पुत्र सेना ने अपनी मांगों को रखते हुये बताया कि बजाज पावर प्लांट के संबंधित डंफर चालक व पी.के. सिंह स्थानीय अधिकारी बजाज पावर प्लांट के साथ प्रबंधन के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर कठोर दंडात्मक कार्यवाही की जाए। भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृति रोकने हेतु तेज रफ्तार वाहनों पर अंकुश लगाने के लिए स्पीड लिमिट, सीसीटीवी से निगरानी और वाहन चेकिंग कैम्म लगाए जाएं। घायल गौवंश का तत्काल चिकित्सकीय उपचार सुनिश्चित किया जाए। मृत गौवंशों का विधिपूर्वक अंतिम संस्कार एवं पंचायत स्तर पर रिपोर्ट तैयार कर उचित मुआवजा घोषित किये जाने और इस क्षेत्र को गौ-संवेदनशील क्षेत्र घोषित कर पशुधन के संरक्षण हेतु विशेष निगरानी दल गठित किया जाए। गौसेवकों ने जिलाधिकारी को अवगत कराया कि यह विषय केवल कानून का नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं एवं सनातन मूल्यों का भी है। गौसेवकों ने आह्वान किया कि इस विषय को गंभीरता से संज्ञान में से और शीघ्र न्यायसंगत कार्यवाही सुनिश्चित की जाये। ज्ञापन देते समय अध्यक्ष प्रशान्त शुक्ला, मनीष दुबे, उमेश सुड़ेले, विकास झां, शुभम पस्तोर, दीपक नायक, हरेन्द्र राजा, विक्की बाबा, मोनू सेन, दुष्यन्त सिंह, वासुदेव पटवा, दीपेश उपाध्याय, संजय कटारे, दीपक पस्तोर, गौरव, अविनाश, शैलेन्द्र परिहार, अभिषेक परिहार, आकाश, रोहित कुमार, मयूर के अलावा अनेकों लोग मौजूद रहे।

पानी सड़क पर बहते देखते रहने की आदत हो गई है निवाड़ी नगर को

समय जगत, निवाड़ी। बड़ा तालाब जब भर जाता था और पानी रिलीज करना होता रहता था सिंचाई के लिए या ओवर फ्लो होने पर जिससे बांध ना फट जाये या रिस जाये और कोई बड़ी दुर्घटना हो जाये सडक जाम हो जाये क्योंकि बांध निवाड़ी टीकमगढ़ मैन रोड पर बना हुआ है और बहुत पुराना है जिस पर पार्क बनाने के नाम पर कभी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी पार्क सेनानियों की प्रतिमाएँ लगना थीं कभी सुंदरीकरण झूला सरकन पट्टी आदि चाहे कांग्रेस की सरकार के समय का चाहे भाजपा की सरकार के समय का पर दिखता थोड़ा बहुत ही है बाकी सब नगर परिषद का जो बढ़ा पेट है उसमें चला जाता है खैर ये तो कहानी सभी जगह चलती है हम इंज कर रहे थे नहर की जिसने आज कल नाली का रूप ले लिया है जो अपने प्राचीन रूप को खो चुकी है सड़क के दूसरे ओर जाते ही बहुत छोटी हो गई है इसी कारण 20फ़ीट की सडक हमेशा पानी से सरोबार रहती है कभी भी कोई भी घटना दुर्घटना हो सकती है साफसुथरे कपडे पहन कर आप पैदल या वाईक से हैं तो गंदे पानी के छिंटों से आप को गीला होना ही है जिले के कलेक्टर महोदय से ले कर सभी अधिकारी निर्वाचित जन प्रतिनिधि सांसद जी विधायक जी अध्यक्ष जी आदि सभी का निकलना रहता है पर समस्या का समाधान नहीं है नगर परिषद सफाई तो कराती है कई बार नहर रूपी नाली मेँ सफाई कर्मी उतर कर भी सफाई करते देखे गये हैं पर पानी जाने का रास्ता बहुत चौड़ा हो और निकलने का उससे आधा रह जाये तो पानी तो ऊपर से निकल कर बहेगा ही बहुत गन्दा लगता है जिला की शान में फीका दिखता प्रसासन का ध्यान अपेक्षित है ।

कागज फैक्ट्री में अचानक भीषण आग लगने से लाखों का माल जला

समय जगत, उरई। कालपी कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत रामगंज मोहल्ले में स्थित विजय गुप्ता की कागज फैक्ट्री में सोमवार सुबह अचानक भीषण आग लग गई। आग लगते ही फैक्ट्री में अफरा-तफरी मच गई। फैक्ट्री के कर्मचारियों ने तत्काल बाहर भागकर अपनी जान बचाई और घटना की सूचना पुलिस व दमकल विभाग को दी।सूचना मिलते ही कालपी से दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। आग की लपटें इतनी भयंकर थीं कि कुछ ही मिनटों में पूरी फैक्ट्री को अपनी चपेट में ले लिया। फैक्ट्री में बड़ी मात्रा में कच्चा और तैयार कागज, लकड़ी, मशीनें और अन्य ज्वलनशील सामग्री होने के चलते आग तेजी से फैलती चली गई। कड़ी मशक्कत के बावजूद दमकल कर्मियों को आग पर काबू पाने में काफी समय लगा।दमकल विभाग और प्रशासनिक अमला मौके पर मौजूद है और स्थिति पर नजर बनाए हुए है। फायर टीम द्वारा आग के कारणों की जांच की जा रही है। हालांकि प्रारंभिक जांच में शॉर्ट सर्किट की आशंका जताई जा रही है, लेकिन आधिकारिक रूप से कारणों की पुष्टि नहीं हुई है। घटना के समय फैक्ट्री के अंदर कोई श्रमिक हताहत नहीं हुआ, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया।फैक्ट्री मालिक विजय गुप्ता ने बताया कि फैक्ट्री में लाखों रुपये का माल और मशीनें मौजूद थीं, जो जलकर खाक हो गईं। प्रशासन नुकसान का आंकलन करने में जुटा है। फिलहाल आग पर काबू पा लिया गया है लेकिन फैक्ट्री को भारी नुकसान हुआ है। प्रशासन ने घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं।

एसपी ने गूगल मीट से अपराध व कानून व्यवस्था की बैठक की

सावन मास व कांवड़ यात्रा में तैनात होगा पर्याप्त पुलिस बल

ललितपुर। पुलिस अधीक्षक मो.मुश्ताक ने गूगल मीट के माध्यम से जनपद के समस्त राजपत्रित अधिकारियों, थाना, शाखा प्रभारियों के साथ अपराध एवं कानून-व्यवस्था व आगामी त्यौहार के सम्बन्ध में जूम मीटिंग कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। समस्त क्षेत्राधिकारियों व थाना प्रभारियों को निर्देशित किया कि सावन माह के दृष्टिगत अपने-अपने क्षेत्रों के सम्भ्रान्त व्यक्तियों एवं धर्मगुरुओं से संवाद स्थापित कर, पीस कमेटी की मीटिंग आयोजित कर शासन के आदेशों-निर्देशों का अक्षरशरू अनुपालन सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया। सावन माह के दौरान कांवड यात्रा के दृष्टिगत तथा मन्दिरों/शिवालयों में पर्याप्त पुलिस बल लगाकर त्योहार को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु दिशा-निर्देश दिये। लूट, डकैती, नकबजनी, चोरी, झपटमारी के अपराधों से सम्बन्धित, विशेष अभियान चलाकर अपराधियों का सत्यापन करने व घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही कराने तथा रात्रि में प्रभावी रूप से चेकिंग/गस्त करने हेतु निर्देशित किया। जिले में कानून-व्यवस्था को सुदृढ बनाने के उद्देश्य से प्रत्येक थाना क्षेत्र में शराब के ठेकों, ढाबों, हाईवे पर अधिक से अधिक संख्या में गुणवत्तापूर्ण सीसीटीवी कैमरे लगवाने तथा उनकी चौकिंग करने हेतु निर्देशित किया। समस्त थाना/चौकी प्रभारियों को 07 दिवसीय अभियान चलाकर किरायेदारों का सत्यापन करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। आईजीआरएस पोर्टल/जनसुनवाई पर प्राप्त शिकायतो की प्रतिदिन समीक्षा कर, उनका उचित, समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराकर आवेदक की समस्या का शत-प्रतिशत निराकरण करने व शिकायतकर्ता से शत -प्रतिशत फीड बैक लेना सुनिश्चित करें। आगामी पंचायती चुनाव के दृष्टिगत समस्त सीओ व थाना प्रभारी अपने- अपने थाना क्षेत्रों में जनचौपालों का आयोजन कर आसामाजिक प्रवृत्ति के लोगों को चिन्हित कर उनके विरूद्ध आवश्यक निरोधात्मक कार्यवाही करने के लिए निर्देश दिये। अपराधियों की हिस्ट्रीशीट खोलने के लिये समस्त थाना/चौकी प्रभारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। अवैध शस्त्रों, अवैध शराब निर्माण व बिक्री, जुआ, सट्टा आदि प्रकार के अवैध कार्य में प्रभावी कार्यवाही करना सुनिश्चित करे। लम्बित विवेचनाओं का गुणदोष के आधार पर निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया गया। जनपद में वांछित/पुरस्कार घोषित अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

जनपद में यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने रखने हेतु समस्त थाना प्रभारी/यातायात प्रभारी प्रतिदिन बिना नम्बर प्लेट वाहनों की प्रभावी चौकिंग करने तथा वाहनों में निर्धारित क्षमता से अधिक सवारी बैठाने, हेलमेट/सीट बेल्ट का उपयोग न करने वाले तथा रोड़ पर स्टंटबाजी करने वाले वाहन चालको /स्वामियों के विरूद्ध आवश्यक वैधानिक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया।

उप मुख्यमंत्री से की अधिवक्ताओं के लिए चैम्बर्स निर्माण हेतु पुनः पांच करोड़ रुपए की धनराशि स्वीकृत किए जाने की मांग

समय जगत, झांसी। कलैक्ट्रेट परिसर में कन्ट्रोल रूम के निकट पुराने जीर्ण-शीर्ण जिला अधिवक्ता संघ के भवन के स्थान पर अधिवक्ताओं के लिए चैम्बर्स निर्माण हेतु पुनः पांच करोड़ रुपए की धनराशि स्वीकृत किए जाने की मांग एक बार फिर उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक से की गयी है। सोमवार को लखनऊ में श्री पाठक के आवास पर भेंट करते हुए जिला अधिवक्ता संघ के पूर्व कार्यकारिणी सदस्य राजेश कुमार चौरसिया एड ने बताया कि पूर्व कानून मंत्री व वर्तमान में उप मुख्यमंत्री श्री पाठक द्वारा कोरोना काल के पूर्व कलैक्ट्रेट परिसर स्थित जिला अधिवक्ता संघ के भवन के स्थान पर अधिवक्ताओं के चौम्बरों हेतु पांच करोड़ की धनराशि स्वीकृत/अवमुक्त की गयी थी। स्थानीय अधिकारियों की लापरवाही व रूचि न लिए जाने के कारण करीब 04 करोड़ 35 लाख रुपए की धनराशि लैंप्स (वापस)हो जाने से अधिवक्ताओं में खासा रोष व्याप्त है। उक्त भवन की छत कई स्थानों से दरक कर गिर रही है, कभी भी अनहोनी व जनहानि हो सकती है। उन्होंने श्री पाठक से चौंबर्स निर्माण हेतु पुनः पांच करोड़ की धनराशि शीघ्रता शीघ्र स्वीकृत/अवमुक्त कराए जाने की मांग की है ।

न्यायालय परिसर में हुआ वृक्षारोपण

समय जगत, निवाड़ी। न्यायालय परिसर में जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री मती प्रवीणा व्यास के मार्गदर्शन में अपर सत्र न्यायाधीश श्री एस के गुप्ताप्रथम एवं श्री रवि प्रकाश जैनद्वितीय एवं व्यवहार न्यायाधीश श्री मनीष छापरिया एवं व्यबहार न्यायाधीश श्रीमती सोनम वर्मा के निर्देशन में अधिवक्ता संघ द्वारा ब्रच्छा रोपण सम्पन्न हुआ ।

जिसमें अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री शील प्रकाश रावत सचिव श्री अनुराग नायक श्री राजुल शेखर एडवोकेट श्री ओ पी खरे श्री दीपक नीखरा सहित अन्य अधिवक्ता एवं न्यायालय स्टॉफउपस्थित रहा ।

विद्यालय समायोजन को लेकर सपा ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

समय जगत, उरई। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित परिषदीय विद्यालयों के समायोजन (मर्जर) के फैसले का समाजवादी पार्टी ने कड़ा विरोध जताया है। पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष दीपराज गुर्जर सपा सांसद नारायण दास अहिरवार के नेतृत्व में जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन किया और जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा।

सच्चे राष्ट्रवादी थे डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी : हरगोविंद कुशवाहा

समय जगत, टहरौली (झांसी) डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्ठी का आयोजन आदर्श जनप्रिय इंटर कॉलेज टहरौली में भारतीय जनता पार्टी के टहरौली मंडल के द्वारा किया गया। जिसके मुख्य अतिथि हरगोविंद कुशवाहा अध्यक्ष अंतरराष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान राज्य मंत्री रहे । सर्वप्रथम संगोष्ठी का शुभारंभ डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर मुख्य अतिथि के द्वारा माल्यार्पण करके किया गया ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि हरगोविंद कुशवाहा ने कहा कि डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक महान शिक्षाविद, राजनेता एवं जन संघ के संस्थापक थे उनका जन्म बंगाली परिवार में 1901 में कोलकाता में हुआ था डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी 33 वर्ष की उम्र में कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति बने जो उस समय सबसे कम उम्र के कुलपति थे । डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया 1947 में जवाहरलाल नेहरू सरकार में उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री बने । 1951 में उन्होंने राष्ट्रवादी मूल्य ,एकात्मक मानववाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी एवं सर्वोदय के सिद्धांत को लेकर भारतीय जनसंघ की स्थापना की । जनसंघ की स्थापना प्रो बलराज मधोक एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के साथ मिलकर की । उन्होंने जम्मू और कश्मीर को भारत में पूरी तरह से एकीकृत करने के लिए एक विधान, एक निशान ,और एक प्रधान का नारा दिया था । सन 1953 में जम्मू और कश्मीर में प्रवेश करने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया बाद में उनकी रहस्यमयी परिस्थितियों में मौत हो गई । आज के परिवेश में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचार बहुत ही प्रासंगिक हैं । उनके सिद्धांतों पर चलकर हमें देश को विश्व गुरु बनाना है इस मौके पर रजनीश कंजर मंडल अध्यक्ष ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की ।

इस अवसर पर करन सिंह पटेल मढ़ा डिलावली, सुरेश कुमार, हरीश सोनी जिला कोषाध्यक्ष, राघवेंद्र बुंदेला , विजय प्रताप सिंह बुन्देला मंडल कोषाध्यक्ष, जयहिन्द बुन्देला मबई, अशोक कुशवाहा , हुकुम सिंह राजपूत मंडल महामंत्री , लाखन सिंह कुशवाहा, करण सिंह भदोरिया ताई, अमित व्यास मंडल उपाध्यक्ष, राघवेंद्र सोनी, शत्रुघ्न बुंदेला, अशोक कुमार मिश्रा , राघवेन्द्र विक्की सोनी, मानवेंद्र कुशवाहा, आनंद सेन, योगेश व्यास,प्रभाकर कुशवाहा, रामनरेश पटेल , शत्रुघ्न सिंह बुंदेला , रामजी पटेल बेंदा, सुखलाल कुशवाहा डायरेक्टर जिला सहकारी विकास संघ, एडवोकेट दीपक दुबे, रामस्वरूप पटेल, सुमित व्यास, आलोक पटेल, रामनरेश पटेल, करण सिंह पटेल, दिनेश सिंह सेंगर, अंशुल पांडे, अनिल मिश्रा नीबूजा, प्रभाकर कुशवाहा, प्रदीप राजपूत, कुलदीप पटेल पसराई, मानवेन्द्र सिंह कुशवाहा, भूपेन्द्र पटेल, यशपाल रायकवार, संदीप पाठक, मानवेन्द्र सिंह आदि उपस्थित रहे । बैठक का संचालन आशीष उपाध्याय ने किया। आभार मंडल अध्यक्ष रजनीश कंजर ने व्यक्त किया।

बूथ लेवल अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण शिविर किया आयोजित

कोई भी पात्र व्यक्ति मतदाता सूची में नाम जुड़वाने से न रहे वंचित

समय जगत, धौलपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीनिधि बी टी के निर्देशन में जिलेभर में 3 जुलाई से 17 जुलाई के मध्य विद्यानसभा निर्वाचन क्षेत्र स्तर पर बीएलओं का 50-50 के बैच में एक दिवसीय प्रशिक्षण कराया जा रहा है। इसी क्रम में धौलपुर विधानसभा क्षेत्र के बीएलओ का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। विधानसभा क्षेत्र धौलपुर में बूथ लेवल अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण शिविर की शुरुआत सोमवार को नगर परिषद सभागार में हुई। प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी एवं एसडीएम डॉ साधना शर्मा द्वारा किया गया। मुख्य निर्वाचन अधिकारी, निर्वाचन विभाग जयपुर के निर्देशानुसार आयोजित इस शिविर में विधानसभा स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स द्वारा बीएलओ को मतदाता सूची से संबंधित कानूनी प्रावधान, फॉर्म भरने की प्रक्रिया, केस स्टडी, बीएलओ ऐप तथा वीएचए ऐप के माध्यम से ऑनलाइन फार्म भरने जैसे विषयों पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया।पात्र मतदाताओं का शत-प्रतिशत पंजीकरण सुनिश्चित करें। शिविर की शुरुआत में एसडीएम डॉ साधना शर्मा ने उपस्थित बीएलओ को संबोधित करते हुए कहा कि सभी बीएलओ त्रुटिरहित मतदाता सूची तैयार करने के उद्देश्य से अपने कार्यों का गंभीरता से निर्वहन करें और अद्यतन एवं पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत पात्र मतदाताओं का शत-प्रतिशत पंजीकरण सुनिश्चित करें। प्रशिक्षण उपरान्त प्रतिभागियों की वीडियो बाइट्स ली जिसे जिला निर्वाचन अधिकारी के सोशल मीडिया हैण्डस पर ईसीआई एवं सीईओं राजस्थान को टैग करते हुए अपलोड किए गए।

निर्वाचन विभाग के दिशा-निर्देशों पर कार्य करने के निर्देश दिए

निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी एवं एसडीएम डॉ साधना शर्मा ने बीएलओ दायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाने का आह्वान किया साथ ही उन्होंने बीएलओ ऐप की उपयोगिता और निर्वाचन विभाग के दिशा-निर्देशों पर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने बीएलओ को निर्वाचन से संबंधित कार्यों को समयबद्ध और जिम्मेदारी से पूरा करने तथा अपने पदीय दायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाने का आह्वान किया। प्रशिक्षण शिविर का संचालन प्रशिक्षक अतुल चौहान द्वारा किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 14 जुलाई तक विभिन्न दिवसों में आयोजित किया जाएगा। शिविर में मास्टर ट्रेनर्स अतुल चौहान, देवेंद्र बघेला और बालमुकुंद बंसल द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस अवसर पर उपखंड कार्यालय के बृजमोहन कुलश्रेष्ठ, पुनीत, चुनाव मीडिया सेल स्वीप के व्याख्याता भगवान सिंह मीना सहित अन्य मौजूद थे।

भ्रष्टाचार की शिकायत करना किसानों को पड़ा महंगा एसडीएम ने दोनों किसानों को कस्टडी में बैठाया

9 माह से परेशान किसानों ने कानूनगों के द्वारा 50 हजार रुपये की रिश्वत मांगने की शिकायत की थी

समय जगत हमीरपुर। जनपद की राठ तहसील परिसर का एक भ्रष्टाचार से जुड़ा मामला सामने आया है। जहाँ बीते 9 माह से परेशान किसानों के द्वारा तहसील परिसर में तैनात एक कानूनगो के द्वारा किए जा रहे भ्रष्टाचार और 50 हजार रुपये की रिश्वत मांगने की शिकायत करना महंगा पड़ गया। किसानों का आरोप है कि कानूनगों की शिकायत मिलते ही उप जिलाधिकारी उन किसानों पर ही फर्जी शिकायत करने का आरोप लगाते हुए उन्हें कस्टडी में बैठा दिया।

राठ तहसील परिसर में वकालत करने वाले अधिवक्ता राजेंद्र कुमार महान ने बताया कि उन्होंने अक्टूबर माह वर्ष 2024 में तीन पत्रावलियां हदबंदी के लिए डाली थी।बताया कि उपजिलाधिकारी के यहां से हदबंदी पैमाइश के लिए आदेश भी हो गया था तथा उसके बाद सभी पत्रावलियां राठ तहसील में तैनात कानूनगों के यहां चली गई थीं।इसके बाद जब काफी समय बीतने के बाद पैमाइश नहीं हुई तो वह कानूनगों से मिलने के लिए पहुंचे तो कानूनगों ने उन्हें रिश्वत के लिए इशारा किया। वहीं राठ कोतवाली क्षेत्र के नवैनी गांव के निवासी किसान उदयभान पुत्र फूलसिंह व किसान छंगा और गोपीचंद ने बताया कि उन लोगों ने मौजा चिल्ली के गाटा संख्या 1907 और 1908 में अपने खेतों की पैमाइश और हदबंदी कराने के लिए अधिवक्ता के माध्यम से पत्रावलियां दाखिल की थीं। बताया कि पैमाइश का आदेश होने के बाद भी स्थानीय कानूनगों उनके खेत की पैमाइश नहीं कर रहा था।आरोप लगाते हुए कहा कि स्थानीय कानूनगों ने पैमाइश करने की एवज में उन लोगों से 50 हजार रुपये की मांग की। बताया कि जब उनके सब्र का बांध टूट गया तो आज शनिवार को आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में वह लोग उक्त कानूनगों की शिकायत करने के लिए पहुंचे जहां पर एसडीएम ने उन्हें हड़काते हुए कस्टडी में बैठा दिया।हालांकि कुछ समय के बाद किसानों को छोड़ भी दिया गया। मामले में उप जिला अधिकारी अभिमन्यु कुमार ने बताया कि सम्पूर्ण समाधान दिवस में शिकायती पत्र आया था। जब उन्होंने कानूनगों का शिकायतकर्ताओं से सामना कराया तो शिकायत करने वाले किसानों ने उक्त कानूनगों को पहचानने से इंकार कर दिया। बताया कि शिकायती पत्र की जाँच कराई जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

जिला पंचायत राज अधिकारी ने बैठक मे ग्राम पंचायत सचिवालय को समय से खोलने के दिये निर्देश

महोबा। जिला पंचायत राज अधिकारी चंद्र किशोर वर्मा द्वारा विकासखंड जैतपुर के ग्राम प्रधान सचिव, कंसलटिंग इंजीनियर व पंचायत सहायक के साथ बैठक की गई, जिसमें प्रत्येक दिन ग्राम पंचायत सचिवालय को समय से खोलने के साथ–साथ पंचायत सहायक द्वारा प्रमाण पत्र निर्गत किए जाने के निर्देश दिए गए समीक्षा में ग्राम पंचायत खिरियाकला, महुआ बांध, ननवारा द्वारा एक भी प्रमाण पत्र जारी नहीं किया गया जिस संबंध में संबंधित सचिव को चेतावनी देते हुए निर्देशित किया गया कि पंचायत सहायक को अपने स्तर से समीक्षा कर प्रमाण पत्र निर्गत कराना सुनिश्चित करें। बैठक में ये भी प्रकाशित हुआ कि ग्राम पंचायत अजनर, बिहार, में अगर पंचायत सहायक द्वारा कार्य नहीं किया जा रहा है तो नियमानुसार सचिव कार्रवाई करें। ग्राम पंचायत गुढ़ा, ठठेवरा, छितरवारा में अभी भी ततब सेंटर का निर्माण कार्य पूर्ण नहीं हुआ जिस संबंध में संबंधित सचिव को एक सप्ताह में कार्य पूर्ण कराए जाने के निर्देश दिए गए। साथ ही निर्मित आरआरसी सेंटर को संचालित किए जाने के निर्देश दिए गए सामुदायिक शौचालय में ग्राम पंचायत बिहार, टिकारिया जैतपुर, लेवा, राजपुरा, मवैया, पुरवा जैतपुर, सगुनिया माफ, सिगौन, नानवारा, लमौरा, बघोरा, पुरवा पनवाड़ी, भदरवारा, रंगोलियां बुजुर्ग संचालित नहीं है जिसमें शीघ्र ही आवश्यक व्यवस्थाएं कर 01 सप्ताह में संचालित के निर्देश दिए गए। बैठक में जिला कंसलटेंट राहुल सिंह एडीओ पंचायत कमलेश अनुरागी आदि लोग उपस्थित रहे।

सुगिरा में 15 वर्षीय नाबालिग छात्रा ने लगाई फांसी स्थानीय पुलिस जांच में जुटी

कुलपहाड़/महोबा। कुलपहाड़ तहसील अंतर्गत सुगिरा गांव में सुबह एक दर्दनाक घटना सामने आई, जहां 15 वर्षीय नाबालिग छात्रा ने फांसी लगाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। प्राप्त जानकारी के अनुसार, ज्योति प्रजापति पुत्री भगीरथ प्रजापति, निवासी पिपरा माफ पिछले कुछ समय से अपने फूफा प्रकाश प्रजापति के घर सुगिरा गांव में रहकर पढ़ाई कर रही थी। वह कक्षा 9 वीं की छात्रा थी। जहां उसने सुबह लगभग 6 बजे फूफा के घर के अंदर फांसी लगा ली घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। जिसकी सूचना प्रकाश ने मृतिका के पिता भगीरथ को दी गई सूचना पाकर उसके मां और पिता मौके पर पहुंचे। घटना से परिजनों में शोक की लहर है, वहीं गांव में भी सन्नाटा पसरा हुआ है। मृतिका के पिता भगीरथ ने सूचना पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जब इस बारे मे प्रभारी निरीक्षक आर एस वर्मा से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि फिलहाल घटना के पीछे कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। मामले की जांच–पड़ताल की जा रही है। प्रथम दृष्टिया यह आत्महत्या का मामला प्रतीत हो रहा है, लेकिन जांच के बाद ही वास्तविक कारण सामने आ सकेगा।

पानी के लिए तरस रहे लोग, डेढ़ माह से टंकी से नहीं आ रहा पानी

समय जगत सुमेरपुर,हमीरपुर। बिदोखर पुरई ग्राम पंचायत में नमामि गंगे द्वारा पानी की टंकी का निर्माण होने के बाद भी डेढ़ माह से लोगो को पानी नसीब नहीं हो पा रहा है स्थिति यह है कि लोग दूर दराज से पानी ढोने को मजबूर हैं पानी न मिलने से पानी की टंकी उनके लिए सफेद हांथी साबित हो रही है। इस समस्या के प्रति ग्राम पंचायत के जिम्मेदार लोग चुप्पी साधे हुए हैं उन्हें जनता की समस्या से कोई लेना देना नहीं है।

क्योट्रा मुहाल के निवासी लल्लू, गंगादीन, नीरज भारती, संजय कुमार, मूल चंद्र, मन्नू लाल, भगवानदीन, अनिता, राधा, रज्जन, बीना, कमला, रामभवनी और सुमन आदि लोगों ने गहरी नाराजगी जाहिर करते हुए बताया कि जब से यह टंकी बनी है तब से न तो पानी सप्लाई का कोई निश्चित समय तय किया गया है और न ही नियमित रूप से पानी की आपूर्ति हो रही है। कभी-कभार जब पानी आता भी था तो उसकी मात्रा बहुत कम होती थी। अब तो आलम यह हो गया है कि टंकी से पानी आना पूरी तरह बंद हो गया है। ग्रामीणों ने टंकी ऑपरेटर पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि वह अक्सर ड्यूटी से गायब रहता है और जब रहता भी है तो वह पानी की वाल पूरी तरह नहीं खोलता, जिससे पर्याप्त दबाव में पानी नहीं आता। लोगों का यह भी कहना है कि टंकी के पास रहने वाले परिवारों तक को पानी नहीं मिल पा रहा है, जिससे ÷दिया तले अंधेरा÷ वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। ग्रामीणों ने बताया कि यह टंकी अभी तक ग्राम पंचायत को हैंडओवर नहीं की गई है, जिससे संचालन, निगरानी और जवाबदेही में भी भारी कमी बनी हुई है। ग्रामीणों ने जिम्मेदार अधिकारियों से जल्द से जल्द इस समस्या के समाधान की मांग की है ताकि उन्हें बुनियादी सुविधा के लिए और परेशान न होना पड़े। यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो लोग विरोध प्रदर्शन करने को मजबूर होंगे।

केन नदी एक मीटर, यमुना 80 सेंटीमीटर बढ़ी

बांदा। मध्य प्रदेश की घाटियों में झमाझम बारिश से केन व यमुना नदी का जलस्तर एक से डेढ़ मीटर तक बढ़ गया है। लगातार पानी बढ़ने से नदी के किनारे स्थित 60 से ज्यादा गांवों में फसलों के डूबने और गांवों में पानी घुसने का खतरा बढ़ गया है। डीएम के निर्देश पर एसडीएम व तहसीलदार टीमों के साथ बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचे और स्थिति पर नजर रखे हैं। कुछ गांवों के लोगों को सावधान रहने को कहा गया है। केंद्रीय जल आयोग के मुताबिक केन नदी के जलस्तर में 12 घंटे में करीब एक मीटर का इजाफा हुआ है। शनिवार को केन नदी का जलस्तर 95.20 था जो रविवार को बढ़कर 96.25 हो गया। यमुना के जलस्तर में भी 80 सेंटीमीटर की बढ़ोत्तरी हुई है। यमुना का जलस्तर शनिवार को 87.05 था रविवार को यमुना का जलस्तर 86.85 पर पहुंच गया। दोनों नदियों का जलस्तर बढ़ने के साथ ही प्रशासन अलर्ट हो गया है। सिंचाई व राजस्व विभाग के अधिकारियों को नदियों पर निगरानी के लिए कहा गया है। नदी किनारे के गांवों के लोगों को भी सतर्क रहने को कहा गया है। जिलाधिकारी ने पैलानी, बबेरू, नरैनी और सदर एसडीएम को निर्देश दिए है कि वह नदियों के जलस्तर पर नजर रखे। जल स्तर और अधिक बढ़ने पर प्रभावित गांवों को लोगों को बाढ़ राहत शिविरों में पहुंचाया जाए। बचाव व राहत कार्य शुरू किए जाए। इसी तरह जनपद में रविवार व सोमवार को तेज धूप निकलने से तापमान में भी इजाफा हुआ है। अधिकतम तापमान 37 व न्यूनतम 28 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है।

मृतक भोज से दूर रहने को बैठक का आयोजन

बांदा। सरदार वल्लभभाई पटेल सेवा संस्थान द्वारा चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत जिले के ग्राम पंचायत तारा के बजरंगीडेरा के बजरंगबली मंदिर में स्वजातीय लोगों की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। स्वजातीय लोगों ने इस मीटिंग में भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता राजेंद्र सिंह पटेल द्वारा की गई। भारतरत्न लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा में माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित कर उपस्थित लोगों ने सरदार को नमन किया। संस्थान के अध्यक्ष मुंगी प्रसाद पटेल ने कहा कि हमारा समाज तभी आत्मनिर्भर बनेगा जब हम मृतक भोज कार्यक्रमों को कम खर्चीला कर इसे मितव्ययिता के आधार पर करते हुए बची हुई धनराशि को अपने परिवार व समाज के बच्चों की पढ़ाई लिखाई और उनके स्वास्थ्य व उनके सर्वांगीण विकास पर खर्च करें। अधिवक्ता राममिलन सिंह पटेल ने मृतक की याद में फलदार वृक्षारोपण कर पर्यावरण और गांवों व शहरों को हरा भरा करे। अध्यापक जगदीश सिंह पटेल ने संस्थान के तीनों बिंदुओं पर अपनी बात रखी। बैठक में पूर्व प्रधानाचार्य रोहित पटेल, पूर्व अपर जिला कृषि अधिकारी छेदीलाल पटेल, ओम प्रकाश सिंह पटेल, जितेन सिंह पटेल, कैलाश सिंह पटेल आदि उपस्थित रहे।

पत्रकार संघ की बैठक संपन्न अहम मुद्दों पर हुआ विचारों विमर्श

समय जगत चित्रकूट। पत्रकार समाज कल्याण समिति चित्रकूट की बैठक राम शैय्या गौशाला गिरधर गोपाल आश्रम में संपन्न हुई जिसमें संगठन की गतिविधियों और संघ के प्रति अपने कर्तव्य सहित अनेक मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई पत्रकार का काम समाज को आइना दिखाना होता है पत्रकार समाज में छिपी हुई कुरीतियां आम जनमानस की समस्याओं सहित जनहित ऐसी मुद्दों को उजागर करते हैं पत्रकारों की भूमिका समाज शहर प्रदेश और देश की प्रगति में अहम होती है लेकिन पत्रकार का खुद का व्यवहार भी सौम्य मिलनसार हो चाल चरित्र चेहरा भी ठीक होना चाहिए तभी ही पत्रकार औरों को आइना दिखा सकता है ऐसे ही सभी पत्रकार उपस्थित पदाधिकारी जिला अध्यक्ष रामचंद्र तिवारी एवं संरक्षक डॉक्टर प्रभाकर सिंह वह एडवोकेट सुरेश तिवारी के समक्ष सर्वसम्मति से अपने-अपने विचार रखें जिसमें अहम मुद्दों पर विचार विमर्श करते हुए कहा गया की माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष सूरजभान बघेल जी एवं पत्रकार समाज कल्याण समिति के राष्ट्रीय संरक्षक जनपद चित्रकूट की पावन धरा पर पत्रकारों के सम्मान में एक बैठक जनपद चित्रकूट में होना आवश्यक है ताकि यह भगवान राम की तपोस्थली चित्रकूट से पूरे देश में पत्रकार समाज कल्याण समिति रजि0 का एक सुखद संदेश पत्रकारों के हित में पहुंचे किसी से छिपा नहीं है भले ही अनेकों संगठन है हम सभी संगठनों का सम्मान करते हैं लेकिन पत्रकार समाज कल्याण समिति ही एक ऐसा संगठन देखने को मिल रहा है की निस्वार्थ भाव से समाज सेवा में पत्रकारों के हित में अग्रसर है गिरधर गोपाल गौशाला आश्रम में विचारोंपरान्त जिला अध्यक्ष द्वारा अस्वस्त किया गया की पत्रकार समाज कल्याण समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष/राष्ट्रीय संरक्षक प्रदेश अध्यक्ष एवं समस्त जनपदों के जिला अध्यक्षों को जनपद चित्रकूट लाने का पूरा-पूरा प्रयास चित्रकूट टीम करेगी इस महत्वपूर्ण बैठक पर संरक्षक डॉक्टर प्रभाकर सिंह द्वारा रियल जूस शैंपू तेल खांसी की दवा आदि सामग्री से पदाधिकारी को सम्मानित करते हुए उपस्थित अन्य सब भ्रांत प्रतिष्ठित जान एवं संत महात्मा बालकों को भी जरूरतमंद सामग्री वितरित की गई महत्वपूर्ण मुद्दों पर बैठक 11ः00 बजे से प्रारंभ होकर 3ः00 बजे तक लगातार बैठक का कार्यक्रम चलता रहा तादुपरान्त अध्यक्ष की अनुमति से बैठक समाप्त की घोषणा की गई।

मिशन शक्ति टीम ने महिलाओं बालिकाओं को आत्मरक्षार्थ हेतु किया जागरूक

महोबा। महिलाओं एवं बालिकाओं में सुरक्षा, सम्मान, स्वावलमंबन, सशक्तिकरण व विश्वास का वातावरण बनाने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश शासन द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में आज मिशन शक्ति अभियान के अन्तर्गत पुलिस अधीक्षक प्रबल प्रताप सिंह के निर्देशन में जनपद के थाना खन्ना की एण्टी रोमियो टीम द्वारा अपने–अपने क्षेत्र में पड़ने वाले गांवों, कस्बो, बाजारों, सार्वजनिक स्थानों, धार्मिक स्थलों आदि के आस–पास मिशन शक्ति एवं शक्ति दीदी अभियान के अन्तर्गत महिलाओं, बालिकाओं को जागरुक किया गया। अभियान के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश शासन द्वारा महिलाओंध्बालिकाओं के लिए समर्पित विभिन्न सेवाओं, हेल्पलाईन नम्बरों (ट्वीटर सेवा, डॉयल–112, हेल्प लाइन–181, वुमेन पावर लाइन–1090, चाइल्ड हेल्प लाइन–1098, सी0एम0 हेल्पलाइन–1076, वन स्टॉप सेन्टर–181, स्वास्थ्य सेवा हेल्पलाइन–102, एंबुलेंस सेवा–108 आदि) तथा जनसुनवाई पोर्टल, स्थानीय थाने पर महिला हेल्प डेस्क आदि के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए पंपलेट आदि के माध्यम से जागरुक किया गया तथा महिला केन्द्रित विभिन्न सरकारी योजनाओँ निराश्रित महिला पेंशन योजना, बेटी बचाओ–बेटी पढाओ, आयुष्मान योजना, महिला शक्ति केन्द्र योजना आदि के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी देते हुए जागरुक किया गया।

जिला न्यायाधीश की अध्यक्षता में हुआ मीडिएशन फोर दी नेशन अभियान के तहत मध्यस्थ अधिवक्ताओं के साथ बैठक का आयोजन

समय जगत, धौलपुर। अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला एवं सेशन न्यायाधीश अरुण कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में उनके अवकाशागार में मीडिएशन ''फोर दी नेशन'' अभियान के तहत मध्यस्थ अधिवक्ताओं के साथ बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में नालसा द्वारा मध्यस्थता राष्ट्र के लिए अभियान भारत के सभी तालुका न्यायालयों, जिला न्यायालयों और उच्च न्यायालयों में लंबित मामलों को निपटाने के लिए 90 दिनों का मध्यस्थता अभियान के तहत भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नालसा और एमसीपीसी सर्वोच्च न्यायालय के सहयोग से माननीय उच्च न्यायालयों, जिला न्यायालयों, तालुका न्यायालयों, राज्य स्तरीय न्यायाधिकरणों और आयोगों के साथ-साथ अन्य अर्ध-न्यायिक मंचों में लंबित मामलों के लिए 90 दिवसीय व्यापक मध्यस्थता अभियान शुरू किया है।

नालसा ने राजस्थान के सभी न्यायालयों में उक्त अभियान के सफल कार्यान्वयन के लिए अध्यक्ष द्वारा जिले मे समस्त मध्यस्थ अधिवक्ताओं के साथ बैंठक ली और बैठक मे सभी मध्यस्थ अधिवक्ताओ को निर्देशित किया कि वे जिला न्यायालयों, तालुका न्यायालयों से प्राप्त आपराधिक समझौता योग्य मामले, उपभोक्ता विवाद मामले, ऋण वसूली मामले, बेदखली मामले, भूमि अधिग्रहण मामले, वैवाहिक विवाद मामले, दुर्घटना दावा मामले, घरेलू हिंसा मामले, चेक बाउंस मामले, वाणिज्यिक विवाद मामले, अन्य उपयुक्त सिविल मामले आदि मध्यस्थ पत्रावली मे पक्षकारों के मध्य राजीनामा वार्ता करवाकर अधिक से अधिक प्रकरणो को समय पर निस्तारण सुनिश्चित करते हुए नालसा के पत्रांक की पालना सुनिश्चित करे। बैठक में सचिव रेखा यादव एवं धौलपुर जिले के न्याय क्षेत्र के सभी मध्यस्थ अधिवक्ता उपस्थित रहे।

कार्यालय नगर पंचायत, कुलपहाड़ , जनपद- महोबा

नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत कुलपहाड़ द्वारा मुहल्ला गांधीवार्ड में स्थित मुर्गा मण्डी की दुकान संख्या 8 को किराये पर उठाये जाने हेतु नॉन रिफण्डेविल प्रीमियम (पगड़ी) की खुली नीलामी हेतु दिनांक 15.07.2025 को कार्यालय नगर पंचायत कुलपहाड़ में अपराह 01 बजे से बोली करायी जानी है। जो भी इच्छुक व्यक्ति उक्त दुकान को किराये पर लेना चाहते है वे नियत जमानत धनराशि मु0- 10000.00 (दस हजार मात्र) जमा करके बोली मे भाग ले सकते है। समस्त नियमों व शर्तो की जानकारी किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

(प्रवेन्द्र कुमार)
अधिशाषी अधिकारी
नगर पंचायत, कुलपहाड़
जनपद- महोबा

(वैभव अरजरिया)
अध्यक्ष
नगर पंचायत, कुलपहाड़
जनपद- महोबा।

ब्राह्मण समाज ने नीरज गुप्ता की अभद्र टिप्पणियों के विरोध में सौंपा ज्ञापन

समय जगत झांसी। झांसी महानगर में सोशल मीडिया पर ब्राह्मण समाज के प्रति अभद्र एवं आपत्तिजनक टिप्पणियाँ करने वाले नीरज गुप्ता (हिंदू नीरज हिन्दुस्तानी) के खिलाफ आज अखंड ब्राह्मण महासभा परिवार एवं ब्राह्मण समाज के सैकड़ों लोगों ने एकजुट होकर थाना कोतवाली परिसर पहुंचकर थाना प्रभारी कोतवाल को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में ब्राह्मण समाज ने मांग की है कि नीरज गुप्ता द्वारा सोशल मीडिया पर की गई आपत्तिजनक, अमर्यादित व समाज को नीचा दिखाने वाली टिप्पणियों पर तत्काल कठोर कार्रवाई की जाए।इस अवसर पर कोतवाल ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि आरोपी के विरुद्ध जल्द ही उचित एवं कठोरतम कार्रवाई की जाएगी, ताकि समाज में शांति और सौहार्द बना रहे।ब्राह्मण समाज ने चेतावनी दी है कि यदि प्रशासन द्वारा उचित कार्रवाई नहीं की गई तो समस्त ब्राह्मण समाज चरणबद्ध तरीके से उग्र आंदोलन के लिए बाध्य होगा तथा बड़े अधिकारियों के कार्यालयों पर धरना-प्रदर्शन करेगा।

ज्ञापन सौंपने वालों में प्रमुख रूप से पीयूष रावत ,मंजुल पुरोहित, राजेंद्र शर्मा, आशीष शर्मा, राहुल शर्मा, आनंद तिवारी, नितिन भार्गव, आशुतोष द्विवेदी, राहुल मिश्रा, मनोज शर्मा, मनीष दुबे, सौरभ व्यास, भवानी शंकर तिवारी, हर्षल गोलवलकर, विनय तिवारी,सुमित बिदुआ, राहुल तिवारी, प्रकाश मिश्रा, ऋषभ तिवारी, अरविन्द तिवारी, पीयूष रावत, रेखा वैद्य, अंजू शर्मा, मंजू शर्मा, दीपा तिवारी, कविता मिश्रा,, हनी सिरोठिया, सपना शुक्ला, निशा शर्मा, नीलम नायक, पूजा उपाध्याय, राधा दुबे आदि एवं विभिन्न ब्राह्मण संगठनों के पदाधिकारी व समाज के सम्मानित सदस्य उपस्थित रहे।ब्राह्मण समाज ने स्पष्ट किया है कि समाज के सम्मान और स्वाभिमान के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा और भविष्य में इस प्रकार की अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। सभी उपस्थितजनों ने प्रशासन से शीघ्र कार्रवाई की मांग कर शांति व्यवस्था बनाए रखने का आह्वान किया।

जनपद झांसी के 4 पंजीकृत अमान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को कारण बताओ नोटिस जारी

पार्टी के अध्यक्ष/महासचिव अपना प्रत्यावेदन मुख्य निर्वाचन अधिकारी, लखनऊ को 14 जुलाई तक करायें उपलब्ध

'**समय जगत झांसी।** जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी मृदुल चौधरी ने एतद्द्वारा सूचित किया है कि लोकप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29ए के प्राविधानों के अन्तर्गत भारत निर्वाचन आयोग में पंजीकृत उत्तर प्रदेश राज्य के 119 पंजीकृत अमान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों द्वारा वर्ष 2019 से वर्ष 2024 (06 वर्षों) के मध्य आयोग द्वारा आयोजित निर्वाचनों में एक भी चुनाव नहीं लड़े जाने के फलस्वरूप भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के पत्र संख्या 56/2025/पी0पी0एस0-।। दिनांक 20 जून, 2025 द्वारा जारी दिशा निर्देशों के क्रम में अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उ0प्र0 द्वारा जनपद झांसी के 04 पंजीकृत अमान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों अखिल भारतीय किसान मजदूर मोर्चा निवासी-श्री महात्मा गांधी विहार केन्द्र उल्दन झांसी, हिन्द जन कांग्रेस निवासी-72 प्यारेलाल कम्पाउण्ड नगरा झांसी, किसान रक्षा पार्टी निवासी-529/ए न्यू हाउस नं0-807 पठौरिया बाहर दतियागेट झांसी एवं प्यूपिल एक्शन पार्टी निवासी-363 नैनागढ़ प्रेमनगर झांसी को ष्कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। कार्यालय मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उ0प्र0, लखनऊ द्वारा उपरोक्त पंजीकृत अमान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को जारी ष्कारण बताओ नोटिसष् पार्टी के पंजीकृत पते पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्रेषित किया गया है। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी ने जनपद झांसी के 04 पंजीकृत अमान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को सूचित किया है कि ष्कारण बताओं नोटिस के सम्बन्ध में उक्त पार्टी के अध्यक्ष/महासचिव अपना प्रत्यावेदन हल्फनामा एवं सुसंगत अभिलेखों के साथ दिनांक 14 जुलाई, 2025 तक कार्यालय मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उ0प्र0, चतुर्थ तल विकास भवन, जनपथ मार्केट, लखनऊ-226001 को उपलब्ध करा सकते हैं एवं सुनवाई हेतु नियत दिनांक 21 जुलाई, 2025 को मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के समय के दौरान मुख्य निर्वाचन अधिकारी के समक्ष उपस्थित हो सकते हैं, यदि पार्टी की ओर से कारण बाताओ नोटिस के सम्बन्ध में निर्धारित तिथि के भीतर प्रत्यावेदन उपलब्ध नहीं कराया जाता है, तो यह माना जायेगा कि पार्टी को इस मामले में कुछ नहीं कहना है और पार्टी को राजनैतिक दलों की सूची से हटाये जाने के सम्बन्ध में मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उ0प्र0 की ओर से संस्तुति सहित प्रस्ताव भारत निर्वाचन आयोग को प्रेषित कर दिया जायेगा।

ज्वार की उन्नत किस्मों का प्रसार , 200 किसानों को मिला बीज व तकनीकी प्रशिक्षण

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा किसानों को सशक्त बनाने की पहल

समय जगत झाँसी।' रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा किसानों को आत्मनिर्भर एवं तकनीकी रूप से सशक्त बनाने हेतु ज्वार की उन्नत किस्मों एवं आधुनिक उत्पादन तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। यह कार्यक्रम एस.सी.एस.पी. परियोजना (आई.आई.एम.आर., हैदराबाद) के अंतर्गत कुलपति डॉ. अशोक कुमार सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. सुशील कुमार सिंह एवं निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार , अधिष्ठाता कृषि डॉ आरके सिंह के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत ब्लॉक बंगरा (झाँसी) के ग्राम खिलारा एवं नयागांव के किसानों को बैट-41 किस्म का उन्नत बीज वितरित किया गया। उन्हें भूमि की तैयारी, वैज्ञानिक उत्पादन तकनीक एवं फसल प्रबंधन संबंधी विस्तृत प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। किसानों को प्रशिक्षण बैग और भंडारण बॉक्स भी वितरित किए गए।इसी क्रम में ग्राम मगरवारा, चिरकना, पाठकरका एवं धमना पायक (मऊरानीपुर) के किसानों को भी उन्नत किस्में और भंडारण सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई। साथ ही ललितपुर जनपद के ब्लॉक बिरधा अंतर्गत खितवास, टेनगा एवं बिरधा गांवों के किसानों को भी बीज वितरण किया गया।

इस वर्ष कुल 200 किसानों को ज्वार की उन्नत किस्मों के बीज प्रदान किए गए, जिनमें 50 किसानों को बैभ्-41 तथा 150 अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के किसानों को बैट-41 के बीज उपलब्ध कराए गए।

कुलपति डॉ. अशोक कुमार सिंह ने कहा कि ष्देश की खाद्य सुरक्षा एवं किसानों की आय वृद्धि के लिए उन्नत तकनीकों और बेहतर बीजों का प्रसार अत्यंत आवश्यक है। हमारा प्रयास है कि बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों तक वैज्ञानिक जानकारी पहुँचाई जाए ताकि वे कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकें।

निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. सुशील कुमार सिंह ने कहा कि ष्ज्वार जैसी पोषक फसलों को बढ़ावा देना न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारता है, बल्कि पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है कि हर किसान वैज्ञानिक सक्रिय भागीदारी कार्यक्रमों से जुड़कर आत्मनिर्भर बन सके।कार्यक्रम संयोजक डॉ रूमाना खान ने आयें हुए सभी किसानों एवं वैज्ञानिको का आभार व्यक्त किया।

समाज और राष्ट्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है सर्वे: डीआईजी

सर्वेक्षण कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं गम्भीरता से सम्पादित करें : सीडीओ

समय जगत झांसी। आज असंगठित क्षेत्र की वार्षिक इकाई सर्वेक्षण (ंनैन्) के परिप्रेक्ष्य में मण्डल स्तरीय तीन दिवसीय प्रशिक्षण गोष्ठी का विकास भवन सभागार, झाँसी में मुख्य अतिथि पुलिस उपमहानिरीक्षक, झाँसी परिक्षेत्र श्री केशव कुमार चौधरी द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया गया।

पुलिस उपमहानिरीक्षक ने डाटा के महत्व पर प्रकाश डालते हुये बताया कि भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बन चुकी है, उ0प्र0 की जी0डी0पी0 वन ट्रिलियन डॉलर बनाने हेतु सरकार द्वारा व्यापक कार्य किया जा रहा है। आज का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम असंगठित क्षेत्र की वार्षिक इकाई सर्वेक्षण किया जाने हेतु आयोजित किया गया है। उन्होने बताया कि सर्वे कार्य को पूर्ण गम्भीरता एवं निष्ठा से सम्पादित करें। प्रगणक/पर्यवेक्षकों सर्वे क्षेत्र में डाटा कलैक्शन में किसी अप्रिय घटना की स्थिति में 112 पर कॉल कर दें, क्षेत्रीय पुलिस द्वारा आपका वांछित सहयोग किया जायेगा। प्रगणक/पर्यवेक्षकों अपने क्षेत्र के पुलिस थाना/चौकी पर सर्वे कार्य के सम्बन्ध में सूचित कर दें।

मुख्य विकास अधिकारी श्री जुनैद अहमद ने आंकड़ों की सुचिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि सर्वेक्षण के पश्चात प्राप्त आंकड़ों से बने रिपोर्ट के आधार पर जनपद की सम्बन्धित क्षेत्र में वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। सर्वेक्षण के आंकडे विकास योजना बनाने, क्रियान्वयन एवं वांछित निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होते है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रगणक/पर्यवेक्षक पूर्ण गम्भीरता के साथ प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा शासन के इस महत्वपूर्ण सर्वे कार्य में प्रगणक आंकड़ों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें एवं सर्वेक्षण कार्य को पूर्ण निष्ठा व मनोयोग के साथ सम्पादित करायें।

मण्डलीय प्रशिक्षण गोष्ठी के संयोजक उपनिदेशक (अर्थ एवं संख्या) श्री एस0एन0 त्रिपाठी द्वारा अवगत कराया गया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में असंगठित क्षेत्र महत्वपूर्ण है, यह क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान देने के साथ बड़ी संख्या में प्रतिष्ठान एवं रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। इसलिए नियोजन और नीति निर्माण के लिए असंगठित क्षेत्र से संबंधित विश्वसनीय और व्यापक डेटा की आवश्यकता पर जोर देने की जरूरत हैं।

उन्होने बताया कि विनिर्माण, व्यापार और अन्य सेवा क्षेत्र (निर्माण को छोड़कर) में अनिगमित गैर-कृषि प्रतिष्ठानों की विभिन्न आर्थिक और परिचालन विशेषताओं पर डेटा प्रदान करने के लिए अनियमित क्षेत्र के उद्यमों का वार्षिक सर्वेक्षण अवधारणा एक नियमित वार्षिक सर्वेक्षण के रूप में की गई है। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के प्रत्येक जनपद में ंनैम्् सर्वे कराया जा रहा है, ंनैम्् एक बहुत ही महत्वपूर्ण सर्वेक्षण है, जिसे प्रदेश का अर्थ एवं संख्या प्रभाग अपनी देखरेख में करवा रहा है। सर्वेक्षण के पश्चात प्राप्त आंकड़ों से बने रिपोर्ट के आधार पर जनपद की असंगठित क्षेत्र की वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त होगी तथा जिला घरेलू उत्पाद (क्क्) का भी आंकलन किया जा सकेगा। भारत सरकार के छैव् कार्यालय झाँसी के प्रशिक्षणदाता वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी श्री तरूण कुमार एवं श्री राममणि शुक्ल द्वारा सर्वे का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। श्री तरूण कुमार द्वारा बताया गया कि असंगठित क्षेत्र की वार्षिक इकाई सर्वेक्षण भारत सरकार द्वारा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में कराया जा रहा। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एन.एस.ओ.) द्वारा वर्ष 2019 में 06 महीने के लिए प्रयोगात्मक आधार पर सर्वेक्षण शुरू किया गया था। हालांकि, कोविड के कारण, अप्रैल 2021 में एक पूर्ण वार्षिक सर्वेक्षण शुरु किया गया। वर्तमान में, अखिल भारतीय स्तर पर 24300 प्रतिदर्शी के साथ ए.एस.यू.एस.ई. 2025 (जनवरी-दिसंबर 2025) का फील्डवर्क किया जा रहा है। यह सर्वेक्षण अधिक दक्षता और बेहतर गुणवत्ता आश्वासन के लिए ई-सिग्मा प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हुए सी.ए.पी.आई. सॉफ्टवेयर के माध्यम से टैबलेट गैजेट में किया जा रहा है। इस तीन दिवसीस कार्यक्रम में प्रथम दो दिवस प्रशिक्षण एवं अन्तिम दिवस क्षेत्र में स्थलीय सर्वे का प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक उपनिदेशक (अर्थ एवं संख्या) श्री एस0एन0 त्रिपाठी द्वारा पुलिस उपमहानिरीक्षक को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी श्री जुनैद अहमद व जिला विकास अधिकारी श्री सुनील कुमार, उपायुक्त स्वतः रोजगार श्री बृजमोहन अम्बेड, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी, झांसी/जालौन/ललितपुर एवं सम्बन्धित पर्यवेक्षण/अपर सांख्यिकीय अधिकारी एवं सम्बन्धित प्रगणक उपस्थित अधिकारी रहे।

किताबें पाकर चमके बच्चों के चेहरे

समय जगत गुरसरांय। शासन द्वारा जूनियर कक्षाओं की निशुल्क पाठ्य पुस्तकों का वितरण खेर इंटर कॉलेज में किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप विद्यालय प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष सतीश चंद्र चौरसिया ने कहा कि गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है।उसकी महिमा को कायम रखना अपने कर्तव्यों पर निर्भर करता है।विद्यालय के प्रधानाचार्य धनप्रकाश तिवारी ने कहा कि शासन द्वारा दिये गए संसाधनों का उपयोग करें और सही दिशा में अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें तभी आप प्रसंशा के पात्र हो सकते है।विशिष्ट अतिथि विद्यालय प्रबंध समिति के वरिष्ठ सदस्य सुशील स्वामी एवं नरेंद्र जैन सिंघई ने विद्यालय को समय अनुसार सुविधाएं देने की बात कही। जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि जितेंद्र सिंह पटेल ने आधुनिक शिक्षा की गुणवत्ता वताते हुए बच्चों को प्रेरणा दी।

अध्यक्षता प्रबंध समिति के प्रबंधक मनोहर राव नेवालकार ने की।संचालन बालिका विभाग के प्रभारी कैलाश प्रकाश गुप्ता एवं सरजू शरण पाठक ने संयुक्त किया।

अंत मे प्रवक्ता राजेश चंद्र ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस मौके पर जूनियर विभाग के विभागाध्यक्ष संजय दोन्देरिया,डॉ विवेक मुदगिल, सुनील व्यास,राकेश व्यास,प्रदीप सोनी,उपमा सिंह,अर्चना मोदी,मंजू वर्मा,सुरभि पटेल, मंजू वर्मा,वर्षा विश्वकर्मा, राजबहादुर सिंह,अमित भदौरिया, मुकेश बाबू खैर, अशोक आर्या,कौशलेश मिश्रा,कुलदीप वर्मा, राहुल,समता, मुन्ना आदि उपस्थित रहे।

सनशाइन क्लब (34) ने किया इस्कॉन मंदिर पर गौ पूजन

समय जगत झांसी। ब्रजभूमि दास महाराज जी के द्वारा संकल्पक अनुराधा गुप्ता से गौ - पूजन कराया गया, तत्पश्चात सदस्यों द्वारा मंदिर में भजन- कीर्तन किया गया गौ-पूजन संकल्पक अनुराधा गुप्ता द्वारा सफलतापूर्वक कार्यक्रम को संयोजित किया गया। प्रसाद वितरण के साथ ही कार्यक्रम का समापन हुआ। कुसुम सिंघल, सीमा अग्रवाल, सुरेखा जायसवाल मधुलता अग्रवाल,श्री संदेश अग्रवाल श्री अशोक अग्रवाल पीएनबी , सीए रोहित जायसवाल, श्री त्रिलोकी नाथ अग्रवाल, श्री विलास गुप्ता, श्री चंद्रशेखर तिगुनायक, श्री प्रदीप अग्रवाल नग वाले, श्री पंकज अग्रवाल, श्री अरुण पाठक, श्री संतोष अग्रवाल साड़ी वाले के द्वारा गौ-सेवा की गई ।

अंत में शाखा सचिव वीरेंद्र गुप्ता के द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

रेलवे स्टेशन टैक्सी यूनियन द्वारा आयोजित लंगर में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे डॉ0 संदीप

समय जगत झाँसी। मोहर्रम के अवसर पर रेलवे स्टेशन टैक्सी यूनियन द्वारा प्रतिवर्ष लंगर का आयोजन किया जाता है यह आयोजन वर्ष 1974 से लगातार किया जा रहा है। इस आयोजन की मुख्य बात यह है कि इसमें सभी धर्म सभी जाति के लोग सहयोग करते आ रहे हैं। इस वर्ष लंगर वितरण में मुख्य अतिथि के रूप में संघर्ष सेवा समिति के संस्थापक डॉ संदीप सरावगी सम्मिलित रहे। मुख्य अतिथि के आगमन पर आयोजकों द्वारा माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया गया तत्पश्चात आने जाने वाले राहगीरों और गरीबों को भोजन वितरण किया गया। कार्यक्रम आयोजकों ने बताया झाँसी स्टेशन पर हमारी यूनियन प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पर्व मुहर्रम के अवसर पर लंगर वितरण का आयोजन करती है कई वर्षों से डॉ0 संदीप संरक्षक के रूप में लगातार हमारा सहयोग करते आ रहे हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सर्वधर्म समभाव की भावना जागृत करना है। प्रत्येक वर्ष लंगर में हजारों लोग भोजन प्राप्त करते हैं हमारे संगठन द्वारा यह कार्यक्रम लगातार जारी रखा जाएगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉक्टर संदीप ने कहा झाँसी सांप्रदायिक सौहार्द के लिए जानी जाती है यहां प्रत्येक त्यौहार में हर धर्म हर जाति के लोग सम्मिलित होते हैं। रानी झाँसी के समय से ही धर्मनिरपेक्षता का वातावरण व्याप्त है इसका सबसे अच्छा उदाहरण यह है कि हमारे जिले में आज तक कोई भी सांप्रदायिक घटना नहीं हुई है। आयोजक मंडल द्वारा प्रतिवर्ष यहां लंगर का भव्य आयोजन किया जाता है जहां सैकड़ों की संख्या में लोग भोजन प्रसादी प्राप्त करते हैं इस भव्य आयोजन के लिए मैं आयोजक मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ। इस अवसर पर प्रमेंद्र सिंह, संदीप नामदेव, महेन्द्र रायकवार, आशीष विश्वकर्मा, अरुण पांचाल, राहुल रायकवार, राजू सेन, राकेश अहिरवार, बसंत गुप्ता, सुशांत गेडा, सूरज प्रसाद वर्मा, शमसुद्दीन, मोनू, सोनू, कल्लू, नेता जी, बरकत, राजू, पप्पू, सुरेश आदि उपस्थित रहे।

सैयर पहाड़ पर एकादशी पर हुआ विष्णु भगवान का पूजन

समय जगत झांसी। सैयर पहाड़ पर स्थित प्राचीन बल खंडेश्वर सिद्ध शक्तिपीठ बूढ़े महादेव धाम पर आज योगी आनंद गिरि जी महाराज नागा फक्कड़ बाबा के सान्निध्य में साधु संतों ने और भक्तों नें देवशयनी एकादशी पर भगवान विष्णु का पूजा अर्चना कर महामंत्र का जाप किया । जिसमें साधु सिद्ध संतों ने भगवान विष्णु का महामंत्र जाप ओम नमो नारायण का जप किया महाराज जी ने बताया की आज से चातुर्मास भी शुरू हो जायगा साधू संत अपने अपने स्थान पर रहकर जप,तप, उपवास एवं स्वाध्याय करेंगे वहीं मंदिर में धार्मिक कार्य क्रम होंगे मंहत योगी आनंद गिरी जी के अनुसार देवशयनी एकादशी पर भगवान विष्णु क्षीरसागर में योग निद्रा में चले जायेंगे चातुर्मास के चार माह में बरसात होने एवं अहिंसा को सर्वोपरि महत्व देते हुए किसी भी प्रकार की जीव हिंसा से बचने के लिए साधू संत कहीं भी विचरण नहीं करते हैं बल्कि अपने अपने स्थान में रुककर जप,तप, उपवास एवं स्वाध्याय करते हैं चातुर्मास देवउठनी एकादशी पर समाप्त होगी देवशयनी एकादशी पर बिशाखा नक्षत्र और साध्य योग रहेगा भगवान विष्णु की बिधि बिधान से पूजा करने पर समस्त मनोकामनाएं पूरी होंगी इसी अवसर पर महाराज जी ने बताया की आने वाली गुरु पूर्णिमा में श्री बाबा बलखंडेश्वर धाम पर गुरु पूर्णिमा धूमधाम से मनाई जायेगी दस जुलाई को महाराज जी के बताए अनुसार शिष्यों को कंठी धारण करवाई जायेगी एवं अपने सनातन धर्म को आगे बढ़ाया जायेगा इसी अवसर पर धाम में भंडारे का आयोजन भी किया जायगा श्री राम गिरि महाराज नागा बाबा, साध्वी अंजनानंद गिरी राजकुमार राजू यादव, नंदराम पहलवान, कृष्णबटटा गुरु पत्रकार, पहलवान, धर्मेंद्र शर्मा भोला भैया, कमलेश भैया राहुल भैया मिथुन यादव पूर्व पार्षद मुकेश दाऊ , पटक गिरी, हरिश्चंद्र योगी मौजूद रहे।

किसान की बेटी जिया यादव का चयन भारतीय तैराकी टीम में ,एशियन यूथ गेम्स की बैक स्ट्रोक स्पर्धा में दिखाएगी अपना दम

समय जगत झांसी। नगर के किसान की नन्हीं जलपरी बेटी जिया यादव का चयन भारतीय यूथ स्विमिंग टीम में किया गया है।बहरीन में 23 से 27 अक्टूबर तक आयोजित होने वाली एशियन यूथ गेम्स में जिया ग्रुप ए कैटिगरी (15 से 17) वर्ष आयु वर्ग की 50 मी.एवं 100 मी. बैक स्ट्रोक स्पर्धा में अपना दम दिखाएंगी।जिया यादव ने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में दमदार प्रदर्शन कर भारतीय टीम में जगह बनाई है। गत वर्षों में सब जूनियर एवं जूनियर वर्ग की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में कई स्वर्ण पदक की जीत कर भारतीय टीम में जगह बनाने में कामयाब हो सकी बेक स्ट्रोक में महारथ रखने वाली जिया यादव ने खेल विश्लेषक बृजेंद्र यादव से बातचीत में बताया कि वह माध्यम वर्गीय परिवार से आती हैं, उनके पिता विजय यादव हंसारी में दुग्ध डेरी का व्यवसाय कर परिवार का भरण पोषण करते हैं। जिया ने बताया कि झांसी में 15 मीटर के स्विमिंग पूल से ही मैंने तैराकी का शुरुआत सफर शुरू किया था,कुछ ही समय में मुझे राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में खेलने का अवसर मिला जहां मैं पदक जीत कर सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। यह पहला मौका होगा जब मैं अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में अपने देश का प्रतिनिधित्व करुंगी। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश स्विमिंग एसोसिएशन के सचिव शिवम कपूर ने मेरी प्रतिभा को देख कर नई दिल्ली में एस.एफआई. ग्लेनमार्क स्विमिंग अकादमी में ट्रेनिंग के लिए दाखिला कराया।वहां मुझे राष्ट्रीय तरह की प्रशिक्षक पार्थ मजूमदार ट्रेनिंग प्रदान कर रहे हैं। उसने जब पूछा कि भारत देश का प्रतिनिधित्व करने पर कैस लग रहा है,तो जिया ने कहा देश के लिए खेलना हर खिलाड़ी का सपना होता है।उन्होंने अपने माता पिता के साथ साथ सभी अपने मार्गदर्शक शुभचिंतकों का भी आभार व्यक्त किया।

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे तीन पुत्र हैं और तीन पुत्रियां हैं। सभी की शादी हो चुकी है। मेरे पुत्र नवल व पुत्रवधु सोनम का आचरण हम सभी परिजनों के प्रति गलत है। मैं अपने पुत्र नवल व पुत्रवधु सोनम को अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। आज से नवल व सोनम अपने अच्छे व बुरे कृत्यों के लिए स्वयं जिम्मेदार रहेंगे। मुझे व मेरे परिवार का उन लोगों से आज दिनांक से कोई संबंध व सरोकार नहीं रहेगा।

दामोदर कुशवाहा पुत्र स्व0 गनपत कुशवाहा
निवासी- सूजेखां खिड़की बाहर, झांसी।

सार-समाचार

मुहर्रम के मौके पर निकाला ताजिया का जुलूस

फरीदाबाद। शहर में रविवार को मुहर्रम के मौके पर ताजिया का जुलूस निकाला गया। हजरत इमाम हुसैन साहब की कुर्बानी को याद करते हुए स्मार्ट सिटी में जगह-जगह कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मुहर्रम के मौके पर निकाले जाने वाले ताजिये की तैयारी पिछले 5 दिनों से चल रही थी। रविवार को शहर में कई जगहों पर जुलूस निकाला गया। मौलाना जमालुद्दीन ने बताया कि मुहर्रम मातम मनाने और धर्म की रक्षा करने वाले हजरत इमाम हुसैन की शहादत को याद करने का दिन है। हुसैन का मकसद खुद को मिटाकर भी इस्लाम और इंसानियत को जिंदा रखना था। रविवार की शाम को जुलूस सेक्टर-29 से ओल्ड मेन बाजार के रास्ते होते हुए बाबा नूरुद्दीन की दरगाह पर पहुंचा। वहीं एनआइटी-3 से ताजिये का जुलूस निकाला गया। जुलूस एनआईटी से निकला और दोबारा मस्जिद पहुंचा। इसके अलावा ऊंचागांव और ओल्ड फरीदाबाद सहित कई जगहों से ताजिये का जुलूस निकालकर हजरत इमाम हुसैन साहब की कुर्बानी को याद किया और मातम मनाया।

राष्ट्रीय लोक अदालत 12 जुलाई को

गुरुग्राम। द्वितीय राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 12 जुलाई को गुरुग्राम जिला न्यायालय परिसर में किया जाएगा। जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चेयरमैन चंद्र शेखर के मार्गदर्शन में तथा मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (सीजेएम) एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव रजत वर्मा के नेतृत्व में इसका आयोजन होगा। इस लोक अदालत का उद्देश्य अधिक से अधिक मामलों का आपसी सहमति से त्वरित व स्थायी समाधान करना है। इसमें विशेष रूप से ट्रैफिक चालान, बैंक रिकवरी, मोटर वाहन दुर्घटना दावे, पारिवारिक विवाद, दीवानी मामले, जमानती फौजदारी केस, श्रम विवाद, भूमि अधिग्रहण, बिजली-पानी के बिल संबंधी विवाद, राजस्व मामले और अन्य छोटे-मोटे वादों का निपटारा किया जाएगा। सीजेएम रजत वर्मा ने आम जनता से अपील की है कि वे इस अवसर का लाभ उठाएं।

सुबह-सुबह होटल में अचानक लगी आग

साहिबाबाद। थानाक्षेत्र स्थित प्लूटो होटल में सोमवार सुबह करीब 5 : 29 बजे अचानक आग धधक उठी। होटल के पास से गुजर रहे लोगों ने होटल के कर्मचारियों को बताया और उसके बाद पुलिस व अग्निशमन विभाग को सूचना दी। मुख्य अग्निशमन अधिकारी राहुल पाल ने बताया कि सूचना मिलते ही मौके पर साहिबाबाद, कोतवाली और वैशाली फायर स्टेशन से साथ फायर वाटर टेंडर मौके पर भेजे गए। बताया कि आग होटल के ऊपरी मंजिल पर बजे रसोई घर और एलिवेशन पाइप में लगी थी। हालांकि दमकल टीम के पहुंचने से पहले ही आग होटल के अन्य हिस्सों में फैल चुकी थी। यहाँ तक कि आग की लपटें और धुएं का गुब्बार देख आसपास के लोगों में भी हड़कंप मच गया। होटल स्टाफ ने समय रहते वहां ठहरे लोगों को बाहर निकाला। अग्निशमन की टीम ने करीब एक घंटे में आग पर काबू पाया। इसके बाद करीब 20 मिनट तक कूलिंग का काम किया गया। सीएफओ राहुल पाल ने बताया कि हादसे में किसी तरह की जनहानि नहीं हुई है। आग लगने की वजह अभी पता नहीं चल पाई है, इसके लिए टीम जांच करेगी।

दिल्ली में रात भर रुक-रुककर हुई बारिश

नई दिल्ली। दिल्ली एनसीआर में मानसूर रफ्तार पकड़ चुका है। सोमवार की दस्तक के साथ ही झमाझम बारिश शुरू हो गई है। रात भर बारिश का सिलसिला जारी रहा। सुबह भी मूसलाधार बारिश हुई। धीरे-धीरे बारिश का सिलसिला जारी है। इस सप्ताह भी दिल्ली में मानसून मेहरबान रहेगा। ऐसे में बारिश की फुहारें रुक-रुक कर लोगों को भिगोती रहेंगी। हालांकि, शुरुआती दिन गरज चमक के साथ जोरदार बारिश का यलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे के दौरान विभिन्न इलाकों में तेज हवाएं चलने की संभावना जताई है। बादल छाए रहेंगे। गरज के साथ हल्की से मध्यम बारिश होगी। इस दौरान अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमश : 33 और 26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा। लोधी रोड में सबसे अधिक तापमान रहा। यहां अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रिज और आया नगर में 34.8 और पालम में 33.5 डिग्री सेल्सियस अधिकतम तापमान रहा। वहीं, पालम में न्यूनतम तापमान अन्य केंद्र के मुताबिक सबसे कम रहा। यहां न्यूनतम तापमान 25.5 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

टीएचए में युवती समेत पांच लोगों से 9.02 लाख की साइबर की ठगी, ऑनलाइन टास्क देकर ठगे 3.18 लाख

साहिबाबाद। ट्रांस हिंडन एरिया (टीएचए) के अलग-अलग थानाक्षेत्रों में साइबर ठगी के पांच मामले सामने आए हैं। ठगों ने इंदिरापुरम क्षेत्र की रहने वाली गरिमा मौर्य से 3.18 लाख, मयंक अहूजा से 20015 रुपये, साहिबाबाद के प्रतीक शर्मा से 98000 और टीलामोड़ निवासी दीपक जे सिन्हा से 3,16,994 रुपये व रिजवान सिद्दीकी से 1.49 लाख रुपये की ठगी की। इन सभी मामलों में पुलिस ने पांच जुलाई की रात मुकदमा दर्ज कर साइबर सेल को भेज दिए हैं। वहीं, पुलिस व सामाजिक तौर पर लगातार जागरूकता अभियान चलने के बाद भी साइबर ठग अपने मंसूबों में कामयाब होते जा रहे हैं। साइबर सेल की जांच में भी अभी तक साइबर ठगी करने वालों की गिरफ्तारी का प्रतिशत न के बराबर है। इंदिरापुरम थानाक्षेत्र की रहने वाली गरिमा मौर्य ने दर्ज मुकदमे में पुलिस को बताया कि 27 मई 2025 को उन्हें टेलीग्राम पर एक मैसेज मिला था। उसमें ऑनलाइन टास्क पूरा कर रुपये कमाने का झांसा दिया गया। घर बैठे रुपये कमाने के लालच में आकर उन्होंने हामी भर दी। 27 और 28 मई को साइबर ठगों ने उनका भरोसा जीतने के लिए 15840 रुपये उनके खाते में भेजे। इसके साथ-साथ उनसे टास्क के नाम पर करीब 3.18 लाख रुपये ऐंठ लिए। 29 मई को जब उन्हें ठगी का अहसास हुआ तब उन्होंने परिवार को बताकर शिकायत की थी। इंदिरापुरम क्षेत्र के ज्ञानखंड दो निवासी प्रतीक अहूजा ने दर्ज मुकदमे में बताया कि छह जून को उन्होंने फेसबुक पर मेट्रिक्स ई-कॉमर्स एजेंसी का विज्ञापन देखा था। विज्ञापन में ऑनलाइन कार्य में प्रचार-प्रसार कर अच्छी कमाई का झांसा दिया गया था। उन्होंने काम शुरू किया इसके बाद उन्होंने अलग-अलग चार्ज के नाम पर ठगों को रकम दी। करीब तीन बार में साइबर ठगों ने उनसे दो दिन में 20015 रुपये की ठगी कर ली। पांच जुलाई की रात पुलिस ने उनका मुकदमा दर्ज किया। टीलामोड़ थानाक्षेत्र के पसोंडा स्थित अली प्रेम गार्डन निवासी रिजवान सिद्दीकी ने दर्ज मुकदमे में बताया कि 11 जून को उनके मोबाइल पर व्हाट्सएप कॉल आई थी। पहली बार में बात करने वाले ने उनसे कहा कि उनकी कॉल ट्रेस हो रही है। कुछ देर बाद दूसरी कॉल आई है और तब आरोपी ने उन्हें ऑल द बेस्ट कहा और उनके बैंक खाते से कई बार में 1.49 लाख रुपये निकाल लिए।

उन्होंने इसकी शिकायत साइबर सेल से की। इसके बाद पुलिस ने पांच जुलाई को मुकदमा दर्ज किया। टीलामोड़ के शालीमार सिटी निवासी दीपक जे सिन्हा ने पुलिस को बताया कि उन्होंने ऑनलाइन शॉपिंग कर कुछ सामान मंगाया था। ऑर्डर उनके पुराने पते पर पहुंचा था। जब उन्होंने डिलीवरी बॉय से उस पते पर डिलीवरी के लिए मना किया तब उसने ऑर्डर कैंसल करने की बात कही। इस पर उन्होंने कस्टमर केयर पर फोन किया। फोन पर बात करने वाले ने उन्हें काफी देर तक कॉल पर रखा। इस दौरान उनके बैंक खाते से कुछ रकम कट गई। जब उन्होंने रकम रिटर्न करने की बात कही तब ठग ने उनके मोबाइल नंबर पर ओटीपी भेजा। ओटीपी पता चलते ही आरोपी ने छह बार में उनके बैंक खाते से 3,16,994 रुपये निकाल लिए। साहिबाबाद थानाक्षेत्र के वृंदावन गार्डन निवासी प्रतीक शर्मा ने पुलिस को बताया कि जून माह में बैंक खाते से 98 हजार रुपये कटने का मैसेज आया था। उन्होंने जब जांच व बैंक में पूछताछ की तब पता चला कि पूरी रकम उनके यूपीआई एप के जरिए स्थांतरित हुई थी। उन्होंने इसकी शिकायत साइबर हेल्पलाइन में की। साइबर हेल्पलाइन से मामला थाना पुलिस को भेजा गया। इसके बाद पांच जुलाई की रात मुकदमा दर्जकर जांच शुरू कर दी गई है। डीसीपी निमिष पाटिल ने बताया कि साइबर ठगी के जो भी मामले हाल-फिलहाल में सामने आए हैं, उन सभी में साइबर सेल की शुरुआती जांच के बाद मुकदमा दर्ज करवाया गया है। साइबर विशेषज्ञों की टीम छाबीन कर रही है। जिन बैंक खातों में रकम ट्रांसफर हुई है, उन सभी की खोजबीन की जा रही है। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार किया जाएगा।

भूखंड के नाम पर दो करोड़ हड़पने के आरोप में पुलिस ने दर्ज किया केस

साहिबाबाद। लिंकरोड थानाक्षेत्र स्थित रामप्रस्थ कॉलोनी निवासी पुरुषोत्तम कुमार चौबे ने छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित समता कॉलोनी निवासी केशव बजाज और उनके बेटे कैलाश के खिलाफ धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज करवाया है। आरोप है कि पिता-पुत्र ने उन्हें रायपुर में भूखंड खरीद भविष्य में उसे बेचकर मुनाफा कमाने का सब्जबाग दिखाया।

इसके बाद साझेदारी का भरोसा दिलाकर उनसे दो करोड़ रुपये ऐंठ लिए। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। दर्ज मुकदमे में पुरुषोत्तम कुमार चौबे ने बताया कि दो अप्रैल 2024 को कौशांबी स्थित एक होटल में उनकी मुलाकात छत्तीसगढ़ निवासी केशव बजाज और उनके बेटे से हुई थी। दोनों ने उन्हें बताया कि रायपुर में स्थित एक भूखंड को खरीदकर उसे मुनाफे के साथ बेंचकर व्यापार करेंगे। साथ ही व्यापार में उन्हें बराबर का साझेदार बनाने का भरोसा भी दिलाया। इसके बाद 20 अप्रैल 2024 को उनसे 35 लाख रुपये चेक के माध्यम से लिए। कुछ दिनों तक भूखंड की पूरी कीमत दिए बिना रजिस्ट्री न होने की बात कही। इसके बाद तीन मई को 1.40 करोड़ रुपये और 15 मई को 25 लाख रुपये का भुगतान उनसे करवा लिया। आरोप है कि आरोपियों ने उनकी रकम हड़पकर अपने ही नाम में रजिस्ट्री करवा ली थी। एसीपी साहिबाबाद श्वेता यादव ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है। जल्द ही मामले का खुलासा कर आरोपियों को गिरफ्तार किया जाएगा।

अतिथि शिक्षक भर्ती में फॉलन आउट अतिथि शिक्षकों को प्राथमिकता देने की उठी मांग

अतिथि शिक्षक समन्यय समिति के प्रदेशाध्यक्ष ने आयुक्त लोक शिक्षण को लिखा पत्र

समय जगत, भोपाल। मध्यप्रदेश की शैक्षणिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने तथा स्कूली छात्र-छात्राओं की पढ़ाई सुचारू ढंग से संचालित करने का लगातार प्रयास किया जा रहा है। लेकिन सरकसार स्कूलों में शिक्षकों की कमी के चलते हर वर्ष अतिथि शिक्षकों की भर्ती की जाती है। शिक्षण सत्र 2025-26 के लिये भी अतिथि शिक्षकों की भर्ती की जा रही है, जो दो चरणों में संपन्न होनी है। प्रदेश के कई ऐसे उच्च शिक्षित, योग्य, अनुभवी तथा उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले अतिथि शिक्षक रहे हैं, जो अपने सेवा काल में बेहतर काम करके अपने विद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। लेकिन नई नियमित शिक्षकों की भर्ती, ट्रासफर- प्रमोशन आदि के कारण सेवा से बाहर हो गए हैं। ऐसे अनुभवी अतिथि शिक्षकों को इस वर्ष की अतिथि शिक्षक भर्ती में प्राथमिकता दिये जाने की मांग उठ रही है। शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ इस मांग को पूरी तरह जायज मानते हैं। ताकि ऐसे अध्यापन कार्य कर चुके ऐसे अतिथि शिक्षकों की योग्यता एवं अनुभव का लाभ छात्र-छात्राओं को मिल सके।

मध्यप्रदेश अतिथि शिक्षक समन्वय समिति के प्रदेशाध्यक्ष सुनील सिंह परिहार ने इस संबंध में आयुक्त लोक शिक्षण संचालनालय भोपाल को पत्र लिखकर अतिथि शिक्षक भर्ती के दूसरे चरण में ऐसे फॉलन आउट अतिथि शिक्षकों को वरीयताक्रम में प्राथमिकता दिये जाने की मांग उठाई है। सुनील सिंह का कहना है कि हजारों अतिथि शिक्षक वर्षों की सेवा के बाद सीधी भर्ती प्रमोशन ट्रांसफर से बाहर हो गए हैं। उनको रिक्त पदों पर वरीयताक्रम में प्राथमिकता देकर सेवा का अवसर दिया जाय। उन्होंने आयुक्त लोक शिक्षण से अनुरोध किया है कि दूसरे चरण की काउंसलिंग में फॉलन आउट अतिथि शिक्षकों को अनुभव के आधार पर वरीयताक्रम में प्राथमिकता देने के संबंध में आदेश जारी जारी करें। साथ ही इस ओर मुख्यमंत्री मोहन यादव, उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल, उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा तथा स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह का भी ध्यान आकृष्ट कराया गया है।

अरावली की पहाड़ियों के बीच मिली अज्ञात युवक की लाश

गुरुग्राम। सोहना के अरावली पहाड़ी के अंसल रास्ते में एक युवक (करीब 30 वर्ष) का लावारिस शव बरामद हुआ है। युवक की तेज धार हथियार से गला रेत करके हत्या की गई है। हत्या के बाद शव को झाड़ियों में छोड़कर भाग गए। मृतक की आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी और उसके दोनों हाथों को रस्सी से बांधा गया था। सूचना मिलते ही पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी में रखवा दिया है। मृत युवक के शव की पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस मामले की जांच में जुटी गई है। बीते शनिवार की रात अरावली पहाड़ी स्थित अंसल फार्म हाउस के नाके के पास अज्ञात लोगों ने एक युवक का गला काटकर हत्या कर दी है। रविवार की सुबह युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। डायल 112 पर कॉल करके पुलिस को सूचना दी गई। शव मिलने की सूचना मिलते ही सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) जितेंद्र कुमार व सोहना शहर थाने की पुलिस टीम मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने घटनास्थल का गहनता से निरीक्षण किया। फोरेंसिक टीम, डॉग स्क्वायड और फिंगरप्रिंट टीमों ने भी घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए। पुलिस ने करीब ढाई घंटे तक घटनास्थल व आसपास क्षेत्र की जांच की।

मृतक युवक की अभी तक पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पहचान और पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी में रखवा दिया है। युवक की आंखों पर कपड़ा बंधा हुआ मिला है। वहीं, उसके दोनों हाथों को पीछे से कपड़े से बांधा गया था। घटनास्थल पर ही बीयर की दो खाली बोतलें भी मिली हैं। अज्ञात हत्यारों ने युवक के गले को रेतने के दौरान उसके मुंह से आवाजें नहीं निकलने दी थी। घटनास्थल से मात्र 50 मीटर की दूरी पर अंसल फार्म हाउस के चौकीदार का बूथ केंद्र बना हुआ है। एसीपी जितेंद्र कुमार का कहना है कि मृत युवक की पहचान होने के बाद ही हत्या का राज खुलेगा। पुलिस घटनास्थल से सबूत जुटाने में लगी है। युवक की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं।

एसएन मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड को मिला फाइव स्टार रेटिंग अवार्ड

समय जगत, मैहर। जयपुर झालाना स्थित राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में सोमवार को इंडियन ब्यूरो ऑफ माइन्स ने स्टाफ रेटिंग अवॉर्ड समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम में देशभर की 7 स्टार और 5 स्टार रेटेड माइनिंग कंपनियों को साल 2023-24 के प्रदर्शन के आधार पर सम्मानित किया गया। समारोह में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, कोयला एवं खनन मंत्री जी. किशन रेड्डी और खनन मंत्रालय के एडिशनल सेक्रेटरी संजय लोहिया शामिल हुए। इस दौरान 3 माइनिंग यूनिट्स को 7 स्टार और 95 को 5 स्टार रेटिंग के लिए सम्मानित किया गया। देशभर से आए माइनिंग सेक्टर के प्रतिनिधि और अधिकारियों की मौजूदगी में यह नेशनल लेवल का फेलिसिटेशन कार्यक्रम रहा।मैहर जिले में माइनिंग के क्षेत्र में लगातार प्रगतिशील अभिनव एवम अनुकरणीय कार्य के लिए एस.एन.एस. मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड को वर्ष 2024 के लिए फाइव स्टार रैंकिंग अवॉर्ड का सम्मान हासिल किया है।

इसी कड़ी में एस.एन.एस. मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड को फाइव स्टार से नवाजा गया जिसमें एस.एन.एस. मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड हेड ऑफ माइन्स कुमार श्यामल किशोर ने अवार्ड लिया साथ कंपनी के मालिक संजीव बेरी ने फाइव स्टार रैंकिंग आने पर अपने माइनिंग मैनेजर गौतम कर्मकार और डायरेक्टर एस.पी. तिवारी एवम समस्त स्टाफ को बधाई दी।

ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष ने सड़क निर्माण की जांच कराने की उठाई मांग

समय जगत, मैहर। नगर के प्रतिष्ठित घंटाघर से लेकर माँ शारदा देवी मंदिर मार्ग तक बनाई जा रही नवनिर्माणाधीन सड़क पर कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष प्रभात द्विवेदी ने कड़ी आपत्ति जताते हुए इसे जनता के अधिकारों का घोर अपमान बताया है।श्री द्विवेदी ने कहा कि यह कोई निर्माण कार्य नहीं बल्कि पुराने घावों पर नया मरहम चढ़ाकर जनता को भ्रमित करने का प्रयास है। पूर्व में जो सड़क बनाई गई थी वह भी ज़मीन की सतह से काफी ऊपर उठाकर डाली गई थी। अब उसी ऊँचाई पर फिर एक और परत डालकर सड़क बनाई जा रही है। यह न केवल तकनीकी भूल है बल्कि जनविरोधी सोच का परिचायक भी है। जब एक के ऊपर एक परतें चढ़ेंगी, तो नीचे बसे लोग कहाँ जाएँगे? द्वार बंद हो जाएँगे घर गड्ढों में समा जाएँगे। ये कोई योजना नहीं सीधा सीधा अत्याचार है। यह दूरदर्शिता नहीं, सीधी लापरवाही है श्री द्विवेदी ने स्पष्ट रूप से कहा। नगर के जिम्मेदार ने जिस परियोजना प्रतिवेदन (डी.पी.आर.) को स्वीकृत किया, वह जनता के जीवन की सच्चाई से बिल्कुल अछूता और गैर-जिम्मेदाराना है। श्री द्विवेदी ने कहा कि यदि किसी मोहल्ले की सड़क ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा दी जाए कि व्यापारियों की दुकानो के अन्दर जल प्रवाहित हो जाये और वहाँ रहने वाले लोगों के आँगन में बरसात का पानी भर जाए, तो यह विकास नहीं बल्कि बर्बादी है।ऐसी योजना बनाना जिसमें जनता का जीना

दूभर हो जाए सिर्फ़ गलती नहीं जिम्मेदारों की मानसिक अकर्मण्यता है । ब्लॉक अध्यक्ष ने प्रदेश शासन से यह माँग रखी कि इस संपूर्ण कार्य की जाँच कराई जाए, और जिन अधिकारियों व अभियंताओं ने यह ग़लत योजना बनाई है, उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। जनता को यह जानने का अधिकार है कि उनके टैक्स के पैसों से बनने वाली सड़कें क्यों उनके ही जीवन के लिए संकट बन रही

नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी करने वाले हुए गिरफ्तार

नई दिल्ली। नोएडा के सेक्टर-62 में फर्जी क्रूज जॉब रैकेट चलाने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी सोशल मीडिया के जरिए बेरोजगार युवाओं से 1.80 लाख रुपये ठगता था। पुलिस ने उसके पास से मोबाइल, टिकट और 7.50 लाख रुपये के बैंक खाते की जानकारी बरामद की है। इंटरनेशनल क्रूज पर कई तरह की नौकरी का झांसा देकर ठगी करने वाला रैकेट पकड़ा गया है। यह पूरा रैकेट सेक्टर-62 स्थित आईथम टावर में ऑफिस खोलकर चलाया जा रहा था। सेक्टर-58 थाना पुलिस ने रैकेट को चलाने वाले मास्टरमाइंड प्रेम कुमार को गिरफ्तार किया है। आरोपी प्रेम कुमार विशाखापट्टनम का रहने वाला है। आरोपी ने उस्मानिया यूनिवर्सिटी से एमबीए किया है। इसके बाद दो फर्जी कंपनी बनाकर पिछले दो साल से ठगी का रैकेट चला रहा था। अब तक 50 से ज्यादा लोगों से ठगी की। बतौर एजेंट ठगी में शामिल आरोपी अभी फरार हैं। एडीसीपी नोएडा सुमित शुक्ला ने बताया कि रैकेट पूरी तरह से सोशल मीडिया आधारित था। एक ग्रुप जिस पर मर्चेंट नेवी की नौकरी से जुड़े आवेदन सार्वजनिक आते हैं, वहां से आरोपी डेटा निकालता था। फिर मिलने वाले नंबरों पर ऐप के माध्यम से व्हाट्सएप का एसएमएस में विज्ञापन मैसेज भेजा जाता था। साथ ही सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर नौकरी का विज्ञापन जारी करवाया जाता था। टारगेट नोएडा से दूर के शहरों पर होता था। संपर्क करने वाले बेरोजगारों युवाओं का ऑनलाइन ही इंटरव्यू लिया जाता था। फिर नौकरी दिलाने के नाम पर प्रति व्यक्ति 1.80 लाख रुपये लिए जाते थे। आरोपी यह बताते थे कि 50 हजार रुपये हमारी कंपनी की फीस है। 1 लाख 30 हजार रुपये एजेंट व टिकट का खर्चा है। इसके बाद वीजा दिलाने की प्रक्रिया शुरू करवाने के नाम पर लोगों से उनके मूल आधार कार्ड, पासपोर्ट को आरोपी जमा करवा लेते थे। फिर आरोपी कुछ समय आज-कल बताकर टरकाते रहते थे। दूर-दराज से बेरोजगार होने के कारण एक-दो बार चक्कर काटने नोएडा आते थे। इसके बाद थक कर बैठ जाते थे या फिर फोन करते रहते थे। पुलिस ने आरोपी प्रेम कुमार के कब्जे से मोबाइल व कुछ टिकट, वर्क ऑर्डर, गारंटी कार्ड व अन्य सामान बरामद किया है। थाना पुलिस व साइबर की टीम जांच में ठगी के उपयोग में लाए गए बैंक खातों को खंगाल रही हैं। एक बैंक खाते में 7.50 लाख रुपये होने की जानकारी मिली है। एडीसीपी ने बताया फ्रीज कराने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।